प्रभात

रूस की श्रेष्ठ कहानियाँ

भद्रसैन पुरी

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

समर्पण

भारत माता की स्वतंत्रता के लिए
जिन्होंने अपने घर-बार लुटाए, हँसते-हँसते
अपने प्राणों की आहुतियाँ दीं
उन असंख्य वीर शहीदों के चरण-कमलों में
स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगाँठ पर
सादर समर्पित।

—भद्रसैन पुरी

दो शब्द

श्री भद्रसैन पुरी द्वारा अनूदित 'रूस की प्रसिद्ध कहानियाँ' के लिए दो शब्द लिखने में मैं उत्कट गर्व और अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

अनुवाद के लिए जिन महान् रूसी लेखकों का चयन किया गया है, उनकी बाबत श्री पुरी ने स्वयं ही 'अनुवादकीय' में संकेत कर दिया है। मेरे कहने के लिए कुछ भी तो नहीं छोड़ा! फिर भी आग्रह है—'स्वामीजी, कुछ तो लिख दो!'

मेरे निजी पुस्तकालय में संसार भर के उत्कृष्ट साहित्य का भंडार है। इसी भंडार को देखकर मैं कभी-कभी हिंदी के दुर्भाग्य के बारे में चिंतित होकर सोचता हूँ कि हिंदी में विश्व की अन्य भाषाओं के विशिष्ट साहित्य के अनुवाद का पूर्ण अभाव है। यह सोचकर दु:खी भी होता हूँ। संसार के किसी भी प्रतिभावान लेखक की कृति का, चाहे वह किसी भी भाषा में हो, अंग्रेजी में अनुवाद मिल जाता है। अंग्रेजी भाषा इस विषय में अत्यंत समृद्ध है। क्या हिंदी को भी कभी यह मान प्राप्त होगा?

मेरे प्रिय बंधु श्री भद्रसैन पुरी मेरे सहपाठी रहे हैं। सन् 1933 से मैं इन्हें बहुत निकट से जानता हूँ। दर्शनशास्त्र और साहित्य में इनकी रुचि का आभास मुझे कॉलेज के विद्यार्थी जीवन में ही मिल गया था। सैकड़ों लेख, कहानियाँ, एकांकी लिखने के पश्चात् सन् 1992 में मेरे सुझाव पर इन्होंने अनुवाद का कार्य हाथ में लिया।

पुरीजी अब तक 'मोपासां की श्रेष्ठ कहानियाँ', 'समरसेट मॉम की चुनिंदा कहानियाँ', 'प्राचीन जर्मन कहानियाँ' का अनुवाद समाप्त कर चुके हैं। यह उनकी चौथी अनूदित पुस्तक है। अब ये इटली, जापान इत्यादि देशों की प्रसिद्ध कहानियों के अनुवाद का कार्य कर रहे हैं।

आज 83 वर्ष की आयु में भी श्री पुरी प्रतिदिन छह से आठ घंटे नियमित रूप से लिखते हैं। इससे मुझे हैरानी नहीं होती, क्योंकि 66 वर्षों का मेरा अनुभव बताता है कि श्री पुरी निष्ठावान्, कर्मठ और अपनी धुन के पक्के हैं। ईश्वर उन्हें दीर्घ आयु प्रदान करे।

ओ३म्।

—स्वामी उत्तमप्रकाशानंद सरस्वती

अनुवादकीय

प्रसिद्ध विदेशी कहानियों की अनुवाद-शृंखला में, 'जर्मनी की प्रसिद्ध कहानियाँ' के पश्चात् यह 'रूस की प्रसिद्ध कहानियाँ' का दूसरा पुष्प हिंदी देवी के चरणों में भेंट करते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। हिंदी प्रेमी जगत् ने जिस प्यार और अनुकंपा से मेरे द्वारा अनूदित विदेशी कहानियों को अपनाया है, उसने मुझे आशा से अधिक प्रोत्साहित किया है। ईश्वर ने चाहा तो अन्य देशों की प्रसिद्ध कहानियों के अनुवाद भी प्रस्तुत होते रहेंगे।

रूसी साहित्य भी कुछ अन्य देशों की भाँति अत्यंत विशाल है। जहाँ तक कहानीकारों का संबंध है, वे भी अपने क्षेत्र में अतुल्य हैं। अनुवाद के लिए कहानियों और कहानीकारों का चयन करना जितना सहज समझा जाता है, यह उतना ही कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि अनुवादक के लिए किसी भी देश अथवा प्रदेश के संपूर्ण साहित्य का अध्ययन असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

किसी भी देश के साहित्य का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को उस देश के साहित्य का इतिहास, वहाँ के निवासियों के रीति-रिवाज, वहाँ की संस्कृति एवं सभ्यता की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना वह अनुवाद-कार्य के साथ न्याय नहीं कर सकता।

उदाहरण के लिए, अपने ही देश में पंजाब और कश्मीर को देखें, तो दोनों की सीमाएँ परस्पर मिली हुई हैं, परंतु एक सामान्य पंजाबी भाषी कश्मीरी भाषा को उसी प्रकार अनुभव करता है, जैसे चीनी या जापानी को। जम्मू क्षेत्र में रहनेवालों के लिए घाटी (कश्मीर) की भाषा विदेशी प्रतीत होती है। एक ओर डोगरी, तो दूसरी ओर कश्मीरी, परंतु प्रांत एक। इसी प्रकार पंद्रह भाषाएँ और भारत एक।

दूरदराज के प्रदेशों अथवा विदेशों में रहनेवालों को एक-दूसरे की बात समझने के लिए द्विभाषिए की आवश्यकता पड़ती है। द्विभाषिए का काम अनुवाद करना ही होता है। प्रतिनिधि कहानियों के अनुवाद के लिए अनुवादक ने अंग्रेजी से द्विभाषिए के रूप में ही सहायता ली है। इन अनुवादों का मात्र यही उद्देश्य है कि हिंदी प्रेमी पाठक विदेशी कहानियों से परिचित हो सकें; दूसरे देशों की संस्कृति और सभ्यता से अवगत हो सकें।

आज देश और प्रदेशों की सरकारें एक प्रदेश के साहित्य को दूसरे प्रदेश की भाषा में अनुवाद करने के लिए अधिक जोर दे रही हैं, ताकि देशवासी एक-दूसरे की भावनाओं और आकांक्षाओं से भलीभाँति परिचित होकर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दे सकें। विदेशी कहानियों के अनुवाद में इसी प्रकार की भावना निहित है। एक विदेशी भाषा का दूसरी विदेशी भाषा में अनुवाद के माध्यम से आदान-प्रदान विश्व के लिए वरदान ही समझा जाएगा, क्योंकि इससे समस्त मानव जाति में एकत्व की भावना जाग्रत होगी।

जहाँ तक कहानियों के चयन का प्रश्न है, इस बात का ध्यान रखा गया है कि वे यथासंभव छोटी परंतु रोचक हों, ताकि पाठक एक कहानी को एक ही बैठक में समाप्त कर सकें। अनुवाद की भाषा को सरल और बोधगम्य बनाए रखने के साथ-साथ लेखक के विचारों को मूल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अंत में, मैं स्थानीय इंडियन हॉइड्रॉलिक इंडस्ट्रीज (प्रा.लि.) के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री गुरुदेव सिंह बंसल को धन्यवाद देता हूँ, जिनसे रूसी संस्कृति के बारे में भरपूर जानकारी मिली। ज्येष्ठ पौत्री कुमारी पूजा पुरी मेरे आशीर्वाद की पात्रा है, जिसने इस पुस्तक की संपूर्ण पांडुलिपि का पुनरावलोकन कर मेरा हाथ बँटाया।

—भद्रसैन पुरी

फ्रांस का राष्ट्रगान

—लियोनिड एन. एंड्रेइव

वह अस्तित्वहीन था—खरगोश की प्रवृत्ति और बैल की निर्लज्ज सहनशीलता के साथ! जब भाग्य ने दिल्लगी और ईर्ष्या से उसको हमारी काली पंक्ति में भेजा तो हम पागलों की तरह हँसे; कुछ गलतियाँ इतनी हास्यास्पद, इतनी भद्दी होती हैं; और वह वास्तव में रोया। मैं अपने जीवन में आँसुओं की पूर्ति करनेवाले या इतनी जल्दी आँसू बहानेवाले किसी दूसरे आदमी से नहीं मिला था। आँसू उसकी आँखों, नाक और मुँह से बहते थे। वह पानी में डुबोए और तुम्हारे हाथ पर निचोड़े गए पानी-सोख की तरह था। मैंने लोगों को अपनी पंक्ति में रोते देखा है, परंतु उनके आँसू ज्वाला की तरह होते थे, जिससे डरकर जंगली जानवर भाग जाते थे। आदमी के ये आँसू चेहरे को बूढ़ा, परंतु आँखों को युवा बनाते थे—पृथ्वी के उबलते दिल से मंथन किए हुए भूचाल की तरह। वे न हटाने योग्य चिह्नों को जला देते हैं, वे महत्त्वहीन इच्छाओं के नगरों को और जीवनवृत्ति की छोटी-छोटी चिंताओं को दफना देते हैं, परंतु उस आदमी के आँसुओं का परिणाम केवल लाल नाक और गीला रूमाल ही थे। संभवत: उसने बाद में उन्हें सुखा लिया था, नहीं तो रूमालों की पर्याप्त आपूर्ति कहाँ से होती!

निर्वासन के सारे समय में उसने अधिकारियों को धोखा दिया था—सारे अधिकारियों को, जो उस समय में थे या जिनको उसकी कल्पनाशक्ति ने बनाया था। वह उनके सामने झुका, रोया, शपथ ली कि वह निर्दोष है; अपनी जवानी के लिए दया की प्रार्थना की, भविष्य में मुँह न खोलने का वचन दिया—सिवाय प्रार्थना करने और प्रशंसा के गीत गाने के; और वे हमारी तरह इसपर हँस दिए—'दु:खी सूअर' के नाम से पुकारा और जोर से चिल्लाए, ''ओ छोटे सूअर!''

वह हर बुलावे पर आज्ञानुसार दौड़ता था। हर बार घर जल्दी लौटाए जाने के समाचार की आशा करता था और वे इसका केवल मजाक उड़ाते थे। वे हमारी तरह जानते थे कि वह निर्दोष है, परंतु उसको कष्ट देकर दूसरे सूअरों को डराना चाहते थे—मानो वे पहले ही से काफी भीरु थे।

यहाँ तक कि पशु के अकेलेपन के डर से प्रेरित वह हमारे पास आया, परंतु हमारे चेहरे कर्कश तो थे ही, पत्थर की तरह कठोर भी थे। उसने गुप्त रूप से चाबी प्राप्त की। उसने चरचराते हुए हमें पुकारा—''प्यारे साथियो और मित्रो!'' और हमने अपने सिर हिलाकर कहा—''ध्यान दो, वे हमारी बातें सुन रहे हैं।'

वह उठता और चोरी से दरवाजे की ओर देखता—वह विनीत छोटा सूअर ठीक है, फिर हम गंभीर रह सकते थे क्या? और हम ऐसी आवाज में हँसे, जो प्राय: हँसी के लिए असामान्य होती है, परंतु उसने फिर साहस किया और हमारी बगल में बैठकर आँसुओं के माध्यम से घर पर पड़ी अपनी प्यारी पुस्तकों के बारे में बताया, अपनी माँ और भाइयों की बाबत शोक और भय से बताया, क्योंकि उनके बारे में वह नहीं जानता था कि वे जीवित हैं या मर चुके।

अंतत: हमने उसे जाने दिया।

जब अकाल शुरू हुआ तो त्रास ने उसे जकड़ लिया—अवर्णनीय हास्यकर त्रास! तुम जानते हो कि वह सूअर खाने का बहुत शौकीन था और अपने साथियों और अधिकारियों से बहुत डरता था। वह व्यग्रता से हमें घूरता और प्राय: अपने माथे को रूमाल से पोंछता था—आँसुओं को या पसीने को। हमसे अधीरता से पूछता—

''क्या तुम अधिक समय तक भूखा रहकर मरोगे?''

''अधिक समय तक!'' मैंने उत्तर दिया।

''और तुम गुप्त रूप से भी कुछ नहीं खाओगे?''

‘‘संभवत: हमारी माताएँ हमारे लिए केक भेजेंगी।’’ मैं गंभीरता से सहमत हुआ। उसने संदेह से मुझे देखा, अपना सिर हिलाया और आह भरता हुआ चला गया। अगले दिन त्रास से तोते की तरह हरा होते हुए उसने घोषणा की—

‘‘प्यारे साथियो, मैं भी तुम्हारे साथ भूखों मरूँगा।’’

और साधारण उत्तर था—

‘‘अकेले भूखा मरो।’’

और वह भूखों मरा! हमें इसपर विश्वास नहीं हुआ। हमने सोचा कि वह गुप्त रूप से कुछ खा रहा था; पहरेदारों ने भी ऐसा ही सोचा था। और जब भूख के ज्वर से पीड़ित हो वह अपने अंत के कगार पर पहुँचा तो हमने केवल अपने कंधे झटक दिए—‘‘विनीत नन्हा सूअर!’’

परंतु हममें से एक, जो कभी हँसता नहीं था, ने शानदार ढंग से कहा, ‘‘वह हमारा साथी था। आओ, हम उसके पास चलें।’’

वह बेहोश था और उसकी चिल्लाहट उसके जीवन की तरह बेजान थी। उसने अपनी प्यारी पुस्तकों की बात की, माँ और भाइयों के बारे में बताया, उसने केक के लिए याचना की, शपथ ली कि वह निर्दोष है और क्षमा के लिए प्रार्थना की। उसने अपने पैदाइशी देश को पुकारा—फ्रांस को पुकारा—ओह, मनुष्य के दुर्बल हृदय पर दैवी प्रकोप! उसने चीख से अपनी आत्मा को फाड़ दिया—

‘‘प्यारे फ्रांस!’’

हम सब अपनी कुटी में थे, जब उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु से पहले उसकी चेतना लौट आई थी और वह शांति से वहाँ लेटा हुआ था—विनीत और दुर्बल—और हम सब उसके इर्दगिर्द खड़े थे। हम सबने उसे कहते सुना—

‘‘जब मैं मरूँ तो मेरे लिए फ्रांस का राष्ट्रगान करना।’’

‘‘तुम क्या कह रहे हो?’’ हमने कुछ प्रसन्नता से काँपते हुए और कुछ रोष के साथ पूछा। उसने दोहराया—

‘‘जब मैं मरूँ तो मेरे लिए फ्रांस का राष्ट्रगान करना।’’

और पहली बार ऐसा हुआ कि उसकी आँखें सूखी देखी गईं। हम सब उस अंतिम आदमी के लिए रोए और हमारे आँसू उस आग की तरह जल रहे थे जिस आग को देखकर जंगली जानवर भाग जाते हैं।

वह मर गया और हमने उसके लिए फ्रांस का राष्ट्रगान गाया। सुदृढ़ युवा आवाजों ने वह स्वतंत्रता का महान् गीत गाया और शक्तिशाली सागर ने फ्रांस की ओर जाती हुई अपनी ऊँची लहरों से हमारा समर्थन किया—समर्थन किया वर्तमान त्रास और पिसी हुई आशा के साथ! उसकी याद हमारे लिए हमेशा ताजा और प्रेरणादायी ही रहेगी—अस्तित्वहीनता, खरगोश के शरीर और मनुष्य की महान् आत्मा के साथ। नायक के सामने हमारे साथियों और मित्रों ने घुटने टेक दिए।

हमने गाया। बंदूकों ने हमारी तरफ देखा, उनके घोड़े भयावह तरीके से चमक रहे थे, फिर तेज किरिचों ने हमारी ओर मुँह किया और शक्तिशाली गाना और भी ऊँचा हो गया; कोमल हाथों ने धीरे से काले कफन को कब्र में जाने दिया।

हमने फ्रांस का राष्ट्रगान गाया!

❑

संगीत नाटक

—एल्केस रेमीसोव

यह ठंडा, धूल भरा प्रात:काल था।

काम कर रहा सिपाही जम्हाई लेते हुए रजिस्टर के पन्ने पलट रहा था। वह निद्रालु और चिड़चिड़ा मालूम पड़ रहा था।

टेलीफोन बिना रुके बज रहा था। इसके पास खड़ा सारजेंट बैठ गया और बोला, ''आग से संबंधित कागजात कहाँ हैं? तमगों का इनाम...हाँ, तमगे...ऐ?''

भारी बोझ से लदा हुआ डाकिया अंदर आया और भूरे, छोटे, कटे बालोंवाले लिपिक ने डाक का निरीक्षण किया।

''यह पार्सल हमारे लिए नहीं है!'' वह अस्पष्टता से नाक में बोला, ''हमारे लिए नहीं।''

''नवाब साहब!'' पिछले दरवाजे से आवाज आई—''इसके लिए यह तीसरा महीना है, थोड़ी दया दिखाओ।''

''क्या तुम स्नेगोव हो?'' सारजेंट ने पूछा; जैसे वह टेलीफोन पर बोल रहा हो, ''तो काउंसिल चैंबर में जाओ और वहाँ प्रतीक्षा करो—प्रतीक्षा करने से तुम्हारा कुछ घिस नहीं जाएगा।''

पिछले सेहन में किसी जगह माउथ ऑर्गन बजाया जा रहा था।

छकड़े के घोड़े लातें मार रहे थे और घड़घड़ाहट हो रही थी।

भूरे बादल धीरे-धीरे सूर्य को ढक रहे थे; थोड़ी देर के लिए सुनहरे हो जाते और फिर उसी तरह भूरे होकर आगे को तैर जाते थे।

एक कलम चिल्लाई!

''जरा रुको, वह शीघ्र वहाँ आ जाएगा।'' प्रार्थी को निरीक्षक के कमरे में भेजते हुए सिपाही ने कहा।

विलंबित सेवा के लिए गिरजा के घंटे बज रहे थे और उनकी बद्धलय आवाज उदास कर रही थी।

'यह जरूर कोई अंत्येष्टि होगी!' स्लोकिन ने सोचा—'नहीं तो वे कभी के बंद हो गए होते।' अपने प्रतिष्ठित मकान की सलाखें लगी खिड़की से दृष्टि हटाकर सारी दीवार पर तब तक वह देखता रहा, जब तक 'कुसकोव जादूगर' लिखा हुआ नहीं आ गया। चलती-फिरती संगीत-नाटक मंडली के खेल के बारे में लाल विज्ञापन को उसने पुन: पढ़ा।

घबराकर अपने आपको फैलाते हुए और कुछ करने के लिए न सोच सकने के कारण उसने कुत्ते की तरह जम्हाई ली।

टूटा-फूटा जीर्ण स्टूल आगे-पीछे झूल गया।

❑

स्लोकिन को हर चीज शुरू से याद आ गई, न केवल कल की अभागी शाम, जो इस नीच ढंग से समाप्त हुई थी, बल्कि सेंट पीटर्सबर्ग में शुरू के वर्षों से लेकर उस समय तक, जब उसने इस शहर के दु:खी तुच्छ गृह में जीवन व्यतीत किया था, जहाँ दैत्य ने उसे भेजा था। इस प्रकार उसने प्रतीक्षा का लंबा समय व्यतीत किया था, तब तक, जब तक परीक्षक आकर यह फैसला न करता कि उसे जेल में उस स्टूल पर बैठे रहना होगा अथवा स्वतंत्रतापूर्वक दु:खी सड़कों पर घूमना पड़ेगा।

हर कोई स्लोकिन को जानता था। उसकी प्रसिद्धि एक अच्छे अध्यापक के रूप में थी और सारी माताओं का मान उसे प्राप्त था, क्योंकि जिन बच्चों को वह पढ़ाता था, वे बिना समय गँवाए अगली श्रेणी में चले जाते थे। उसके

पूर्व जीवन को कोई नहीं जानता था, परंतु वे सभी उसके दुर्भाग्य का यदि अनुमोदन नहीं करते थे तो भी कुछ मात्रा में दयालु भाव से देखते थे—उसी प्रकार के भाव से जैसे बुरे मौसम में उसका एकमात्र ओवरकोट चोरी हो जाए; ऐसा प्रतीत होता था कि वह सदा बिना ओवरकोट के ही घूमता था। उसकी भीगी पतलून उससे चिपकी रहती थी। अच्छे मौसम में भी उसपर वर्षा विश्वस्त रूप में पड़ती थी।

वह पीड़ा पहुँचानेवाला नहीं था—किसी को भी दु:खी नहीं करता था; और फिर यह दु:खी संगीत नाटक ऐसे आया था जैसे आकाश से गिरा हो। ऐसे नगर में संगीत नाटक को छोड़ना, जिसमें तार-बाजा तक न हो, ऐसे लगता था जैसे बिना शहद चखे मधुमक्खी पालन किया जाए। कुछ संगीतप्रेमी मित्रों, जिनकी कमी नहीं थी, को स्लोकिन ने एकत्र किया और उनसे मिलकर बॉक्स लेने का प्रबंध कर लिया और समय से पहले ले लिया। वह उचित व्यवहार करने के लिए सहमत हो गए। वे गाने में शामिल नहीं होंगे, परस्पर बातें नहीं करेंगे और सबसे महत्त्वपूर्ण यह कि वे देर से नहीं पहुँचेंगे। संगीत नाटक देखने का ऐसा अवसर न जाने कब मिलेगा! परंतु इस अभागे व्यवहार में जरूर किसी दुष्ट फरिश्ते का हाथ होगा, नहीं तो उन घटनाओं की व्याख्या कौन कर सकता है जिनसे बचना ईश्वर का आशीर्वाद ही समझा जाएगा। स्लोकिन के साथ एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घट गई। वह संगीत नाटक में देर से पहुँचा और जो कुछ बाद में घटा...। वास्तव में वह परीक्षक की प्रतीक्षा में बैठा रहा, जिसके फलस्वरूप यह सब हुआ।

परदा उठने से पहले वह थिएटर पहुँच गया था, परंतु ओवरकोट उतारने और बॉक्स ढूँढ़ने में लगनेवाले समय में संगीत नाटक आरंभ हो चुका था और बॉक्स को ताला लगाया जा चुका था। बाहर रहना असंभव था; इसमें उसका दोष नहीं था। उसके किसी शिष्य ने उसे रोक लिया था। उसकी घड़ी धीरे चल रही थी। स्लोकिन ने दरवाजा खटखटाया, परंतु कोई उत्तर नहीं मिला—इसलिए कि शुरू में यह उसी का प्रस्ताव था।

संगीत नाटक अपनी पूरी बहार पर था। ओ देवता! उन्होंने कैसे गाया, जैसे वे विदेशी थिएटर में नहीं गाते। प्रचलित रीति से धुन को सुंदरता से बनाया गया था—ऐसा प्रतीत होता था कि संसार में उससे महान् धुन शायद नहीं थी और उसे सुनने के बराबर कुछ और अच्छा करने योग्य नहीं था।

स्लोकिन ने कुछ धुनों को सुना जिन्होंने उसे क्रुद्ध कर दिया और अपनी सारी शक्ति खोकर तथा परस्पर समझौते को भूलकर उसने उसी समय दरवाजे को अपनी सारी शक्ति से खटखटाया।

इसमें उसका दोष नहीं था। वह समय पर आ गया था, अनुचर ने उसका कोट लेने में काफी देर लगा दी थी और नजर कमजोर होने के कारण उसे बॉक्स ढूँढ़ने ने में समय लग गया था। उसने चौदह वर्षों से ऐनक लगा रखी थी और संगीत नाटक देखे हुए पाँच वर्ष बीत गए थे, जब से वह न चाहते हुए भी इस नगर में धकेल दिया गया था। वह काफी समय तक उस बिल में रहा। उसने दरवाजा खोलने की माँग की—उसको माँग करने का अधिकार था।

मुझे अंदर आने दो। सुनते नहीं हो क्या? दरवाजा खोलो। यह बड़ी नीचता है! समझ नहीं रहे हो? उसने आवाज से, हाथों और पैरों से याचना की, यहाँ तक कि अंदर आने के लिए बढ़ती हुई चीखें थिएटर के दूसरी तरफ सुनाई देने लगीं।

इतने में पुलिस निरीक्षक आ गया और दो अर्धसैनिक अपनी तलवारों को संभाले घटनास्थल की ओर बढ़े और एक ही आवाज से कारण भाँपते हुए, दोनों ने एक जैसे शब्दों में स्लोकिन से प्रार्थना की कि वह इस उत्पात को बंद कर दे। उनकी आवाज में नरमी के साथ स्थिरता थी।

''सुनो, पुलिस अध्यक्ष, इस प्रकार निरादरपूर्ण व्यवहार मत करो।''

स्लोकिन ने कुछ नहीं सुना और त्योरी चढ़ाकर दरवाजा थपथपाता रहा। एकाएक पाँव पटकने की आवाज और

शोर सुनाई दिया। निस्संदेह अंक समाप्त हो गया था। फिर झूलती हुई कोई वस्तु उसकी छाती पर आकर लगी। उसने महसूस किया कि उसे किसी चीज के अंदर धकेल दिया गया है। फिर उसको लगा कि वह हवा में उड़ रहा है; फिर किसी ने उसकी टाँग को पकड़ा और उसने उड़ना बंद कर दिया। दरवाजा खुला और उसे बाहर खींच लिया गया। वह कल देखेगा—प्रचलित रीति ने उसे थामा—पुलिस अध्यक्ष...अव्यवस्था...

फिर उसी हाथ ने प्रशंसा के बहाने उसे इस तरह से पकड़ा, जैसे काँटे से मछली पकड़ते हैं; उसको ऊपर ऊँचा फेंका और विश्वस्त होकर कान में कहा, जैसे सपना देख रहा हो। गाड़ी झटके से आगे बढ़ी।

स्लोकिन को थाने ले जाया गया और रात भर के लिए उसे कुलीन कमरे में बंद कर दिया गया।

वह जीर्ण कुरसी पर बैठा झूलता रहा और समय की उड़ान पर ध्यान नहीं दिया, जो बहुत धीरे-धीरे चल रहा था जैसेकि वह प्राणहर समय नहीं आएगा जब सुपरिंटेंडेंट को आना था। ''संभव है वह आए ही न! मान लो, वह आता ही नहीं!'' स्लोकिन ने अपने घुटने थामे, आँखें बंद कीं और सेंट पीटर्सबर्ग लौटने का भरसक प्रयास किया। उन दिनों को याद किया जब वह गर्व से चलता था, जहाँ हर एक उसकी आवाज सुनता था और संगीत नाटकों को देखता था—संगीत नाटक, जिसमें कालियायिन भाग लेता था—उसका स्वर भी अच्छा था, वह गा सकता था।

एकाएक दरवाजे की दूसरी ओर तथा बाहर सब शांत हो गया। गिरजा के घंटे बजने बंद हो गए थे, बादल अब चल-फिर नहीं रहे थे और अब आती हुई गाड़ी की आवाज सुनाई दे रही थी।

स्लोकिन जल्दी से उठा, अपनी पतलून से हाथ साफ किए और कर्कश आवाज में बड़बड़ाया—

''श्रीमान्, मिस्टर सुपरिंटेंडेंट...!''

और 'कुसकोव जादूगर'—प्रसन्न जादूगर दीवार से लुढ़क गया, खेल का लाल विज्ञापन खिड़की के रास्ते बाहर सड़क पर उड़ गया।

दरवाजे खोल दिए गए और स्लोकिन को छोड़ दिया गया।

यह तुम्हारे लिए संगीत नाटक था!

❑

बोलेसलोव

—मैक्सिम गोर्की

यह वह है जो मेरे मित्र ने एक दिन मुझे बताया—

जब मैं मॉस्को में पढ़ रहा था तब एक छोटे से घर में रहता था, जहाँ एक अजीब लड़की मेरी पड़ोसन थी। वह पोलैंड की रहनेवाली थी। उसका नाम टेरेसा था। वह लंबी, तगड़ी, भूरी, भारी भौंहों और गँवारू नैन-नक्शवाली थी। उसकी आँखें भोथरी नजर आती थीं और आवाज गहरी थी। उसका व्यवहार इनाम जीतनेवाले लड़ाकू की तरह था। भारी और मांसल शरीर, कुल मिलाकर उसकी आकृति भयानक रूप से भद्दी थी। अट्टालिका में कमरे आमने-सामने थे। मैं अपना दरवाजा कभी नहीं खोलता था, जब यह जानता था कि वह घर में है। कभी-कभी सीढ़ियों में या सेहन में उससे भेंट हो जाती थी और मुझे एक प्रकार की चिड़चिड़ी मुसकराहट देती थी। मैंने उसे प्राय: लाल आँखों और बिखरे बालों के साथ घर आते देखा था। ऐसे अवसरों पर मेरी दृष्टि उसकी निरर्थक रूप से ताकनेवाली दृष्टि से मिल जाती थी और फिर वह कहती—'हैलो, विद्यार्थी!'

उसकी मूर्खतापूर्ण हँसी दु:खदायी होती थी। उसके मिलने को टालने के लिए मैं अपना कमरा बदलना चाहता था, परंतु वह जगह इतनी मनोहर थी जहाँ से नगर का दृश्य बिना अवरोध के देखा जा सकता था और सड़क भी शांत थी, इसलिए मैं रुका रहा।

एक दिन प्रात:काल मैं कपड़े पहनकर अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था कि अकस्मात् दरवाजा खुला और दहलीज पर टेरेसा नजर आई।

''हैलो, विद्यार्थी!'' उसने अपनी गहरी आवाज में कहा।

''तुम क्या चाहती हो?'' मैंने पूछा।

मैंने उसकी ओर देखा। उसके चेहरे पर व्याकुल लज्जा थी, ऐसी लज्जा जिसको मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

''विद्यार्थी!'' उसने कहा, ''मैं तुम्हारी सहायता चाहती हूँ, कृपया इनकार न करना!''

बिस्तर में लेटे हुए मैंने सोचा—'यह एक बहाना है।' परंतु मैंने कुछ नहीं कहा।

''मैं अपने घर पत्र लिखना चाहती हूँ।'' उसने कहना जारी रखा।

'यह कैसा उपद्रव करना चाहती है!' मैंने विचार किया। मैं अपने बिस्तर से उठा, कागज एवं स्याही ली और कहा, ''आओ, बैठो और लिखवाओ।''

वह अंदर आ गई और सावधानी से बैठकर मेरी आँखों में तीखी नजर डाली।

''ठीक है, किसको लिखवाना है?'' मैंने पूछा।

''बोलेसलोव केसपुट को, स्वेनजिआनी में रहता है, जो वारसा रेलवे पर स्थित है।''

''क्या लिखवाना चाहती हो? आगे कहो।''

''मेरे प्यारे, बोलेस प्रेमीजन, मेरे प्रेम, मेरी आत्मा! पवित्र कुमारी तुम्हारी रक्षा करे। मेरे प्यारे, तुमने अपनी नन्ही कबूतरी टेरेसा, जो बहुत उदास रहती है, को एक लंबे समय से पत्र क्यों नहीं लिखा?''

मैं उसपर हँसे बिना नहीं रह सका। 'उदास नन्ही कबूतरी!' लगभग छह फीट ऊँची, खिलाड़ी की तरह पुष्ट और इतने काले चेहरेवाली, मानो कबूतरी ने अपने सारे जीवन में और कुछ न करके केवल चिमनियाँ साफ की हों!

परंतु मैंने अपना चेहरा ठीक रखा और पूछा, ''यह बोलेसलोव कौन है?''

''बोलेसलोव, श्रीमान्!'' उसने इस हैरानी से उत्तर दिया कि यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि कोई

बोलेसलोव को न जानता हो।

''बोलेस मेरा मंगेतर है।''

''मंगेतर?''

''तुम इतने विस्मित क्यों हो रहे हो, विद्यार्थी? क्या मेरे जैसी युवा लड़की का प्रेमी नहीं हो सकता?'' उसने कहा।

'एक युवा लड़की!'—क्या मजाक है! ''हो सकता है, '' मैंने कहा, ''हर चीज संभव है। तुम्हारी सगाई को कितना समय हो गया?''

''दस वर्ष हो गए।''

''ठीक है।'' मैंने उसके लिए पत्र लिख दिया—प्यार और कोमलता से इतना भरा पत्र कि मैंने सोचा, काश! बोलेसलोव की जगह मैं होता, यदि टेरेसा की बजाय संदेश किसी और से आता!

''दिल से तुम्हारा धन्यवाद, विद्यार्थी।'' टेरेसा ने कहा। वह गहराई से प्रेरित हुई प्रतीत हो रही थी—''तुम्हारे लिए मैं कुछ कर सकती हूँ क्या?''

''नहीं, धन्यवाद!''

''मैं तुम्हारी कमीज और कपड़ों की मरम्मत कर सकती हूँ, विद्यार्थी!'' उसने मुझे थोड़ा क्रुद्ध कर दिया और मैंने संक्षेप में उसे विश्वास दिलाया कि मुझे उसकी सेवा नहीं चाहिए। इस तरह वह चली गई।

दो सप्ताह बीत गए। एक शाम को खिड़की में बैठा मैं सीटी बजा रहा था और सोच रहा था कि व्याकुलता को दूर करने के लिए क्या किया जाए? बाहर मौसम खराब था। इसलिए मैं बाहर नहीं जाना चाहता था। एकाएक दरवाजा खुला।

'परमात्मा के लिए!' मैंने सोचा—'कोई आया है।'

''विद्यार्थी, इस समय कुछ कर रहे हो क्या?'' यह टेरेसा थी। मेरी इच्छा थी कि उसकी बजाय कोई और होता।

''नहीं तो, क्यों?''

''मैं चाहती हूँ कि मेरे लिए एक पत्र लिख दो।''

''बहुत अच्छा, बोलेस को?''

''नहीं, मैं उसका उत्तर चाहती हूँ!''

''क्या?'' मैं चिल्लाया।

''क्षमा चाहती हूँ, विद्यार्थी, मैं मूर्ख हूँ। मैं अपने आपको स्पष्ट नहीं कर सकी। यह मेरे लिए नहीं, बल्कि मेरे एक मित्र के लिए है। वह मित्र नहीं, केवल जान-पहचानवाला है। वह लिखना नहीं जानता। मेरी तरह उसकी भी मंगेतर है।''

मैंने उसकी ओर भरी नजर से देखा। वह लज्जित सी प्रतीत हुई। उसके हाथ काँपे और वह व्याकुल हो गई। मैंने सोचा, मैं समझ गया था।

''सुनो लड़की!'' मैंने कहा, ''वह सबकुछ जो तुमने अपने और बोलेसलोव के बारे में बताया है, सब तुम्हारे मन की कल्पना है; तुम झूठ बोल रही थीं। यह यहाँ आने के लिए केवल बहाना है। मुझे आगे के लिए तुमसे कोई वास्ता नहीं है, समझती हो न?''

मैंने देखा, वह भयभीत हो गई थी। वह शरमा गई थी और उसने कुछ कहने का भरसक प्रयास किया। मुझे महसूस हुआ कि मैंने उसके साथ अन्याय किया था। सबकुछ होते हुए भी वह मेरे पास किसी भ्रष्ट भाव से मुझे सदाचार के रास्ते से हटाने नहीं आई थी। उसके पीछे कुछ-न-कुछ जरूर था, परंतु वह क्या था?

‘‘विद्यार्थी!’’ उसने कहना शुरू किया, परंतु एकाएक मेरा संकेत पा वह अपनी एड़ियों पर मुड़ी और कमरे से बाहर निकल गई।

मैं अशांत होकर रह गया। मैंने उसे अपना दरवाजा जोर से बंद करते सुना। वह क्रुद्ध थी। मैंने कुछ देर तक सोचा और फिर उसे वापस बुलाने का निश्चय किया। मैं पत्र लिखूँगा। मैंने उसके लिए खेद महसूस किया।

मैं उसके कमरे में गया। वह अपना चेहरा हाथों से थामे बैठी थी।

‘‘सुनो, लड़की!’’ मैंने कहा, ‘‘तुम...!’’

जब मैं अपनी कहानी के इस बिंदु पर आता हूँ तो मेरा हृदय हमेशा गहराई से प्रभावित होता है। वह उछल पड़ी। सीधी मेरे पास आई। उसकी आँखें चमक रही थीं, मेरे कंधों पर अपने हाथ रखकर सुबकने लगी, जैसे उसका दिल टूट गया हो।

‘‘तुम्हें क्या फर्क पड़ता है, यदि तुम...तुम कुछ पंक्तियाँ लिख दो? ओह, तुम...तुम अच्छे व्यक्ति नजर आते थे! हाँ, कोई बोलेसलोव नहीं है और कोई टेरेसा भी नहीं है। यहाँ केवल मैं हूँ...मैं!’’

‘‘क्या!’’ मैंने उसके शब्दों को सुनकर कहा, ‘‘तो फिर कोई बोलेस नहीं है?’’

‘‘नहीं।’’

‘‘और कोई टेरेसा भी नहीं?’’

‘‘नहीं, वह मैं ही हूँ, टेरेसा।’’

मेरा सिर चकरा गया। मैंने हैरानी से उसको देखा। हम दोनों में से जरूर एक सनकी था। वह मेज के पास लौट आई, दराज टटोला और कागज का एक टुकड़ा निकाला।

उसने मेरी ओर आते हुए कहा, ‘‘इस पत्र को, जो तुमने मेरे लिए लिखा था, वापस ले लो। तुम दूसरा लिखना नहीं चाहते। दूसरे दयालु दिलवाले आदमी इस काम को कर देंगे।’’

जो पत्र मैंने उसकी तरफ से बोलेसलोव को लिखा था, वह उसके हाथ में था। दुनिया में इसका अर्थ क्या था?

‘‘सुनो, टेरेसा!’’ मैंने कहा, ‘‘यह सब क्या है? जब तुमने इसको डाक में डाला ही नहीं तो दूसरे लोग तुम्हें पत्र क्यों लिखें?’’

‘‘मैं किसके लिए इसको डाक में डालूँ?’’

‘‘क्यों, बोलेसलोव—अपने मंगेतर के लिए।’’

‘‘परंतु ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है!’’ मैंने छोड़ दिया। मैं जो कर सकता था, वह यह कि मैं वहाँ से चला जाऊँ, परंतु उसने फिर कहना शुरू कर दिया—

‘‘नहीं, उसका अस्तित्व नहीं है; कोई बोलेसलोव नहीं है।’’ इस संकेत से कहा कि इसे वर्णन करना कितना असंभव है। ‘‘परंतु मैं उसे चाहती हूँ कि वह जीवित हो। मैं जानती हूँ कि मैं दूसरों की तरह नहीं हूँ—मैं जानती हूँ कि मैं क्या हूँ, परंतु यदि मैं उसे लिखती हूँ तो किसी को हानि नहीं होती।’’

‘‘तुम्हारा क्या मतलब है, किसको?’’

‘‘क्यों, बोलेसलोव को।’’

‘‘परंतु तुमने अभी मुझे बताया, ’’ अभी तक उलझे हुए मैंने टोका—‘‘कि इस नाम का कोई आदमी नहीं है।’’

‘‘ओह, परमात्मा की माता! मुझे इसकी क्या परवाह है कि इस नाम का कोई आदमी नहीं है, परंतु मैं मानती हूँ कि बोलेसलोव है। मैं इसलिए पत्र लिखती हूँ कि वह वस्तुत: है और उत्तर देता है। मैं पुन: लिखती हूँ, वह पुन: उत्तर देता है।’’ अंत में मैं समझ गया। मैंने अपने आपको लज्जित और दोषी महसूस किया। मुझे शारीरिक पीड़ा का

आघात लगा। मेरी बगल में एक हाथ की दूरी पर एक ऐसा विनीत मानव जीव रहता था जिसको प्यार देने के लिए संसार में एक आत्मा भी नहीं थी—माता-पिता नहीं, मित्र-बंधु नहीं, कोई भी नहीं। उस विनीत प्राणी ने अपने लिए प्रेमी का, दूल्हे का आविष्कार कर लिया था।

वह अपनी एक ही तरह की आवाज में कहती रही—''यह पत्र, जो तुमने मेरी तरफ से बोलेसलोव को लिखा है, मैंने दूसरे व्यक्ति को इसे ऊँची आवाज में मेरे लिए पढ़ने को कहा। मैंने सुना और माना कि बोलेसलोव जीवित है। फिर मैंने बोलेस से अपनी टेरेसा को अर्थात् मुझे उत्तर के लिए कहा। मैं विश्वास करती हूँ कि बोलेसलोव जीवित है —कहीं-न-कहीं—मैं नहीं जानती कि कहाँ; और इस प्रकार मैं भी जीवित रहने का प्रबंध करती हूँ। यह इतना कठिन नहीं है, इतना भयंकर नहीं है और न ही इतना असहाय!''

तो ठीक है, उस दिन से मैंने सप्ताह में निरंतर दो बार पत्र लिखे—टेरेसा से बोलेस को और बोलेस से टेरेसा को। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वे लालसा और उत्कंठा से भरपूर थे, विशेषकर उत्तर। वह कभी सिसकियाँ लेकर और कभी हँसकर उन्हें सुनती थी, प्रसन्न होती थी। उसके बदले में वह मेरे कपड़ों का ध्यान रखती थी। मेरी कमीजों की, मेरी जुराबों की मरम्मत करती थी, मेरे जूते साफ करती थी और टोपी पर ब्रश लगाती थी।

तीन महीने के बाद उसे किसी संदेहवश बंदी बना लिया गया और जेल में डाल दिया गया। मैं फिर उससे कभी नहीं मिला। वह मर चुकी होगी!

❑

द्वंद्वयुद्ध

—निकोलाई टेलेशोव

पूर्व प्रात:काल का समय था।

वाल्डीमर क्लाडुनोव—एक लंबा, सुंदर बाईस वर्षीय युवक, सुंदर चेहरा और घनी सुंदर लटाएँ, अधिकारी की वर्दी और घुड़सवारी के लंबे जूते पहने, बिना ओवरकोट एवं टोपी के, चरागाह पर खड़ा था, जहाँ अभी-अभी बर्फ पड़ी थी। वह दूसरे, लंबे, लाल चेहरेवाले, मूँछोंवाले अधिकारी को घूर रहा था। यह अधिकारी उससे लगभग तीस कदम की दूरी पर था। उसने धीरे से अपना हाथ उठाया, जिसमें रिवॉल्वर पकड़े हुए था। उसने वाल्डीमर पर सीधे निशाना साधा।

अपनी बाँहों को छाती पर एक-दूसरी के ऊपर रखे और एक में रिवॉल्वर पकड़े, उदासीनता के साथ वाल्डीमर अपने विरोधी के निशाने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका सुंदर युवा चेहरा, जो सामान्य से अधिक पीला था, साहस से चमक रहा था और उसपर घृणा की मुसकराहट थी। उसकी खतरनाक स्थिति, उसके विरोधी का दयाहीन पक्का निश्चय, दूसरे लोग, जो चुपचाप एक ओर खड़े थे, उनका उत्साही ध्यान और मृत्यु की निकटता ने उन क्षणों को भयानक रूप से उत्सुक बना दिया था। मान-मर्यादा के प्रश्न का निर्णय होना था। हर एक ने उसके महत्त्व को महसूस किया; जितना उन्होंने इसको कम समझा कि वे क्या कर रहे थे, उस समय की गंभीरता उतनी ही गहरी होती गई।

एक गोली चल गई और एक कंपन सबमें दौड़ गया। वाल्डीमर ने अपने हाथ बाहर की ओर फेंके, घुटनों के बल झुका और गिर गया। वह बर्फ पर लेटा था। गोली सिर में से गुजरी थी। उसके हाथ खुले थे। उसके बाल, चेहरा और यहाँ तक कि उसके सिर के आसपास की बर्फ भी खून से ढक गई थी। पीछा करनेवाले आगे बढ़े और उसको उठा लिया। डॉक्टर ने उसकी मृत्यु को प्रमाणित कर दिया और मान-मर्यादा का प्रश्न हल हो गया। अब केवल पलटन को इस सूचना की घोषणा करनी थी। जितना भी संभव हो सकता था, कोमलता से और धैर्यपूर्वक उसकी माँ को सूचित करना था, जो संसार में अकेली रह गई थी, क्योंकि जो लड़का मारा गया था, उसका एकमात्र बेटा था। द्वंद्वयुद्ध से पहले किसी ने भी सावधान नहीं किया था, परंतु अब सभी सावधान थे—वह धीरे-धीरे इस भयानक सूचना के लिए अपने आपको तैयार कर लेगी। अंतत: माँ को किसी प्रकार से सूचित करने के लिए और मामले को, जितना संभव हो सके, सुलझाने के लिए ईवान गोलूबैनको का चयन किया गया।

❑

पेलागिया पेटरोवना अभी-अभी जागी थी और प्रात: की अपनी चाय बना रही थी जब ईवान गोलूबैनको—उद्विग्न और व्याकुल—कमरे के अंदर आया।

''चाय के लिए बिलकुल ठीक समय पर आए हो, ईवान गोलूबैनको!'' बैठी औरत ने उठकर अपने अतिथि से मिलने के लिए मित्रभाव से कहा, ''तुम पक्का वाल्डीमर से मिलने आए हो।''

''नहीं, मैं इधर से गुजर रहा था...'' गोलूबैनको हकलाया।

''तुम्हें उसे क्षमा करना होगा, क्योंकि वह अभी सो रहा है। वह अपने कमरे में सारी रात इधर-उधर घूमता रहा। मैंने नौकर से कह दिया है कि उसे जगाए नहीं, क्योंकि आज त्योहार है। तुम शायद जरूरी काम से आए हो?''

''नहीं, मैं तो जाते-जाते क्षण भर के लिए आ गया हूँ।''

''यदि तुम चाहो तो मैं उसे जगाने का आदेश दे सकती हूँ?''

''नहीं-नहीं, तुम अपने को कष्ट मत दो।''

परंतु यह सोचकर कि वह किसी विशेष काम से आया था, पेलागिया पेटरोवना बड़बड़ाती हुई कमरे में चली गई।

गोलूबैनको अपने हाथों को मरोड़ता हुआ उत्तेजना से इधर-उधर चलाता रहा। वह नहीं जानता था कि यह भयानक सूचना किस तरह दे। निर्णय का क्षण जल्दी आ रहा था, परंतु वह अपना नियंत्रण खो बैठा। वह भयभीत हो गया और अपने भाग्य को कोसने लगा कि इस सारे मामले में उसको फँसा दिया।

''अब तुम लोगों पर कोई भरोसा कैसे कर सकता है?'' पेलागिया पेटरोवना ने कमरे से लौटते हुए स्नेहयुक्त नाराजगी से कहा, ''मैं यहाँ इस बात का ध्यान रख रही हूँ कि प्यालों और रकाबियों से जरा भी शोर न हो, अपने बेटे को जगाने से तुम्हें मना कर रही हूँ और वह बिना कोई चिह्न छोड़े काफी देर से चला गया है, परंतु तुम बैठते क्यों नहीं, ईवान गोलूबैनको! चाय का एक प्याला लो। तुम काफी दिनों से हमें भूल गए हो?''

वह छिपी प्रसन्नता के साथ मुसकराई और धीमी आवाज में बोली, ''और उन दिनों में हमारे पास कितने समाचार होते थे। वाल्डीमर निश्चित तौर पर उन्हें गुप्त नहीं रख सकता था। उसने अब तक तुम्हें सबकुछ बता दिया होगा, क्योंकि सच्चा और खुले दिलवाला है, मेरा वाल्डीमर। मैं रात अपने खयालों में सोच रही थी कि जब वाल्डीमर रात भर कमरे में चलता रहा तो वह लेनोचका के सपने देख रहा होगा। यह हमेशा ही उसके साथ होता है। यदि वह रात भर कमरे में चलता है तो प्रात:काल अवश्य ही जल्दी चला जाता है। ओह, ईवान गोलूबैनको, मैं तो परमात्मा से केवल यही माँगती हूँ कि इस बुढ़ापे में मुझे यह खुशी दे दे। एक बूढ़ी औरत को और क्या चाहिए? मेरी तो एक इच्छा है, एक ही खुशी है और ऐसा लगता है कि वाल्डीमर और लेनोचका के विवाह के बाद मेरे पास माँगने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा। मुझे इससे कितनी खुशी, कितना आनंद मिलेगा! मुझे वाल्डीमर के सिवा कुछ नहीं चाहिए। मुझे इस खुशी से ज्यादा और कुछ भी प्यारा नहीं।''

बूढ़ी औरत इतनी भावुक हो उठी कि उसकी आँखों में आँसू आ गए।

''क्या तुम्हें याद है?'' उसने कहना जारी रखा—''शुरू में दोनों के संबंध अच्छे नहीं रहे थे—शायद धन के कारण। तुम युवा अधिकारियों को बिना धन लगाए विवाह करने के लिए आज्ञा भी तो नहीं मिलती। ठीक है, अब हर चीज का प्रबंध कर लिया गया है। मैंने वाल्डीमर के लिए पाँच हजार रुबल ले लिये हैं और वे विवाह के लिए वेदी पर कल ही जा सकते हैं। हाँ, लेनोचका ने मुझे कितना प्यारा पत्र लिखा है! मेरा दिल आनंदित हो रहा है।''

कहना जारी रखते हुए पेलागिया पेटरोवना ने अपनी जेब से पत्र निकाला और गोलूबैनको को दिखाकर पुन: जेब में डाल लिया।

''वह कितनी प्यारी लड़की है! और कितनी अच्छी!''

ईवान गोलूबैनको उसकी बातों को सुन रहा था और लग रहा था जैसे लाल, गरम कोयलों पर बैठा हो। वह उसके शब्दों के बहाव को रोकना चाहता था और बताना चाहता था कि वाल्डीमर मर चुका है और अब एक घंटे के अल्प समय में उसकी सारी चमकीली आशाओं में से कोई भी नहीं बचेगी, परंतु वह उसे सुनता रहा और स्वयं चुप रहा। उसके अच्छे और सौम्य चेहरे को देखकर उसे अपने गले में ऐंठन का आभास हुआ।

''आज तुम बुझे-बुझे से क्यों नजर आ रहे हो?'' बूढ़ी औरत ने अंत में कहा, ''तुम्हारा चेहरा रात की तरह काला नजर आ रहा है।''

ईवान कहना चाहता था—'हाँ, तुम्हारा चेहरा भी इसी तरह का लगेगा, जब मैं तुम्हें बताऊँगा!' परंतु कुछ कहने की बजाय, उसने अपना मुँह दूसरी तरफ कर लिया और अपनी मूँछों को ताव देने लगा।

पेलागिया पेटरोवना ने कोई ध्यान नहीं दिया और अपने ही खयालों में मस्त कहती गई, ''तुम्हारे लिए मेरे पास

शुभ समाचार है। लेनोचका लिखती है कि 'मैं ईवान गोलूबैनको का बहुत ही आदर करती हूँ। आप उससे कहें कि वाल्डीमर को साथ लेकर वह मुझे मिले।' तुम स्वयं जानते हो, वह तुम्हें कितना चाहती है, ईवान! नहीं, मैं अपने पास इसे नहीं रख सकती। मैं तुम्हें उसका पत्र दिखाती हूँ। लो, स्वयं ही देख लो, यह कितना प्यारा और मधुर है!''

पेलागिया पेटरोवना ने पुन: पत्रों का पुलिंदा जेब से निकाला। उनमें से एक पतला कागज, जो बहुत ही ध्यानपूर्वक लिखा गया था, ईवान गोलूबैनको के सामने खोला। उसका चेहरा और उद्विग्न हो गया था। उसने आगे बढ़ाए हुए पत्र को एक तरफ हटाने का प्रयास किया, परंतु पेलागिया पेटरोवना ने पहले ही पढ़ना शुरू कर दिया—

''प्यारी पेलागिया पेटरोवना—वह समय कब आएगा, जब इस तरह की बजाय मैं तुम्हें 'मेरी प्यारी मधुर माँ' लिखूँगी! मैं उस समय की प्रतीक्षा बेसब्री से कर रही हूँ और आशा करती हूँ कि वह समय जल्दी ही आएगा। अब भी मैं तुम्हें माँ के अतिरिक्त और कुछ कहना नहीं चाहती...।''

पेलागिया पेटरोवना ने अपना सिर ऊपर उठाया, पढ़ना बंद कर दिया और आँसुओं से भरी आँखों के साथ गोलूबैनको की तरफ देखा।

''तुम देखते हो, ईवान!'' परंतु यह देखते हुए कि गोलूबैनको अपने होठों को चबा रहा था और उसकी आँखें भी भीगी हुई थीं। वह उठी और अपना काँपता हुआ हाथ उसके बालों पर रख दिया तथा चुपके से उसके माथे को चूमा—''धन्यवाद, ईवान ईवानोविच, '' वह अत्यंत उत्तेजित होकर धीरे से बोली, ''मैंने हमेशा यही सोचा है कि तुम और वाल्डीमर सामान्य मित्रों की बजाय भाई-भाई हो। मुझे क्षमा करना। मैं अति प्रसन्न हूँ, परमात्मा को धन्यवाद!''

आँसू उसके गालों पर बह आए और ईवान गोलूबैनको घबराकर इतना व्याकुल हो गया कि केवल बुढ़िया के ठंडे और हड्डीदार हाथ को थामकर चुंबनों से ढक सका; आँसुओं से उसका दम घुटा जा रहा था। वह एक भी शब्द नहीं बोल सकता था, परंतु मातृप्रेम के इस प्रवाह में उसने अपने आपको इतना धिक्कारा कि वह स्वयं मैदान में लौटकर अपने सिर में गोली मारने को सोचने लगता, बजाय इसके कि इस औरत से मित्रता की प्रशंसा सुनता, जो आधे घंटे में सारी सचाई जान जाएगी। फिर वह इसकी बाबत क्या सोचेगी? क्या यह मित्र—लगभग भाई, उस समय चुपचाप नहीं खड़ा था जब वाल्डीमर को रिवॉल्वर का निशाना बनाया जा रहा था? क्या इस भाई ने दोनों शत्रुओं के बीच का अंतर स्वयं नहीं नापा था? यह सब उसने किया था और जानबूझकर किया था; और यह मित्र, यह भाई अपना दायित्व निभाए बिना चुपचाप वहाँ बैठा था।

वह भयभीत था। इस समय उसने अपने आपको तिरस्कृत माना, फिर भी एक शब्द तक कहने के लिए अपने आप पर काबू न पा सका। अनुरूपता की हीनता से उसकी आत्मा दब गई थी। उसने दिल से अपने आपको पीड़ित और अवरुद्ध गलेवाला महसूस किया। समय गुजरता गया। वह इसे जानता था और जितना अधिक जानता था, पेलागिया पेटरोवना को उसकी खुशी के अंतिम क्षणों से वंचित रखने का समय उसके पास उतना ही कम था। वह उससे क्या कहे? वह उसको किस प्रकार तैयार करे? ईवान गोलूबैनको पूरी तरह अपना होश खो बैठा।

अपने विचारों में सभी द्वंद्वयुद्धों, सभी झगड़ों, हर प्रकार के प्रक्रमों और सब प्रकार के मान-मर्यादा के प्रश्नों को कोसने के लिए उसके पास काफी समय था। अंत में वह स्वीकार करने अथवा भाग जाने के लिए अपने स्थान से उठा। चुपचाप और शीघ्र उसने पेलागिया पेटरोवना का हाथ थामा और अपनी अंगुलियों के सिरों से उसको छूने के लिए झुका। इस प्रकार उसने अपना चेहरा छिपा लिया। उसके चेहरे पर एकाएक आँसू लुढ़कने लगे। वह बिना सोचे, तेजी से दौड़कर बरामदे में आ गया, अपना बड़ा कोट पहना और बिना एक भी शब्द कहे घर से बाहर हो गया।

पेलागिया पेटरोवना ने हैरानी से उसकी तरफ देखा और सोचा—'यह भी किसी को प्यार करता होगा, भावुक

लड़का! ठीक है, यह उनका युवा संताप है— प्रसन्नता से पहले!'

और वह शीघ्र ही भूल गई—प्रसन्नता के अपने सपनों में लीन, जो उसको पवित्र और पूर्ण प्रतीत होते थे।

❑

बकायन का गुच्छा

—एलेक्जेंडर आई. कुपरिन

निकोलाई यवेग्राफोविच अलमासोव को कभी-कभार तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, जब तक उसकी पत्नी दरवाजा खोलती। बिना अपना ओवरकोट और टोपी उतारे वह अपने अध्ययन-कक्ष में चला जाता था। ज्यों ही उसकी पत्नी त्योरियाँ चढ़ाकर जोर से अपना निचला होंठ काटते हुए उसका मलिन चेहरा देखती तो समझ जाती थी कि उसपर कोई आपत्ति आई होगी। वह चुपके से अपने पति का पीछा करती थी। अलमासोव अपने कमरे में उसी स्थान पर थोड़ी देर के लिए खड़ा होकर कोने को असावधानी से देखता था, फिर हाथ में पकड़े बस्ते को गिरा देता था। ज्यों ही वह गिरता, वह खुल जाता था। वह अपने आपको कुरसी पर गिरा देता था और अपने हाथों को दुष्टता से जकड़ लेता था।

भद्र युवा अधिकारी अलमासोव अभी-अभी भाषण सुनकर स्टाफ कॉलेज से लौटा था। आज उसने प्राध्यापक को क्रियात्मक कार्य का अंतिम कठिन काम दिखाया था—एक स्थानीय सर्वेक्षण।

अब तक सारी परीक्षाएँ प्रसन्नतापूर्वक संपन्न हुई थीं। केवल परमात्मा और अलमासोव की पत्नी ही जानते थे कि इसके लिए उसको कितना परिश्रम करना पड़ा था। इसका आरंभ इस प्रकार हुआ था—पहले-पहल कॉलेज में उसका दाखिला असंभव प्रतीत हुआ। लगातार दो साल तक उसने उत्तीर्ण होने का गंभीर प्रयास किया और तीसरे प्रयत्न में निरंतर परिश्रम के साथ ही सब बाधाओं को पार कर सका। यदि इसमें उसकी पत्नी का सहयोग न होता तो वह कभी भी पर्याप्त शक्ति नहीं जुटा पाता और काफी पहले ही अपने प्रयासों को छोड़ बैठता, परंतु विरोचका उसके साहस को कैसे गिरने देती! वह सदा उसका साहस बाधाएँ रखने में उसकी सहायता करती थी। वह हर विफलता का मुकाबला सहजता और प्रसन्नता के साथ करना सीख चुकी थी। उसने प्रत्येक सुविधा से अपने आपको वंचित कर लिया था ताकि उसको आराम दे सके जो भले ही मामूली लगता था, परंतु मानसिक काम करनेवालों के लिए जरूरी था। आवश्यकतानुसार यह उसके कागजों की नकल बनाती, नक्शे खींचती, उसके लिए पढ़ती, अनुबोधक और स्मारक पुस्तक बनाती थी।

पाँच मिनट की भारी खामोशी अलार्म घड़ी की तीखी आवाज ने तोड़ दी—जो थकानेवाली और जानी-पहचानी थी—एक, दो, तीन—दो स्पष्ट ठोकरें और तीसरी कड़क। अलमासोव बिना कोट और टोपी उतारे एक ओर मुड़कर बैठा था। विरोचका उससे दो कदम की दूरी पर खड़ी थी। वह चुप थी और उसके सुंदर एवं तेजस्वी चेहरे पर पीड़ा सी नजर आ रही थी। वह पहले उस सावधानी से बोली जिसका अधिकार किसी प्यारे के बीमार बिस्तर के पास एक औरत को होता है।

''कोलया, क्या तुम्हारा काम असंतोषजनक था?''

उसने अपने कंधे झटक दिए और कोई उत्तर नहीं दिया।

''कोलया, क्या उन्होंने सर्वेक्षण अस्वीकार कर दिया है? मुझे बताओ, चिंता न करो; हम आपस में इसकी बात कर सकते हैं।''

अलमासोव जल्दी से अपनी पत्नी की ओर मुड़ा और उस क्रोध तथा चिड़चिड़ाहट, जिनका प्रयोग देर से रोकी अपनी गालियों को बाहर निकालने के लिए लोग प्राय: करते हैं, के साथ शुरू किया।

''हाँ, उन्होंने अस्वीकार कर दिया, यदि तुम जानना ही चाहती हो। तुम स्वयं नहीं देख सकतीं क्या? भाड़ में जाए यह सारा मामला!...यह सारा कूड़ा-करकट!'' उसने बस्ते में बँधे नक्शे को जोर से ठोकर मारी—''यह सारा कूड़ा-

करकट, अच्छा है कि आग में डाल दिया जाए! यह कॉलेज का अंत है। एक महीने में मैं पलटन को लौट जाऊँगा, वह भी अपमान के साथ! और यह सबकुछ इस शापग्रस्त जगह के लिए...धिक्कार है!''

''कौन सी जगह, कोलया? मैं समझी नहीं!''

वह कुरसी के बाजू पर बैठ गई और अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं।

''कौन सी जगह, कोलया?'' उसने पुन: पूछा।

''ओह, हरियावल की साधारण जगह! तुम जानती हो, उसको पूरा करने के लिए मैंने रात तीन बजे तक किस तरह काम किया था। नक्शा ठीक तरह से खींचकर उसमें रंग भरा था; वे सब यही कहते हैं। ठीक है, पिछली रात जब मैं थका हुआ बैठा था, मेरा हाथ काँप गया और उस जगह निशान लग गया—तेल से पुता गाढ़ा निशान! मैंने उसे रगड़कर साफ करना चाहा, परंतु वह और अधिक गंदा हो गया। मैं आश्चर्य करता हुआ सोच रहा था कि उसके साथ क्या किया जाए? मुझे सूझा कि निशान के ऊपर झाड़ियों का गुच्छा बना दिया जाए और मैंने बना दिया; यह अच्छा बन गया और उसने निशान को ढक लिया। मैं आज उसे प्राध्यापक के पास ले गया।''

''आह! हाँ, ये झाड़ियाँ तुमने यहाँ कैसी लीं?''

''यदि मैं उसे उसी समय बता देता कि यह कैसे हुआ तो शायद वह हँस देता, लेकिन मैं सोचता हूँ कि वह हँसता नहीं, क्योंकि वह जर्मन अभिमानी की तरह अत्यंत कठोर है। मैंने उसे कहा—'परंतु यहाँ झाड़ियों का गुच्छा है।' 'नहीं, ' उसने उत्तर दिया—'मैं उस जगह को अपनी हथेली की तरह जानता हूँ, वहाँ कोई झाड़ी नहीं है।' काफी लंबी बातचीत हुई और कई अधिकारी वहाँ उपस्थित थे। 'यदि तुम्हें विश्वास है कि वहाँ झाड़ियाँ हैं तो कल हम वहाँ चलेंगे और उस स्थान का निरीक्षण करेंगे। मैं तुम्हें बताऊँ कि या तो तुम बहुत असावधान हो या फिर तुमने तीन मील दूर से नक्शा बनाया है।' ''

''परंतु वह इतना आश्वस्त क्यों है कि वहाँ झाड़ियों का गुच्छा नहीं है?''

''ओह, प्रिय! क्या बचकाना प्रश्न पूछती हो, क्योंकि वह गत बीस वर्षों से अपने शयन-कक्ष से अधिक उस जगह को जानता है और वह संसार में अत्यंत घृणित अभिमानी है और सौदेबाजी में जर्मन है। अंत में यह पता चल जाएगा कि मैं झूठा हूँ और इसके अतिरिक्त...।''

बात करते समय वह राखदानी से जली दियासलाइयाँ उठाकर अपनी अंगुलियों के बीच तोड़ता रहा और टुकड़ों को फर्श पर जोर से फेंकता रहा। यह स्पष्ट था कि वह बहुत उद्विग्न था।

बिना एक भी शब्द बोले पति-पत्नी गंभीरता से सोचते हुए बैठे रहे। एकाएक उत्साहित विचार से उछलकर विरोचका कुरसी से उतरी।

''सुनो कोलया, हमें इसी क्षण जाना होगा। तैयार हो जाओ, शीघ्र!''

निकोलाई यवेग्राफोविच ने त्योरियाँ चढ़ाईं; जैसे शारीरिक पीड़ा हो।

''ओह, निरर्थक मत बनो, विरा! तुम क्या सोचती हो कि मैं जाकर क्षमा माँगू? इसका अर्थ यह होगा कि मैं अपनी गलती को प्रमाणित करता हूँ। मूर्खता की बात मत करो।''

''मैं मूर्खता की कोई बात नहीं करना चाहती, '' विरोचका ने अपना पैर ठोकते हुए कहा, ''मैं तुम्हें जाकर माफी माँगने के लिए नहीं कह रही हूँ, केवल इतना ही कि यदि वहाँ वे झाड़ियाँ नहीं हैं तो हमें तुरंत जाकर वहाँ लगा देनी चाहिए।''

''लगा देनी चाहिए?...झाड़ियाँ?'' निकोलाई यवेग्राफोविच ने विस्मय से आँखें फैलाईं।

''हाँ, उन्हें लगा दें। यदि तुमने झूठ बोला है तो उसे सच कर दो। तैयार हो जाओ, शीघ्र। मुझे मेरा कोट और

टोपी दो...वहाँ नहीं, अलमारी में देखो...मेरा छाता।''

जबकि अलमासोव उसकी टोपी ढूँढ़ रहा था और व्यर्थ में विरोध करने का प्रयास कर रहा था, विरोचका ने जल्दी से मेज के दराज खोले, छोटी अलमारी खोली, टोकरियाँ और बक्से निकाले और उन्हें खाली करके उनके सामान को फर्श पर डाल दिया।

''कान की बालियाँ...केवल कूड़ा-करकट...वे इनके लिए कुछ नहीं देते...और यह मूल्यवान रत्न के साथ अंगूठी...हम इसको फिर किसी तरह खरीद लेंगे। इसके खो जाने पर दया आती है। कंगन...यह भी कुछ नहीं देते...बहुत पुराने हो गए हैं...तुम्हारा सिगरटकेस कहाँ है, कोलया?''

पाँच मिनट में उसका सारा खजाना सिमटकर उसके बैग में आ गया। विरोचका पहले ही कपड़े पहनकर तैयार थी। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई कि कोई चीज भूल तो नहीं गई।

''चलो!'' उसने दृढ़ता से कहा।

''परंतु कहाँ के लिए?'' अलमासोव ने विरोध किया—''इस समय अँधेरा हो रहा है और वह स्थान यहाँ से पाँच मील दूर है।''

''अनर्थक, चलो।''

अलमासोव दंपती पहले गिरवी रखनेवाले के पास गए। महाजन, जिसने उनकी चीजों की कीमत लगाई, मानव दुर्भाग्य को प्रतिदिन देखने का आदी हो गया था। इसलिए इनकी दुर्दशा ने उसे प्रभावित नहीं किया। उसने चीजों को क्रम से परखने में इतनी देर लगा दी कि विरोचका ने अपना धैर्य खोना शुरू कर दिया। वह विशेषकर उस समय दु:खी हुई जब उसकी अंगूठी के चमकीले नगीने का परीक्षण तेजाब से करके उसके तीन रुबल दिए गए।

''यह असली पत्थर है!'' विरोचका ने विरोध किया—''यह कम-से-कम सत्ताईस रुबल का है।''

महाजन ने उदासीनता से आँखें बंद कर लीं।

''हमें कोई फर्क नहीं पड़ता, मैडम। हम पत्थरों को नहीं लेते।'' उसने अंतिम वस्तु को काँटे पर रखते हुए कहा, ''हम केवल धातु का मूल्य लगाते हैं।''

उसको पूरा करने के लिए पुराने कंगन की अधिक कीमत लगाई गई, जिसे देखकर विरोचका अत्यंत चकित हुई। सब मिलाकर उन्हें तेईस रुबल मिले, जो जरूरत से अधिक थे।

अब अलमासोव दंपती माली के घर पहुँचे तो सेंट पीटर्सबर्ग की रात सफेद आकाश पर छाई हुई थी और हवा दूधिया नीले में। पुराना दक्षिण निवासी माली सोने का चश्मा पहने अपने परिवार के साथ खाना खाने ही वाला था। वह इतनी रात को आनेवाले इन ग्राहकों और उनकी अजीब प्रार्थना से बहुत चकित और क्रोधित हुआ। उसने अवश्य किसी रहस्य की शंका की होगी, क्योंकि उसने विरोचका के प्रश्नों का उत्तर रूखेपन से दिया।

''मुझे खेद है कि मैं श्रमिकों को रात के इस समय और इतनी दूर भेज नहीं सकता। यदि चाहो तो हम इसे कल कर सकते हैं, आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ।''

अब करने के लिए केवल एक ही चीज रह गई कि माली को उस स्थान के बारे में सारी बात बता दी जाए, जो विरोचका ने बता दी। माली ने शंका और अमित्रता भाव से सुना, परंतु जब विरोचका झाड़ी लगाने के बिंदु पर पहुँची तो उसने रुचि दिखाई और समय-समय पर स्वीकृति के भाव के साथ मुसकराया।

''यह ठीक है, इसके अतिरिक्त तो कुछ नहीं करना?'' वह सहमत हो गया जब विरोचका ने कहना समाप्त किया।

''तुम किस प्रकार की झाड़ियाँ लगवाना चाहते हो?''

जो झाड़ियाँ उसके पास थीं, किसी तरह से, उनमें से कोई भी उचित प्रतीत नहीं हुई किंतु वे चाहें या न चाहें, उनको बकायन का गुच्छा लेना ही था।

अलमासोव ने अपनी पत्नी को घर लौट चलने के लिए जोर दिया, परंतु व्यर्थ। वह उसके साथ जाने के लिए आग्रह करती रही। वह मालियों के काम में खलल डालेगी, उन्हें परेशान करेगी, काम में विघ्न डालेगी और जब तक आश्वस्त नहीं हो जाएगी कि झाड़ियों के आसपास की घास एवं बाकी भूमि की घास में कोई अंतर नहीं है तब तक वह घर लौटने के लिए राजी नहीं होगी!

अगले दिन विरोचका घर में बैठ नहीं सकी और अपने पति से मिलने बाहर चली गई। जब वह अभी थोड़ी दूरी पर था तो यह उसकी प्रसन्न मुद्रा और चाल से समझ गई कि झाड़ी की कहानी का सुखांत हो गया है। उसका चेहरा जीत की खुशी से चमक रहा था।

''यह अच्छा रहा, अति उत्तम!'' उसने अपनी पत्नी की चिंतित दृष्टि के उत्तर में पुकारा। तब वह अभी दस कदम दूर था, बोला, ''कोशिश करो और अपने आपमें चित्र खींचो कि हमें गुच्छा कैसे मिला।'' वह देखता रहा और एक पत्ता तोड़कर चबा भी गया—'' 'यह कैसा वृक्ष है?' उसने पूछा। 'मैं नहीं जानता, श्रीमान्, यह भोजपत्र ही होगा!' मैंने उत्तर दिया।

फिर वह मेरी तरफ मुड़ा और अपना हाथ बढ़ाया—'मुझे खेद है, वाहक, बूढ़ा होने के कारण मैं इन्हें पहचानने में असमर्थ हूँ।' कितना अच्छा आदमी है और चतुर भी। उसको धोखा देने के लिए मुझे शर्मिंदा होना चाहिए। वह हमारे प्राध्यापकों में से सर्वोत्तम है। उसके ज्ञान का जवाब नहीं और वह सर्वेक्षण में कितना अचूक और तेज है; यह केवल आश्चर्यजनक है!''

परंतु विरोचका के लिए कहानी को एक ही बार सुनना काफी नहीं था। उसने प्राध्यापक से हुई बातचीत को बार-बार सुनाने के लिए कहा। वह छोटी सी बात में भी रुचि लेती थी—प्राध्यापक के चेहरे पर कैसे भाव थे, उसने किस स्वर में बात की और कहा कि वह बूढ़ा हो गया था, कोलया ने स्वयं उस क्षण कैसा महसूस किया था आदि।

वे दोनों एक साथ घर लौटे; जैसे सड़क पर केवल वही दोनों ही हों—एक-दूसरे का हाथ थामे और अकारण हँसते हुए। रास्ते में चलनेवाले हैरानी से इस अद्‌भुत जोड़े को देखने के लिए खड़े हो जाते थे।

निकोलाई यवेग्राफोविच ने कभी भी इतनी भूख से नहीं खाया था जैसा उस दिन। रात के भोजन के बाद जब विरोचका चाय का प्याला लेकर अपने पति के अध्ययन-कक्ष में गई तो दोनों पति-पत्नी एकाएक हँस पड़े और एक-दूसरे को देखने लगे।

''तुम हँस क्यों रहे हो?'' विरोचका ने पूछा।

''और तुम क्यों?''

''पहले तुम बताओ, मैं बाद में बताऊँगी।''

''ओह, यह केवल अनर्थक था। मैं बकायन की झाड़ी के बारे में सोच रहा था, और तुम?''

''मैं भी बकायन की झाड़ी की बाबत सोच रही हूँ। मैं कहना चाहती हूँ कि आजके बाद बकायन ही मेरा प्रिय फूल होगा।''

❑

हँसी

—लियोनिड एन. एंड्रेइव

साढ़े छह बजे मुझे विश्वास हो गया कि वह आएगी। मैं व्याकुल और प्रसन्न था। मेरे ओवरकोट का केवल ऊपरवाला बटन लगा हुआ था और ठंडी हवा से फड़फड़ा रहा था, परंतु मुझे सर्दी नहीं लग रही थी। सिर पर पीछे सरकाई विद्यार्थी की टोपी पहने, मैं गर्व से सिर को सीधा उठाए हुए था। जिन आदमियों से मैं मिला, उन्हें एक प्रकार की संरक्षण और धमकीभरी दृष्टि से देखा; जबकि औरतों को आकर्षण और प्यार भरी दृष्टि से निहारा; हालाँकि मैंने उसे चार दिन पहले ही प्यार किया था। मैं युवा था और दिल इतना रंगीन था कि मैं दूसरी औरतों के प्रति संपूर्ण रूप से उदासीन नहीं रह सकता था। मैं शीघ्रता, साहस और ललित भाव से चलता गया।

पौने सात बजे तक मेरे ओवरकोट के दो बटन लग चुके थे और मैंने केवल औरतों की ओर ही देखा—अब प्यार करने की दृष्टि से नहीं, वरन् अति घृणा से। मैं केवल एक औरत को देखना चाहता था, बाकी जाएँ भाड़ में! वह केवल रास्ते में ही मिल रही थीं। उसके साथ उनकी समानता मेरे अंदर के भरोसे को कम करती नजर आ रही थी और इसने मेरे संशयित बिंदु को छुआ।

सात बजने में पाँच मिनट बाकी थे। तब मैंने अपने आपको गरम महसूस किया।

सात बजने में दो मिनट बाकी थे। तब मैं ठंडा होने लगा।

सात बजते ही मुझे निश्चय हो गया कि वह नहीं आएगी।

साढ़े आठ बजे मैं निराशा की मूर्ति था। मेरे ओवरकोट के सारे बटन लग चुके थे, कॉलर उठा हुआ था और मेरी टोपी नीचे खिसककर मेरी नाक पर आ गई थी—मेरी नाक ठंडी और नीली थी। मेरे बाल, मूँछें और बरौनियाँ पाले से सफेद हो गए थे और मेरे दाँत बज रहे थे। मेरी घिसी चाल और झुकी पीठ से ऐसा लगता था जैसे कोई पुष्ट बूढ़ा अपने मित्रों से मिलकर अनाथालय को लौट रहा हो।

इस परिवर्तन का कारण वही थी। आह! पिशाच! नहीं, मुझे यह नहीं कहना चाहिए। संभवत: उसे आने न दिया गया हो; संभवत: वह अस्वस्थ हो या संभवत: वह मर गई हो! मर गई! और मैं उसकी शपथ ले रहा हूँ!

❑

''युजेनिया भी आज रात वहाँ होगी।'' एक विद्यार्थी साथी ने मुझसे कहा। उसे कोई ईर्ष्या नहीं हो सकती थी क्योंकि वह नहीं जान सकता था कि मैंने सर्दी में सात से साढ़े आठ बजे तक युजेनिया की प्रतीक्षा की थी।

''क्या यह ठीक है?'' मैंने पूछा, परंतु मैं अंदर-ही-अंदर फूट पड़ा—'ओह, पिशाच!'

वह पोलोजोव दंपती द्वारा दी गई सायंकाल की पार्टी में आएगी। मैं पोलोजोव दंपती से कभी नहीं मिला था, परंतु मैंने उसी सायंकाल उनके घर जाने का निश्चय वहीं और उसी समय कर लिया।

''सज्जनो!'' मैं प्रसन्नतापूर्वक चिल्लाया—''यह बड़े दिन की पूर्वसंध्या है! हर कोई आज की रात प्रसन्नचित्त है—आओ, हम भी मौज मनाएँ।''

''परंतु कैसे?'' विद्यार्थी साथी ने उदास होकर पूछा।

''परंतु कहाँ?'' दूसरे ने पूछा।

''हम पोशाकें पहनकर आज रात नगर में होनेवाली हर पार्टी में चलें।'' मैंने सुझाव दिया।

और खुशी की लहर दौड़ गई। वे उछले, कूदे, चिल्लाए एवं गाना गाने लगे और यहाँ तक कि मेरे सुझाव के लिए मेरा धन्यवाद करने लगे। जो भी रकम हमारे पास थी उसको एकत्र किया और आधे घंटे में हम दस विद्यार्थी

इकट्ठे हो गए। छोटे पिशाच का यथाक्रम नाच करते हुए और ग्राहकों के योग्य बनते हुए, अंत में, हमने दुकान को हँसी और रात की ठंडी हवा से भर दिया।

मैंने कोई काली, सुंदर और चिंताकुल चीज चाही और कृत्रिम बाल बनानेवाले से स्पेन के शिष्ट आदमी की पोशाक के लिए कहा।

जो पोशाक मुझे मिली, वह जरूर किसी लंबे शिष्ट पुरुष की होगी, क्योंकि मैं उसमें पूरी तरह गुम हो गया और ऐसा लगा कि मैं बड़े खाली कमरे में अकेला ही हूँ। जितनी जल्दी मैं उसे उतार सकता था, उतारकर दूसरी माँगी।

''क्या तुम रंगदार घंटियाँ लगी मसखरे की पोशाक लेना चाहोगे?''

''मसखरे की?'' मैंने घृणा से कहा।

''ठीक है, तो फिर डाकू की टोपी और कटार के साथ?''

कटार! यह मेरी वर्तमान मानसिक स्थिति के अनुकूल थी। जिस डाकू की पोशाक मुझे दी गई वह बड़ी आयु का प्रतीत नहीं होता था। सारी संभावनाओं के साथ वह कोई आठ वर्ष का बिगड़ा हुआ लड़का होगा। उसकी टोपी से मेरा सिर ढका नहीं गया और मुझे कसे हुए मखमल के पाजामे में से छीलकर निकाला गया। नौकर की पोशाक व्यर्थ थी। उसपर दाग-ही-दाग थे और चोगा छिद्रों से भरा हुआ था।

''तुम आडंबर किसलिए कर रहे हो? जल्दी करो, देर हो रही है!'' दूसरे साथियों ने शोर मचाया, जो पहले ही तैयार हो चुके थे। अब एक ही पोशाक बची थी, जो चीनी श्रेष्ठ पुरुष की थी।

''यह चीनी पोशाक मुझे दो।'' मैं हाथ हिलाकर चिल्लाया। उन्होंने पोशाक मुझे दे दी। मैं उन रंगी स्लीपरों की मूर्खतापूर्ण बात नहीं करूँगा, जो इतनी छोटी थीं कि उनमें मेरा केवल आधा पैर ही आ रहा था; न ही उस लाल सिल्क के टुकड़े के बारे में बोलूँगा, जो कृत्रिम बालों की तरह मेरे सिर को ढककर रस्सियों से मेरे कानों से बाँधा गया था—मेरे कान चमगादड़ की तरह खड़े थे।

फिर मुखौटा आया। ओह, वह मुखौटा! उसमें नाक, आँखें और मुँह अपने-अपने उचित स्थानों पर थे, परंतु उसमें कोई मानव नाम की चीज नहीं थी। यह एक प्रकार का भाववाचक मुख सामुद्रिक था। आदमी इतना शांत कभी नहीं होता जितना वह दिखाई देता था, यहाँ तक कि कब्र में भी! उससे न ही उदासी प्रकट होती थी, न प्रसन्नता और न ही हैरानी—वास्तव में कुछ भी नहीं। वह मुखौटा तुम्हारी तरफ सीधे और शांत भाव से देखता था; ज्यों ही तुम उसकी तरफ देखते तो दुर्निवार्य हँसी को रोक नहीं सकते थे। जब मैंने उसे अपने साथियों को पहनाया तो हँसी के फव्वारे फूट पड़े। वे अपने हाथ हिलाते कुरसियों पर गिर पड़े। ''यह अत्यंत मौलिक मुखौटा होगा।'' वे चिल्लाए। मैं लगभग रोनेवाला था, परंतु जब मैंने शीशे में देखा, मुझे स्वयं हँसी ने जकड़ लिया। हाँ, यह जरूर ही मौलिक मुखौटा होगा!

''हमें प्रतिज्ञा करनी होगी कि किन्हीं भी परिस्थितियों में हम मुखौटे नहीं उतारेंगे।'' ज्यों ही हम बाहर निकले हमसें से एक ने कहा, ''अपने मान के नाम पर।''

❑

वस्तुत: वह अद्‍वितीय मुखौटा था। लोगों की भीड़ ने मेरा पीछा किया, मुझे हर तरफ घुमाया, धक्के दिए, चुटकियाँ भरीं। जब थका हुआ मैं क्रोध से मुड़ा तो दुर्निवार्य हँसी से मेरा स्वागत किया गया। सारे रास्ते मुझे घेरे रखा और हँसी के गरजते बादलों से दबाया गया। उनके साथ-साथ मैं अपने आपको इस अट्टहास के उन्मत्त चक्कर से पृथक् नहीं कर पाया। तभी अट्टहास ने मुझे भी जकड़ लिया। मैंने शोर मचाया, गाना गाया और फिसला; जबकि सारी दुनिया मेरी आँखों के सामने घूम गई, जैसे मैंने बहुत पी ली हो। फिर भी यह सबकुछ मुझसे

कितनी दूर था! उस मेरे मुखौटे के नीचे कितना अकेलापन था!

''यह मैं हूँ।'' मैंने धीरे से कहा।

उसकी भारी बरौनियाँ धीरे से ऊपर उठीं। उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा, काली किरणों का सारा पुलिंदा मुझपर फूट पड़ा और वह एकाएक हँसी से फूट पड़ी—टन-टन करती प्रसन्न वसंत ऋतु के सूर्य की तरह चमकती हुई!

''यह मैं हूँ, मैं!'' मैंने मुसकराते हुए दोहराया—''तुम आज शाम क्यों नहीं आईं?''

परंतु वह हँसे जा रही थी, हँसे जा रही थी, बिना रुके!

''मैं बहुत थक गया हूँ, मेरा दिल पीड़ा से भरा है।'' मैंने उत्तर के लिए याचना की।

परंतु वह हँसती चली गई। उसकी आँखों की किरणें कुछ मद्धिम हो गईं तथा उसकी मुसकराहट और साफ होती गई। यह सूर्य था, परंतु एक जलता हुआ निर्दयी, क्रूर सूर्य!

''क्या, बात क्या है?'' मैंने पूछा।

''क्या यह तुम हो?'' उसने अपने आप में रोते हुए पूछा, ''तुम कितने जोकर लग रहे हो!'' मेरे कंधे नीचे हो गए, मेरा सिर झुक गया, मेरी आकृति में गहरी निराशा थी। वह पास से गुजरते प्रसन्न युवा जोड़ों को देखने के लिए मुड़ी; मरता हुआ प्रभात उसके चेहरे पर था।

''हँसना लज्जा की बात है!'' मैंने कहा, ''क्या तुम जानती हो, मेरे इस मुखौटे के नीचे जीवित पीड़ाग्रस्त चेहरा है? केवल तुमसे मिलने के लिए यह मैंने पहना है। तुमने मुझे अपने प्रेम की आशा बँधाई है और तुम इसे इतनी जल्दी और निर्दयता से वापस ले रही हो! तुम आई क्यों नहीं?''

वह मेरी ओर मुड़ी; जैसे उसके मधुर, मुसकराते होठों पर मेरे प्रश्न का उत्तर हो, परंतु मेरी ओर देखते ही उसे पुन: हँसी का दौरा पड़ गया। साँस नहीं ले सकती थी। आँसुओं को भी रोक नहीं पाई। उसने लैस लगे अपने रूमाल से अपना मुँह ढक लिया। अत्यंत कठिनाई से अपना उत्तर दे पाई—

''जरा मुड़कर शीशे में अपना चेहरा देखो! ओह, क्या सूरत बनाई है!''

मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ीं और पीड़ा से दाँतों को रगड़ा। मैंने अनुभव किया कि मेरा चेहरा जम गया था और मृत्यु रूपी चटाई मेरे ऊपर तन गई थी। मैंने शीशे में झाँका—मूर्खता भरी शांति, हठी उदासीनता, निर्दयी, निश्चल मुख सामुद्रिक ने मुझे घूरा और मैं हँसी से फूट पड़ा तथा पूर्व इसके कि हँसी पूर्ण रूप से रुके, उसी समय गुस्से की कंपन भी हुई। मैंने निराशा के पागलपन में लगभग चीख मारकर पूछा, ''तुम हँस क्यों रही हो?''

वह चुप हो गई। मैंने अपने प्रेम की कानाफूसी में बोलना शुरू कर दिया। मैंने इससे अच्छी वकालत पहले कभी नहीं की थी, क्योंकि इतनी गइराई से प्रेम नहीं किया था। मैंने प्रतीक्षा के दु:ख के बारे में कहा, उन्मत्त ईर्ष्या के जहरीले आँसुओं की बात की और बात की अपनी आत्मा की, जो संपूर्ण प्रेम थी। मैंने देखा कि उसकी बरौनियाँ नीची होकर किस तरह उसके गालों पर छाया कर रही थीं—गाल जो अब पीले पड़ चुके थे। मैंने देखा, उसकी आंतरिक आग किस तरह से इस भोथरी सफेदी में से प्रतिबिंबित हो रही थी और किस तरह से उसका लचीला शरीर मेरी ओर अनिच्छा से झुक रहा था। वह रात की रानी की तरह कपड़े पहने हुए थी और पहेली की तरह काले फीते में, जैसे अँधेरे से लिपटी हुई हो—सितारे की चमक-दमक जैसी दमकती-सी; वह सुंदर थी बच्चे के भूले स्वप्न की तरह! फिर भी मैंने बात की। आँसू आँखों में भर गए और मेरा दिल खुशी से धड़कने लगा। अंतत: मैंने ध्यान दिया—मैंने देखा कि कोमल मुसकराहट ने उसके होंठ जुदा कर दिए, जबकि उसकी बरौनियाँ काँपकर ऊपर उठीं—धीरे से, भीरुता से; मानो उसे अनंत भरोसा हो, उसने अपना छोटा चेहरा मेरी ओर मोड़ा और मैंने कभी ऐसी हँसी नहीं

सुनी, जैसी उसकी ओर से आई।

''नहीं-नहीं, मैं नहीं!'' उसने लगभग विलाप करते हुए कहा; पुन: टन-टन का फव्वारा फूट पड़ा!

ओह, काश! क्षण भर के लिए मैं मानव चेहरा ले सकता! मैंने अपने होंठ चबाए। आँसू मेरे जलते हुए गालों पर गिर रहे थे और मेरा यह मूर्ख मुख सामुद्रिक, जिसमें हर चीज—नाक, आँखें और होंठ—गंभीर और शांत—उदासीनता से देख रहे थे—अपनी मूर्खता में भयंकर था। अपने रंगदार स्लीपरों में मैं उसकी ओर लंगड़ाकर चला और उसकी टन-टन हँसी ने मेरा पीछा किया। ऐसा लगा, मानो पानी की चाँदी-लहर बहुत ही ऊँचाई से गिरी हो—चट्टान से टकराती हुई!

हम सूनसान सड़क पर दृढ़, उत्तेजित आवाजों के साथ रात के मौन में चलते हुए अपने-अपने घरों की ओर लौट रहे थे। मेरे साथियों में से एक ने मुझे कहा, ''तुमने बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की है। मैंने अपने जीवन में लोगों को इस प्रकार हँसते कभी नहीं देखा। लगे रहो...यह क्या? क्या कर रहे हो तुम? मुखौटा क्यों फाड़ दिया? लड़के कहते हैं, वह पागल हो गया है! देखो, वह अपनी पोशाक भी फाड़ रहा है!...वह रो क्यों रहा है?''

❑

छब्बीस आदमी और एक लड़की

—मैक्सिम गोर्की

हम छब्बीस थे—छब्बीस जीती-जागती मशीनें; गीले तहखानों में बंद, जहाँ हम क्रेंडल और सुशका बनाने के लिए आटा गूँधते थे। हमारे तहखाने की खिड़की नमी के कारण हरे और कीचड़ भरी ईंटों के क्षेत्र में खुलती थी। खिड़की को बाहर से लोहे की सलाखों से रक्षित किया गया था। आटे की धूल से सने शीशों से धूप नहीं आ सकती थी। हमारे मालिक ने खिड़की में लोहे की सलाखें इसलिए लगवाई थीं कि हम बाहर के भिखारियों को या अपने उन साथियों को रोटी न दे सकें, जो बेकार थे और भूखों मर रहे थे। हमारा मालिक हमें कपटी कहता था और खाने में मांस की जगह जानवरों की सड़ी आँतें देता था। वह हमारे लिए भाप और मकड़ी के जालों से भरी, नीची एवं भारी छत के तले और धूल तथा गोरुई रोग से ग्रसित मोटी दीवारों के बीच, गला घोंटनेवाला बंद पत्थर का बक्सा था, जहाँ हम रखे गए थे।

हम प्रात: पाँच बजे जागते थे और सोते समय हमारे साथियों द्वारा गूँधे गए आटे से क्रेंडल और सुशका बनाने के लिए, भोथरे और उदासीन, छह बजे तक अपनी मेजों पर बैठ जाते थे। सारा दिन—प्रात: से लेकर रात दस बजे तक—हममें से कुछ साथी मेजों पर गुँधे आटे को हाथों से गोल करते थे और बाकी दूसरे आटे को पानी में गूँधते थे। सारा दिन उस बरतन में धीमी और शोकपूर्ण आवाज में खौलता पानी गाता रहता, जिसमें केंरडल पकाते थे और नानबाई अपने बेलचे से सख्ती तथा जोर से भट्ठी को रगड़ता था, जब उबाले गए आटे को गरम ईंटों पर रखता था। सारा दिन अँगीठी की लकड़ियाँ जलती रहती थीं और ज्वाला का लाल प्रतिबिंब उस काले घर की दीवारों पर नाचता था, मानो हमारा मजाक उड़ा रहा हो। किसी परियों की कहानी के दैत्य के सिर की तरह, महाकाय भट्ठी का आकार भी भद्दा था। जीवित आग भरे अपने जबड़े को खोले, हमपर गरम साँसें छोड़ता और भट्ठी पर लगे दो रोशनदानों से अनंत रूप से हमारे काम को देखता, अपने आपको भूमि से ऊपर को धक्का देता हुआ प्रतीत होता था—ये दो रोशनदान आँखों की तरह थे—दैत्य की शांत और निर्दयी आँखें! वे हमेशा हमारी तरफ उसी काली नजर से देखतीं, मानो वे सनातन गुलामों को देखते-देखते थक गई हों और हमसे किसी मानव वस्तु की अपेक्षा न करके बुद्धिमानी की ठंडी घृणा से हमारा तिरस्कार कर रही हों।

दिन-प्रतिदिन, आटे की धूल और अपने पैरों से लाए गए कीचड़ में, उस अत्यंत गरम वातावरण में, हम गुँधे हुए आटे को अपने पसीने से तर करते क्रेंडलों के लिए गोले बनाते थे। हम अपने काम से तीव्र घृणा करते थे और अपने हाथ से बनाए क्रेंडल कभी नहीं खाते थे। हम चरी से बनाए क्रेंडलों को मान्यता देते थे। लंबी मेज पर एक-दूसरे के सामने बैठते थे। लंबे समय तक मशीन की तरह हाथों और अंगुलियों को चलाते थे कि हमें अपनी गति को देखने की जरूरत नहीं पड़ती थी। हम एक-दूसरे को तब तक देखते रहते थे, जब तक हर कोई यह नहीं देख लेता था कि उसके साथी के चेहरे पर कितनी झुर्रियाँ थीं। हमारे पास बात करने के लिए कुछ नहीं था। बातचीत का हर विषय समाप्त हो चुका था और हम अधिक समय तक चुप रहते थे, जब तक एक-दूसरे को गाली नहीं देते थे। एक व्यक्ति हर एक को गाली दे सकता था, विशेषकर जब वह व्यक्ति उसका साथी हो, परंतु ऐसा बहुत कम होता था। एक आदमी तुम्हें बुरा-भला कैसे कह सकता है जब वह स्वयं ही अधमरा हो, यदि वह स्वयं पत्थर हो, यदि उसकी भावनाओं को उसके परिश्रम ने कुचल दिया हो, परंतु हमारे जैसे आदमियों के लिए मौन रहना अत्यंत कष्टकर था। उनके लिए, जिन्होंने सबकुछ कह दिया हो, जो वे कह सकते थे—मौन केवल उनके लिए सादा और सरल है, लेकिन जिन्होंने अभी तक बोलना शुरू नहीं किया...। परंतु कभी-कभी हम गाते थे और हमारा गाना इस प्रकार शुरू

होता था—काम करते-करते हममें से एक थके हुए घोड़े की तरह लंबी आह भरता, फिर नरम स्वर में गुनगुनाता था, जिसका मधुर किंतु शोकाकुल उद्‌देश्य हमेशा गायक के दिल को हलका कर देता था। हममें से एक गाता और बाकी चुप रहकर उसे सुनते। गाना काँपता और हमारे तहखाने की छत के नीचे मर जाता था; जैसे सर्दियों की गीली रात में बिना जोते घास के शिविर की आग जलाई जाती है और जब भूरा आकाश सीसे की छत की तरह पृथ्वी को ढक लेता है। उसके साथ दूसरी आवाज जुड़ जाती और दोनों आवाजें, तब हमारे घनी भीड़वाले गढ़े के मोटे वातावरण में नरमी और शोकाकुल रूप से तैरने लगतीं। एकाएक कई और आवाजें जुड़ जातीं और गाना लहरों की तरह उठता तथा ऊँचा और ऊँचा होता जाता, लगता कि पथरीली जेल की दीवारें हिल जाएँगी।

छब्बीस-के-छब्बीस आदमी अपनी शक्तिशाली आवाजों में गाकर नान-बाईखाने को भर देते थे जब तक यह महसूस नहीं होता था कि तहखाना हमारे गाने के लिए छोटा पड़ रहा है। गाना पथरीली दीवारों से टकराता था, विलाप करता था और कराहता था। वह दिल को मधुर उत्तेजित पीड़ा से भर देता था, पुराने घावों को खोलता था और निराशाओं को जाग्रत करता था। गानेवाले गहरी और भारी आह भरते। एक आदमी एकाएक अपना गाना बंद करके कुछ देर के लिए साथियों का गाना सुनने बैठ जाता था। फिर उस आवाज को पुन: सामान्य लहर मिल जाती अथवा कोई निराशा में चिल्लाता—'आह!' और फिर आँखें बंद करके गाने लगता था। परिपूर्ण लहर संभवत: उसे कहीं दूर का रास्ता मालूम होती—खुली धूप से चमकता रास्ता, जिसपर वह स्वयं चल रहा था।

परंतु भट्ठी में ज्वाला अभी तक झिलमिला रही थी। नानबाई अब तक अपने बेलचे से रगड़ रहा था। पानी अभी तक बरतनों में खौल रहा था और आग का प्रतिबिंब अब भी दीवारों पर तिरस्कार से नाच रहा था। दूसरे आदमियों के शब्दों में हमने अपने भोथरे शोक को गाया—और गाया उन व्यक्तियों की व्यथा को, जो धूप से वंचित थे और जिनको गुलामों जैसी भारी निराशा थी।

तो पत्थरों से बने उस बड़े तहखाने में हम छब्बीस आदमी इस प्रकार रहते थे। हमारे ऊपर काम का बोझ इतना था मानो उस मकान की तीनों मंजिलों का सारा बोझ हमारे कंधों पर हो। गाने के अतिरिक्त हमारे पास और भी अच्छी चीज थी, ऐसी चीज, जिसको हम प्यार करते थे और जिसने धूप का स्थान ले लिया था—धूप, जिसकी कमी हमें थी। हमारे मकान की दूसरी मंजिल पर सुनहरी कशीदाकारी की दुकान थी और उसमें काम करनेवाली कई लड़कियों के साथ एक टानिया भी थी—सोलह वर्ष की घरेलू सेविका। प्रतिदिन प्रात: वह अपनी चमकती आँखें और गुलाबी चेहरा लिये, दरवाजे में लगी खिड़की से झाँकती और दुलार दिखानेवाली तथा ठनठनाती आवाज में हमें बुलाकर पूछती, ''कैदियो! क्या मेरे लिए कोई क्रेंडल है?''

हम सभी इस साफ, प्रसन्न और जानी-पहचानी आवाज पर मुड़ते और प्रसन्नतापूर्वक उस छोटे मधुरता से मुसकराते सुकुमार चेहरे को देखते थे। हम शीशे से दबी छोटी नाक और गुलाबी होंठों के बीच छोटे एवं सफेद दाँतों को चमकते देखना चाहते थे—गुलाबी होंठ, जो मुसकराहट से फैल जाते थे। हम एक-दूसरे पर गिरते हुए उसके लिए दरवाजा खोलने जाते थे। वह आनंदचित्त अंदर आती और हमारे सामने एप्रेन थामे और मुसकराते हुए खड़ी हो जाती थी। एप्रेन के लंबे प्लेट, जो कंधों पर खिसक जाते थे, उसके सीने के आर-पार तक आते थे और हम काले, गंदे, भद्‌दे उसकी तरफ देखते थे—(भूमि से दहलीज कई सीढ़ियाँ ऊँची थीं) केवल उसके लिए रटे गए विशेष शब्दों में हम उसे शुभ प्रभात कहते थे। जब उससे बात करते तो हमारी आवाजें नरम हो जातीं और मजाक भी आसानी से होते थे। जो कुछ भी हम उसके लिए करते, उसमें कुछ-न-कुछ विशेषता होती थी। नानबाई अपना बेलचा धकेलता और अत्यंत भारी क्रेंडल, जो भी वह ढूँढ़ सकता था, निकालता और टानिया के एप्रेन में डाल देता था।

''ध्यान रखना कि मालिक तुम्हें पकड़ न ले!'' हम हमेशा उसे चेताया करते थे। वह गँवारू हँसी हँसती और प्रसन्नता से कहती—''अलविदा, कैदियो!'' और चूहे की तरह भाग जाती थी।

यह सबकुछ होता था। जब वह चली जाती तो उसकी बात हम एक-दूसरे से करते। हम वही कहते जो पिछले दिन या उसके पिछले दिन कहा था; क्योंकि वह और हम तथा हमारे आसपास की चीजें वही होती थीं, जो पिछले या उससे पिछले दिन होती थीं। यह किसी भी व्यक्ति के लिए कठिन और दु:खदायी होता है, जिसके इर्दगिर्द कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। यदि इसमें आत्मा को पूरी तरह नष्ट करने का प्रभाव नहीं होता तो जितना अधिक समय वह जीता है, उसके आसपास का वातावरण उतना ही दु:खदायी और थकानेवाला हो जाता है। औरतों के बारे में बात करते हुए हमारे अशिष्ट और लज्जाहीन शब्द कभी-कभी हमें भी घृणित प्रतीत होते हैं। यह हो सकता है कि जिन औरतों को हम जानते थे वे दूसरे प्रकार के शब्दों के योग्य न हों, परंतु हमने कभी भी टानिया के बारे में बुरा नहीं कहा था। हममें से किसी आदमी का साहस नहीं होता था कि उसे हाथ से छुए। हमने कभी भी खुला मजाक उसके सामने नहीं किया था। संभवत: यह इस कारण था कि वह हमारे पास अधिक समय तक नहीं रुकती थी; टूटे तारे की तरह एक क्षण चमककर लुप्त हो जाती थी, या फिर वह इतनी छोटी, प्यारी और सुंदर थी कि अशिष्टतम व्यक्तियों तक के दिलों में अपने लिए आदर जाग्रत कर सकती थी। भले ही कठोर परिश्रम ने हमें आत्मशक्ति से वंचित कर दिया था, हम फिर भी पुरुष थे और पूजा के लिए कुछ-न-कुछ चाहते थे, टानिया से बढ़कर हमारे पास और कोई वस्तु नहीं थी। टानिया के अतिरिक्त और किसी ने भी हम तहखाने के निवासियों की ओर ध्यान नहीं दिया था, भले ही मकान में बीसियों व्यक्ति और रहते थे। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि हम सभी उसको अपना मानते थे—एक प्राणी, जो हमारे क्रेंडलों पर जी रहा था। हमने उसको गरम-गरम क्रेंडल देना अपना कर्तव्य मान लिया था। क्रेंडल हमारे देवता के लिए दैनिक भेंट बन गई—लगभग धार्मिक रीति, जो हमारे संबंधों को दिन-प्रतिदिन और पास लाती गई। केंरडलों के साथ हम उसे परामर्श भी देते थे; जैसे—उसे गरम कपड़े पहनने चाहिए, उसे सीढ़ियों पर दौड़कर चढ़ना नहीं चाहिए और न ही लकड़ी के भारी गट्ठर उठाने चाहिए। वह हमारे परामर्शों को सुनकर मुसकराती और हमारी बातों का जवाब हँसकर देती थी। कभी-कभी वह हमारे परामर्शों पर ध्यान नहीं देती थी, परंतु इससे हमें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता था। हमें तो केवल इतना ही दिखाने की चिंता थी कि हम उसका ध्यान रखते हैं।

वह कोई-न-कोई प्रार्थना लेकर हमारे पास बारंबार आती थी; जैसे—तहखाने का भारी दरवाजा खोलना या कुछ लकड़ी चीरना; और हम गर्व एवं खुशी से वह सबकुछ करते थे जो वह कहती थी।

जब कोई उससे कहता कि मेरी एकमात्र कमीज की मरम्मत कर दो तो वह नाक सिकोड़कर तिरस्कारपूर्वक कहती—''कैसा विचार है यह! जैसे मैं इसे कर सकती हूँ।''

हम उस साहसी लड़की पर हँसे और फिर कभी ऐसी माँग नहीं की। हम उसे प्यार करते थे, बस इतना कहना ही पर्याप्त है। एक आदमी अपना प्यार अन्य व्यक्ति पर प्रतिपादित करना चाहता है, भले ही वह कभी-कभी इसके प्यार को बिगाड़ देता है, दूषित कर देता है; भले ही इससे दूसरे का जीवन नष्ट हो जाए, क्योंकि वह प्रेमिका का आदर किए बिना उसे प्यार करता है। हम टानिया को प्यार किए बिना नहीं रह सकते थे, क्योंकि हमारे पास दूसरा कुछ करने के लिए था ही नहीं!

कभी-कभी हममें से एक हमारे इस व्यवहार की आलोचना करता था—

''हम लड़की को क्यों बिगाड़ें? आखिर उसमें कौन सी ऐसी बात है? हम उसके लिए काफी कष्ट उठाते हुए प्रतीत होते हैं।''

जिस आदमी ने ऐसा कहने का साहस किया, उसको धृष्टतापूर्वक चुप करा दिया गया। हमें किसी से प्यार करना था और हमने किसी को प्यार के लिए ढूँढ़ लिया था। जिस प्राणी को हम छब्बीस लोग प्यार करते थे, वह हर एक के लिए भिन्न और पवित्र होना चाहिए; जो इसका उल्लंघन करते हैं, वे हमारे शत्रु हैं। जिस वस्तु को हम प्यार करते थे, संभवत: वह अच्छी नहीं थी, परंतु हम छब्बीस थे, इसी कारण हमें ऐसी वस्तु चाहिए थी जो सबको प्यारी होती और जिसको सभी एक-सा आदर देते।

प्यार भी घृणा से कम सतानेवाला नहीं। संभवत: इसीलिए कुछ चतुर आदमी मानते हैं कि घृणा प्यार की अपेक्षा अधिक प्रशंसनीय है, परंतु यदि वे ऐसा मानते हैं तो हमारे पीछे क्यों भागते हैं?

क्रेंडल बेकरी के अतिरिक्त उसी मकान में हमारे मालिक की डबलरोटी की बेकरी भी थी, जिसको हमारे गड्ढे से एक दीवार जुदा करती थी। वहाँ रोटी बनाने-वाले चार नानबाई थे, परंतु वे यह सोचकर कि उनका काम हमारे काम से श्रेष्ठ है, हमारी अवहेलना करते थे। वे कभी भी हमसे मिलने नहीं आते थे और जब भी हम सेहन में मिलते, वे हमारा मजाक उड़ाते थे, इसलिए उनसे नहीं मिलते थे। कहीं हम मिल्क-रोल न चुरा लें, इसलिए हमारे मालिक ने हमें मना कर दिया था। हम रोटी बनानेवालों को पसंद नहीं करते थे, क्योंकि हम उनसे ईर्ष्या करते थे। उनका काम हमारे काम से आसान था। उनको हमसे अधिक पगार मिलती थी और उनका खान-पान भी अच्छा था। उनका कमरा हमारे कमरे से बड़ा था और उसमें रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था थी। वे सभी हृष्ट-पुष्ट और साफ-सुथरे व्यक्ति थे, जबकि हम दु:खी एवं त्रस्त जंतु थे। हममें से तीन साथी रोगग्रस्त थे—एक को चर्मरोग था, दूसरा गठिए के कारण पूर्णतया बेढंगा था। खाली समय और छुट्टियों में रोटी बनानेवाले चुस्त, छोटे-छोटे और आवाज करनेवाले जूते पहनते थे। कुछ के पास हवा से बजनेवाले हाथ के बाजे होते थे और वे पार्क में घूमने जाते थे, जबकि हम अपने गंदे चिथड़े और फटे जूते पहनते थे और पुलिसवाले हमें पार्क में जाने से रोकते थे। अत: कोई आश्चर्य नहीं कि हम रोटी बनानेवालों को पसंद नहीं करते थे।

एक दिन हमने सुना कि डबलरोटी बनानेवालों में से एक ने बहुत पी ली थी। मालिक ने उसे निकाल दिया और दूसरे को उसकी जगह काम पर रख लिया। उसकी प्रसिद्धि सिपाही के रूप में थी। वह साटन की वास्कट और सुनहरी घड़ी-चेन पहने घूमता था। हम इस अजूबे को देखने के लिए उत्सुक थे और सेहन में एक-दूसरे के बाद इस आशा से भागते रहे कि उसकी एक झलक मिल जाए।

वह स्वयं हमारे पास आया। उसने एक ठोकर मारकर दरवाजा खोला और दहलीज पर खड़े होकर मुसकराते हुए हमसे कहा, ''परमात्मा आपके साथ हो, शुभ प्रभात, साथियो!''

दरवाजे पर गहरे बादल की तरह आती हुई ठंडी हवा उसकी टाँगों से खेल रही थी। वह दहलीज पर खड़ा हमें देख रहा था और बल दी गईं उसकी साफ मूँछों के नीचे उसके पीले दाँत चमक रहे थे। वह वास्तव में नीले रंग की अजीब वास्कट पहने हुए था, जिसपर फूलों की चमकदार कशीदाकारी की हुई थी। उसके बटन लाल पत्थर के थे और चेन भी वहाँ थी।

वह सिपाही सुंदर था—लंबा, तगड़ा, गुलाबी गाल और आँखों में स्पष्ट दयालु आकृति। वह कलफ लगी टोपी पहने हुए था और उसके साफ एप्रेन के नीचे पॉलिश किए हुए चमकदार जूतों की नोक झाँक रही थी।

जब हमारे अपने नानबाई ने उससे दरवाजा बंद करने के लिए आदरपूर्वक प्रार्थना की, तब उसने उसे धीरे से बंद कर दिया और फिर मालिक के बारे में प्रश्न करने लगा। एक-दूसरे से होड़ लेते हुए हमने उसे बताया कि हमारा मालिक ऊनी बनियान की तरह है—दुष्ट, दुराचारी अर्थात् सबकुछ। वास्तव में, मालिक की बाबत जो कुछ भी कहने योग्य होता है, उसको यहाँ कहना असंभव है।

अपनी मूँछों पर ताव देते हुए सिपाही सुनता रहा और अपनी बड़ी एवं कोमल आँखों से हमारी तरफ देखता रहा।

''क्या यहाँ बहुत लड़कियाँ हैं?'' उसने एकाएक पूछा।

हममें से कुछ इसपर हँसने लगे; जबकि दूसरों ने मुँह बनाकर उसे बताया कि कुल मिलाकर नौ लड़कियाँ थीं।

''क्या तुम अपने अवसरों का लाभ उठाते हो?'' सिपाही ने एक आँख झपकाकर पूछा।

हम पुन: हँस दिए—नरम और व्याकुल हँसी। हममें से कई ने चाहा होगा कि सिपाही को विश्वास दिला दें कि हम भी उतने ही चतुर हैं जितना कि वह, परंतु हममें से कोई भी ऐसा नहीं करता और न ही कोई जानता था कि यह कैसे किया जाए। कुछ ने तो यह कहते हुए नरमी से स्वीकार भी कर लिया—

''हम इसे पसंद नहीं करते।''

''हाँ, यह वस्तुत: तुम्हारे लिए कठिन भी होगा।'' सिपाही ने ऊपर-नीचे देखते हुए विश्वास के साथ कहा, ''यह तुम्हारी श्रेणी में नहीं है, तुम्हारी कोई प्रतिष्ठा नहीं है—शक्ल-सूरत भी नहीं, यहाँ तक कि तुम्हारा कोई अस्तित्व ही नहीं है। औरत आदमी की आकृति का विशेष ध्यान रखती है। उसका शरीर अच्छा होना चाहिए और कपड़े भी अच्छी तरह पहने हों; फिर औरत आदमी की शक्ति की प्रशंसा करती है। उसका इस प्रकार का बाजू होना चाहिए, देखो!''

सिपाही ने अपना दायाँ हाथ जेब से निकाला और कोहनी तक नंगा करके हमें दिखाया। यह सफेद शक्तिशाली बाजू था, जिसपर चमकते हुए सुनहरे बाल थे।

''टाँग, छाती और हर अंग पुष्ट होना चाहिए और फिर अच्छा बनने के लिए कपड़े भी अच्छी तरह पहने हुए होने चाहिए। मुझे ही देख लो, सारी औरतें मुझसे प्यार करती हैं। उनको बुलाने के लिए मुझे अंगुली उठानी नहीं पड़ती और एक समय में पाँच अपने आपको मेरे सिर पर गिरा देती हैं।''

वह आटे के बोरे पर बैठ गया और हमें सुनाने लगा कि किस तरह औरतें उससे प्यार करती थीं और किस वीरता से वह उनसे व्यवहार करता था। अंतत: वह चला गया और जब दरवाजा चीं करके बंद हुआ तो हम सिपाही और उसकी कहानियों को सोचते देर तक मौन बैठे रहे; एकाएक हम सभी बोलने लगे और यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि हम सभी उसमें रुचि लेने लगे थे। कितना सीधा आदमी था! वह आया और हमसे बातचीत की। किसी ने भी आकर हमसे इस प्रकार मित्रतापूर्वक बात नहीं की थी। हमने उसकी बात की और बात की कशीदाकारी करनेवाली लड़कियों पर उसकी भावी विजय दर्ज की। वे लड़कियाँ बाहर निकलतीं तो हमसे आँख बचाकर चली जाती थीं या सीधी निकल जाती थीं; जैसे हम वहाँ थे ही नहीं। हमने कभी भी उनकी प्रशंसा करने का साहस नहीं किया, भले ही दरवाजे के बाहर या जब सर्दियों में अजीब कोट और टोपी पहने हमारी खिड़की के सामने से जाती थीं और गरमियों में कई रंगों के फूल लगे टोप और हाथों में छोटे छाते होते थे। फिर भी हम आपस में इन लड़कियों के बारे में इस ढंग से बातें करते थे कि यदि वे सुन लेतीं तो मारे शरम और घबराहट के पागल हो जातीं।

''मैं आशा करता हूँ कि वह हमारी टानिया को गुमराह नहीं करेगा!'' अचानक नानबाई ने चिंतित होते हुए कहा।

उसके शब्दों को सुनकर हममें से कोई नहीं बोला। टानिया के बारे में हम भूल गए थे। सिपाही ने उसे हमसे छिपा लिया था; जैसाकि उसके अपने सुंदर शरीर के बारे में हो। फिर झगड़ा शुरू हो गया। कुछ साथियों का कहना था कि टानिया अपने आप इतना नहीं गिरेगी, दूसरे कहते कि वह सिपाही को रोक नहीं सकेगी और एक तीसरे वर्ग का विचार था कि यदि सिपाही ने टानिया को तंग करना शुरू किया तो उसकी पसलियाँ तोड़ देंगे। अंत में हम इस निर्णय पर पहुँचे कि टानिया और सिपाही की ध्यानपूर्वक चौकसी की जाए और लड़की को उसके प्रति सचेत कर दिया जाए। इस निर्णय ने झगड़े को समाप्त कर दिया।

एक महीना व्यतीत हो गया। सिपाही ने डबलरोटी बनाई, कशीदाकारी करनेवाली लड़कियों के साथ घूमा, हमसे मिलने आया, परंतु कभी भी लड़कियों पर अपनी विजय की बात नहीं की; वह केवल अपनी मूँछों को बल देता और होंठों को चाटता था। टानिया हमारे पास हर प्रात: 'छोटे क्रेंडलों' के लिए आती थी और हमारे साथ उसी तरह मधुर, प्रसन्न और मित्रवत् रहती। हमने उससे सिपाही की बाबत बात करने का प्रयास किया। वह उसे 'रंगीन चश्मा चढ़ा बछड़ा' कहती थी तथा और भी कई नामों से बुलाती थी। इससे हमारा डर दूर हो गया।

यह देखकर कि कशीदाकारी करनेवाली लड़कियाँ उसके पीछे कैसे दौड़ती थीं, हमें टानिया पर गर्व था। सिपाही के प्रति टानिया के व्यवहार ने हमारा सिर ऊँचा कर दिया था और हम, जो उसके इस व्यवहार के लिए जिम्मेदार थे, ने सिपाही के साथ अपने संबंधों को घृणा की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया तथा टानिया को और अधिक प्यार करने लगे; बल्कि और अधिक प्रसन्नता से। अच्छे स्वभाव के साथ प्रात:काल उसका अभिनंदन करने लगे।

एक दिन सिपाही खूब शराब पीकर हमारे पास आया और बैठकर हँसने लगा। जब हमने पूछा कि उसकी हँसी का कारण क्या है तो कहने लगा—

''मेरे लिए दो लड़कियाँ आपस में लड़ने लगीं। वे एक-दूसरी पर कैसे झपटीं...हा, हा...एक ने दूसरी को बालों से पकड़कर रास्ते में पटक दिया और उसके ऊपर बैठ गई...हा, हा, हा! उन्होंने एक-दूसरे को खरोंचा और फाड़ दिया...तुम मर गए होते! वे ठीक ढंग से क्यों नहीं लड़ सकतीं? वे हमेशा खरोंचती और खींचती क्यों हैं?''

वह बेंच पर बैठ गया—पुष्ट, साफ और प्रसन्न। वह वहाँ बैठा और हँसा। हम चुप थे और उस समय उसे पसंद नहीं कर रहे थे।

''विश्वास पाने के लिए औरतें मेरे पीछे किस तरह भागती हैं! यह वस्तुत: खिलवाड़ है, मुझे केवल आँख झपकाना होता है और वे आ जाती हैं—दुष्ट!''

उसने चमकते बालोंवाले अपने हाथ ऊपर उठाए और अपने घुटनों पर दे मारे। उसने हमारी तरफ ऐसे आश्चर्यजनक हाव-भाव से देखा जैसे वह स्वयं अपनी उस सफलता की प्रसन्नता पर हैरान हो, जो उसे औरतों से मिली थी। उसके मोटे गुलाबी गाल संतुष्टि से चमक रहे थे और वह अपने होंठों को चाटता रहा।

हमारे नानबाई ने बेलचे को क्रोध से भट्ठी में रगड़ा और एकाएक उपहास करते हुए बोला, ''छोटे पौधे को उखाड़ने में ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ता, परंतु जरा देवदार का बड़ा वृक्ष काटने का प्रयास करो तो जानें!''

''यह मुझे कह रहे हो?'' सिपाही ने पूछा।

''हाँ, तुम्हें।''

''तुम्हारा मतलब क्या है?''

''कुछ नहीं, यह मुँह से निकल गया।''

''परंतु जरा रुको। किसके बारे में कहते हो? कौन सा देवदार?''

हमारे नानबाई ने उत्तर नहीं दिया और अपना बेलचा शीघ्रता से चलाता रहा। वह उबले हुए क्रेंडल को अंदर रखता और पके हुए क्रेंडलों को बाहर निकालता तथा जोर से फर्श पर फेंकता था, जहाँ लड़के उनको रस्सी से आपस में बाँधने में व्यस्त थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वह सिपाही और उसके साथ हुई बातचीत को भूल गया था। किसी तरह सिपाही एकाएक बेचैन हो गया। वह उठा और भट्ठी के पास गया। दस्ते को नानबाई वेग से हवा में घुमा रहा था। वह (सिपाही) अपने आपको बेलचे के दस्ते की चोट से कठिनाई से बचा पाया।

''परंतु तुम्हें अपना मतलब बताना होगा क्योंकि इससे मुझे चोट पहुँची है। कोई भी अकेली लड़की मेरा प्रतिकार नहीं कर सकती, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ। तुम इतनी अपमानजनक बातें करते हो!''

उसे वास्तव में चोट लगी थी। हो सकता था कि उसके पास केवल औरतों को बहकाने के अतिरिक्त और कोई ऐसा काम न हो जिसपर वह गर्व कर सके। संभवत: उसमें इसी बात के लिए जीवित रहने की क्षमता हो, केवल एक ही वस्तु, जिसके कारण वह अपने आपको आदमी समझता था। कुछ आदमी ऐसे होते हैं जो जीवन में सर्वोत्तम और उच्चतम को आत्मा या शरीर का एक प्रकार का रोग समझते हैं और जिसको साथ लेकर अपना सारा जीवन व्यतीत करते हैं; अपने साथियों से इसकी शिकायत करते हैं और शिकायत से उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उनका यही एकमात्र ढंग है, जिससे वे अपने साथियों की सहानुभूति प्राप्त करते हैं, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। उनके इस रोग को दूर करने के लिए उपचार किया जाए तो वे नाराज हो जाते हैं, क्योंकि उनसे वह चीज ले ली जाती है जिनपर उनका जीवन आधारित है और इस प्रकार वे खाली-से हो जाते हैं। कभी-कभी एक आदमी का जीवन इतना खाली हो जाता है कि वह बुराई को अनैच्छिक महत्त्व देने लग जाता है, उसे ही अपना लेता है और कहता है कि आदमी खालीपन में ही बुरा बनता है।

सिपाही क्रोधित हुआ और पुन: ऊँची आवाज में नानबाई से माँग की—

''तुम्हें बताना होगा कि तुम्हारा क्या मतलब है?''

''बताऊँ क्या?'' नानबाई जल्दी से मुड़ा।

''ठीक है, बताओ।''

''क्या तुम टानिया को जानते हो?''

''हाँ, तो इससे क्या?''

''ठीक है, उसपर प्रयत्न करो। बस, इतना ही।''

''मैं?''

''हाँ, तुम।''

''फूह, यह तो आँखें झपकाने की तरह आसान काम है।''

''देखेंगे हम।''

''तुम देखोगे? हा, हा, हा!''

''वह तुम्हें वापस भेज देगी।''

''मुझे एक महीना दो।''

''तुम कितने घमंडी हो, सिपाही!''

''तुम मुझे दो सप्ताह दो! मैं तुम्हें दिखा दूँगा; किसी-न-किसी तरह से; यह टानिया है कौन? फूह!''

''एक तरफ हो जाओ, मेरा हाथ रोक रहे हो।''

''दो सप्ताह...बस, हो गया समझो। तुम...।''

''एक तरफ हो जाओ, मैं कह रहा हूँ।''

हमारे नानबाई को एकाएक तीव्र कोप का दौरा पड़ा और उसने बेलचा हवा में घुमाया। सिपाही विस्मित होकर शीघ्र ही उससे जरा दूर हट गया। उसने क्षण भर के लिए चुप होकर हमें देखा और फिर शांति से ईर्ष्यापूर्वक कहा, ''बहुत अच्छा!'' तत्पश्चात् वह चला गया।

किसी ने नानबाई को पुकारा—

''यह गंदा काम है, जो तुमने शुरू किया है, पागल!''

''तुम अपना काम करो!'' नानबाई ने गुस्से में उत्तर दिया।

हमने महसूस किया कि सिपाही को बात चुभ गई थी और कि टानिया को भय की धमकी दी गई थी। इसके होते हुए भी हम आनंद से, जलते हुए कौतूहल से यह जानने के लिए जकड़े गए कि क्या होगा! क्या टानिया सिपाही का प्रतिकार करेगी? और सभी भरोसे से बोले, ''टानिया जरूर प्रतिकार करेगी। टानिया को लेने के लिए केवल खाली हाथों से कुछ और ज्यादा की जरूरत होगी।''

हमारे अंदर अपनी देवी की शक्ति को परखने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई। हमने एक-दूसरे को मनाने की भरसक कोशिश की कि हमारी देवी इस अग्निपरीक्षा में अवश्य अपराजित सिद्ध होगी। अब हमें अनुभव हुआ कि हमने सिपाही को पर्याप्त रूप से नहीं उकसाया था। हमें डर था कि संभवत: वह इस झगड़े को भूल जाएगा और निश्चय किया कि उसके अहंकार को और आघात पहुँचाई जाए। उस दिन विशेषकर हमारा मन खिंचा–खिंचा और उद्विग्न हो गया। हम सारा दिन एक दूसरे से वाद-विवाद करते रहे। ऐसा प्रतीत होता था कि हमारे मस्तिष्क स्पष्ट हो गए हों और हमारे पास करने के लिए अधिक-से-अधिक बातें हों। ऐसा लगता था कि हम पिशाच से कोई खेल खेल रहे थे और टानिया हमारे लिए दाँव थी। जब हमने डबलरोटी बनानेवालों से सुना कि सिपाही ने टानिया से मेल-मिलाप शुरू कर दिया है तो हमारे अंदर पीड़ायुक्त मीठी सनसनी दौड़ गई और हमें जीवन इतना रुचिकर लगा कि हमें यह भी पता नहीं चला कि हमारी सामान्य उत्तेजना का लाभ उठाकर हमारे मालिक ने गूँधे आटे के चौदह और पेड़े कब हमारे दिन के काम में जोड़ दिए। सारे दिन टानिया के नाम ने हमारे होंठों को नहीं छोड़ा और प्रति सुबह हमने अजीब अधीरता से उसकी प्रतीक्षा की। कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह सीधी हमारे कमरे में आना चाहती थी—और वह पुरानी टानिया न होकर हमें कोई अजीब और नई लगती थी।

लेकिन हमने अपने नए झगड़े के बारे में उसको नहीं बताया। हमने उससे कोई प्रश्न नहीं पूछा और पहले की तरह ही उससे दयालुता और गंभीरता से व्यवहार किया, परंतु उसके बारे में हमारी सोच में कुछ नई और अजीब चीज आ गई थी; और यह नई चीज थी—मर्मभेदी हैरानी—तेज और ठंडी, लोहे के चाकू की तरह!

''समय हो गया, साथियो!'' एक प्रात:काल हमारे नानबाई ने अपने काम को रोकते हुए घोषणा की।

उसके याद कराए बिना हम जानते थे, फिर भी हम सबने अपना-अपना काम शुरू कर दिया।

''उसको अच्छी तरह से देखो, वह शीघ्र ही आ रही है!'' हमारे नानबाई ने कहना जारी रखा। तभी किसी ने शोकपूर्ण आवाज में कहा, ''मानो तुम उसे अपनी आँखों से देख रहे हो।''

और एक बार फिर हमने शोर-शराबेवाली बात शुरू कर दी। आज हमें जानना था कि अंतत: वह बरतन कितना शुद्ध है जिसमें हमने अपनी सारी अच्छाई उड़ेल दी थी। आज हमने पहली बार महसूस किया कि वस्तुत: हम एक बड़ा खेल खेल रहे थे और शुद्धता की यह परीक्षा हमें अपनी देवी से सर्वथा वंचित करके ही समाप्त होगी। हम सुन चुके थे कि सारे पखवाड़े सिपाही किस प्रकार लगातार टानिया का पीछा करता रहा था; परंतु हममें से किसी ने भी उससे पूछने के लिए नहीं सोचा था कि उसके प्रति उसका व्यवहार कैसा है; वह हर प्रात:काल क्रेंडल लेने के लिए आती रही और हमारे लिए पहले की तरह थी।

आज के दिन भी हमने उसकी आवाज शीघ्र सुनी—

''कैदियो, मैं आ गई हूँ।''

हमने दरवाजा खोल दिया। जब वह अंदर आई तो अपनी सामान्य रीति के विरुद्ध हमने चुप रहकर उसका अभिनंदन किया। हमारी सबकी आँखें उसपर गड़ी थीं। हम नहीं जानते थे कि उससे क्या कहें या क्या पूछें। हम काली, मौन भीड़ के रूप में उसके सामने खड़े थे। वह इस अनजाने स्वागत से स्पष्टतया हैरान हुई। हमने उसे एकाएक पीला पड़ते देखा; वह अशांत हो गई। अपना स्थान बदलते हुए उसने उदास स्वर में पूछा, ''तुम इस तरह

क्यों हो?''

''और तुम?'' नानबाई ने बिना आँखें हटाए गंभीरता से पूछा।

''मेरे साथ क्या हुआ?''

''कुछ नहीं।''

''तो ठीक है, जल्दी करो और मुझे क्रेंडल दो।''

पहले कभी भी उसने हमारे साथ जल्दबाजी नहीं की थी।

''तुम्हारे पास काफी समय है!'' बिना अपने स्थान से हिले या अपनी आँखें हटाए नानबाई ने कहा।

वह एकाएक मुड़ी और दरवाजे से गायब हो गई।

नानबाई ने अपना बेलचा संभाला और शांत भाव से बोला; जैसे वह भट्ठी से बात कर रहा हो।

''मेरा अनुमान है, यह हो गया है! यह दुराचारी सिपाही, दुष्ट व्यक्ति...!''

बकरियों के झुंड की तरह, एक-दूसरे को धकेलते, बिना काम किए हम मेज पर चुपचाप बैठ गए। जल्दी ही एक ने कहना शुरू किया, ''यह असंभव है।''

''चुप रहो!'' नानबाई चिल्लाया।

हम जानते थे कि वह सामान्य बुद्धिवाला है और हमसे चतुर है। हमने उसके चिल्लाने को सिपाही की विजय का चिह्न समझा। हम दु:खी और अशांत थे।

खाने के समय बारह बजे सिपाही अंदर आया। वह सामान्य रूप से साफ-सुथरा और अच्छी पोशाक पहने हुए था। उसने सामान्य ढंग से हमें देखा, जिसने हमें कष्ट पहुँचाया।

''ठीक है, मेरे भद्र पुरुषो, तुम देखना चाहोगे कि एक सिपाही क्या कर सकता है? रास्ते में जाओ और छिद्र से झाँको...समझते हो क्या?''

हम एक-दूसरे के ऊपर गिरते गए और अपने चेहरे उस दीवार के छिद्र पर जमा दिए जो बाहरी दालान में जाती थी। हमें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। जल्दी ही तेज कदमों के साथ और चिंतित चेहरा लिये पिघली हुई बर्फ और मिट्टी से बनी पोखरी को लाँघकर सेहन में से होती हुई टानिया आई। वह तहखाने के दरवाजे में लुप्त हो गई। उसके तुरंत बाद धीरे-धीरे गुनगुनाता हुआ सिपाही आया और उसका पीछा किया। उसके हाथ उसकी जेबों में थे और मूँछें काँप रही थीं।

वर्षा हो रही थी। हमने बूँदों को पोखरियों में गिरते और गिरकर गोल चक्र बनाते देखा।

यह नमीवाला, भूरा, भोथरा और उदासीन दिन था। छतों पर अभी भी बर्फ जमी हुई थी और भूमि पर कीचड़ के काले टुकड़े पड़े थे। छतों की बर्फ भी नम, भूरी और गंदी थी। वर्षा एक ही आवाज में धीरे-धीरे हो रही थी। प्रतीक्षा ठंडी और थकानेवाली थी।

तहखाने से पहले निकलनेवाला सिपाही था। वह सेहन के साथ-साथ धीरे-धीरे चला। उसकी मूँछें काँप रही थीं और उसके हाथ जेबों में थे जैसे वे हमेशा देखे जाते थे।

फिर टानिया बाहर निकली। उसकी आँखें मारे खुशी के चमक रही थीं और उसके होंठ मुसकराहट से फैल गए थे। वह लड़खड़ाते कदमों से इधर-उधर झूमकर ऐसे चली जैसे नींद में चल रही हो।

यह हमारी सहनशक्ति से बाहर था। हम तुरंत दरवाजे से सेहन में आए और उसपर बुरी तरह से फुँफकारना और चिल्लाना शुरू कर दिया।

जब उसने हमें देखा तो चलने लग गई और फिर इस तरह से रुकी जैसे उसपर बिजली गिर पड़ी हो। उसके पाँव

के नीचे कीचड़ था। हमने उसे घेर लिया और बिना रुके क्रोध से अपने गंदे और निर्लज्ज शब्दों में गालियाँ देने लगे।

हमने इसकी बाबत अधिक शोर नहीं मचाया, क्योंकि वह हमसे भाग नहीं सकती थी और हमें भी जल्दी नहीं थी। हमने केवल उसे घेरकर उसकी दिल खोलकर हँसी उड़ाई। मैं नहीं कह सकता कि हमने उसे पीटा क्यों नहीं! वह अपना सिर इधर-उधर हिलाती और अपमान को सहती हमारे बीच खड़ी रही। हम अपने गंदे और विषैले शब्दों में उसे गालियाँ देते रहे।

उसके गालों का रंग उड़ गया, उसकी नीली आँखें, जो क्षण भर पहले प्रसन्न थीं, फैलकर खुल गईं। उसकी साँस जल्दी-जल्दी और तेज चलने लगी तथा होंठ काँपने लगे।

उसे घेरकर हमने इस प्रकार दंड दिया जैसे उसने हमें लूट लिया हो। जो भी हममें अच्छाई थी, हम उसपर लुटा चुके थे, भले ही वह सब एक भिखारी की रोटी से अधिक नहीं था; फिर भी हम छब्बीस थे और वह अकेली थी, इसलिए भी हमने उसके दोष को देखते हुए अधिक यातना के बारे में नहीं सोचा था। जब वह आँखें फाड़े घूर रही थी और सूखे पत्ते की तरह हिल रही थी तो हमने उसे बुरी तरह से अपमानित किया। हम उसपर हँसे, गरजे और गुर्राए। कहीं से और लोग भी हमारे साथ मिल गए। एक आदमी ने टानिया की कमीज के बाजू को पकड़कर खींचा।

एकाएक उसकी आँखें चमकीं। उसने धीरे से अपने बाजू ऊपर उठाए, बालों को सँवारा और फिर धीरे तथा शांत भाव से सीधे हमारे चेहरों को देखते हुए बोली, ''तुम अभागे कैदी!''

और सीधी हमारी ओर आई, मानो हम उसे घेरे खड़े न हों। किसी ने भी उसका रास्ता नहीं रोका, क्योंकि उसको जाने देने के लिए हम एक तरफ हट गए थे।

बिना अपना सिर मोड़े हमारे बीच से जाती हुई वह अवर्णनीय घृणा से ऊँची आवाज में बोली, ''तुम जंगली जानवर हो...पृथ्वी की गंदगी!''

और वह चली गई।

हम भूरे और बिना धूप के आकाश के तले वर्षा और कीचड़ में सेहन में ही रह गए।

जल्दी ही हम अपने पत्थरों के गड्ढे में लौट आए। सूर्य पहले की तरह खिड़की से कभी नहीं झाँका और टानिया फिर कभी हमारे पास नहीं आई।

❑

विकृत संबंध

—यूजेने एन. चिरीकोव

मीशा ने हठी चुप्पी साध रखी थी। वह किसी प्रकार भी बोलना नहीं चाहता था। जब उसको रात के खाने पर बुलाया गया तो उसने साफ इनकार कर दिया—

''मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।''

जब उसे चाय के लिए बुलाया गया तो उसने शांत भाव से, परंतु तेज आवाज में उत्तर दिया, ''तुम चाय पीयो या कॉफी अथवा जो कुछ भी है, परंतु मुझे अकेला छोड़ दो; मुझे कुछ नहीं चाहिए।''

मीशा की सबसे बड़ी बहन यह उत्तर सुनकर अप्राकृतिक ऊँची हँसी की घड़घड़ाहट से फूटकर बोली, ''तुम सोचते हो कि इसकी कोई परवाह करता है? यदि तुम चाहो तो खाना-पीना बिलकुल छोड़ सकते हो; हम इसके लिए रोएँगे नहीं।''

इतना कहने के बाद वह खुशी से फड़फड़ाती दरवाजे के पीछे लुप्त हो गई। मीशा ने उसके अत्युक्त एवं असावधान उत्तर के बारे में और खुशी से बाहर जाने की बाबत अपने कारण के प्रति विशेष सहानुभूति रखते हुए विचार किया। वस्तुतः वह यह बताने के लिए बहाना बना रहा था कि पापा और मम्मी इस बात की चिंता नहीं करते थे कि उसने खाना नहीं खाया या चाय नहीं ली। वास्तव में सभी इसलिए चिंतित थे और नहीं जानते थे कि किस प्रकार उसे खाना और चाय लेने के लिए राजी किया जाए। उनको चिंता करने दो, यह उनका अपना दोष है। प्राचीन रोमन भाषा में केवल एक नंबर कम लाना इतना भयंकर नहीं था कि हर एक के सामने उसका अपमान किया जाए और उसे बताया जाए कि वह तो मोची बनने के योग्य है। जहाँ तक मोची बनने का प्रश्न है, ठीक है, उसे कोई परवाह नहीं, परंतु फिर भी वह खाना नहीं खाएगा।

मीशा ड्राइंगरूम में बैठकर एक पत्रिका पढ़ रहा था और साथ ही साथवाले कमरे में हो रही बातचीत को भी सुनता जा रहा था। निस्संदेह वे इसके बारे में ही बातचीत कर रहे थे कि यह न खाता है और न पीता है। अंततः यह चतुर लड़का है।

''माइकल कहाँ है? वह अभी तक नाराज है क्या?'' उसने अपनी मम्मी को कहते सुना।

''हाँ, वह नाराज है।'' नीना ने धीरे से और जानबूझकर कहा।

''हमें कुछ-न-कुछ उसे देना चाहिए।'' उसने पिता की गहरी आवाज सुनी।

''कुछ-न-कुछ देना चाहिए, आह, जैसे मुझे जरूरत हो।'' मीशा ने अपने आपसे कहा, ''मोची को देने के लिए कुछ-न-कुछ की क्या जरूरत है?''

''माइकल!'' उसके पिता ने आवाज दी।

माइकल ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके पिता ने पुनः आवाज दी।

''आप लोग क्या चाहते हैं?'' मीशा ने अपनी पत्रिका पर झुकते हुए कठोर वाणी में उत्तर दिया।

''यहाँ आओ, उदासी और नाराजगी छोड़ो।''

''मैं उदास नहीं हूँ, पढ़ रहा हूँ। एक मोची के लिए मेज पर बैठना उचित नहीं लगता!''

''बुद्धिहीन मनुष्य!''

''ठीक है फिर, मैं बुद्धिहीन ही सही।'' मीशा ऊँची आवाज में फूट पड़ा और हौले से कहने लगा—''तुम बुद्धिमान से सुनोगे!''

''वह नाराज है।'' उसकी बहन ने ऊँचे स्वर में कहा।

''तुम चुप रहो, मूर्ख छोटी लड़की!'' मीशा ने कानाफूसी की और अपनी बहन के प्रति तीखी घृणा से भर गया। उसने बदला लेना चाहा। यदि उसका पिता वहाँ न होता...उसको बीच में टाँग अड़ाने की क्या जरूरत है? किसी ने उसकी राय नहीं माँगी, वह गुस्से से बोला। उसने पत्रिका को मेज पर फेंक दिया और जेब में से ढूँढ़ते हुए एक पेंसिल निकाली। एक चित्र में दिखाया गया था कि एक युवक बेंच के नीचे था और एक युवती पास खड़ी थी—मूल सूत्र बता रहा था कि वह बेंच के नीचे लड़की का नाम उकेर रहा था, जिसको बेंच के ऊपर हर तरफ पहले ही उकेरा गया था—इसने उसके ऊपर लिखा—'यह नीना और बोलोडका पैटुशकोव हैं—दो बड़े मूर्ख!' वह पृष्ठ खोलकर उसने पत्रिका रख दी, ताकि हर कोई उसको देख सके। फिर वह अपने कमरे में चला गया। नीना की टोपी मेज पर पड़ी देखकर उसने उसको फर्श पर गिरा दिया।

''यह कूड़ा-करकट मैं अपनी मेज पर नहीं रहने दूँगा!'' उसने चिल्लाकर कहा, भले ही सुननेवाला वहाँ कोई नहीं था। मीशा ने हर एक में शत्रुता का भाव महसूस किया। उसको प्रतीत हुआ कि घर दो वैरी वर्गों में बँट गया था, जिसमें से एक वह स्वयं और दूसरे में बाकी सारा परिवार। अत: जब घर की नौकरानी ने कमरे में आकर उसे संबोधित किया तो उसकी तरफ वहशी ढंग से मुड़ा।

''माइकल पैवलिच!''

''निकल जाओ!''

''कोई तुम्हें मिलने आया है।''

''चली जाओ, मैं तुम्हें कह रहा हूँ!''

''तुमने खाना नहीं खाया, इसीलिए नाराज हो।''

मीशा अच्छी तरह से जानता था कि नौकरानी को उसके पास भेजा गया है। उसे खेद हुआ और वह इसे सुधारना चाहता था। फिर भी वह बच्चा नहीं था। उन्हें चिंता करने दो। वास्तव में उसे भूख लगी थी। क्या वह नीचे रसोई में जाए? नहीं, यह उसके योग्य नहीं था। बावरची नौकरानी को बता देगा और वह उसके माता-पिता को बता देगी, फिर वे शांत हो जाएँगे।

यह अच्छा रहेगा कि भूख सहन की जाए। यदि उसका पिता अथवा माता आकर कहें—''नाराज मत हो, मीशा। तुम जानते हो कि यदि खाओगे-पीयोगे नहीं तो बीमार पड़ जाओगे और वह हमें घबराहट में डाल देगा। हमें खेद है कि ऐसा हो गया; यह आगे से नहीं होगा।'' तब मीशा मान जाता और उसी समय खानेवाले कमरे में चला जाता, वस्तुत: उन्होंने उसके लिए कुछ-न-कुछ महसूस किया भी। उस दिन चुकंदर का सूप बना था। जो लार पैदा हो गई थी, मीशा ने निगल ली और दरवाजे की ओर जाते हुए उसने अपनी मम्मी के पैरों की आहट सुनी। पिता वस्तुत: नहीं आएगा, संभव है कि मम्मी आ जाए और कहे कि उसे खेद है!

परंतु मम्मी नहीं आई। वह भूखा था। बजाय इसके कि कोई प्रत्याशित प्रतिनिधि आए, सुंदर शिकारी कुत्ता फालस्टाफ दरवाजे पर नजर आया। वह अपने हलके नपे-तुले कदमों से अंदर आया; मीशा को सूँघा और अपनी दुम हिलाई। फालस्टाफ पापा का प्रिय था और उसका स्थान पापा के पढ़नेवाले कमरे में मेज के नीचे था। वह यहाँ क्यों आया? वह अपने मालिक के पास जाकर दुम हिलाए। वह इतना खा गया था कि लगा—पेट अब फटा, तब फटा!

''निकल जाओ!'' मीशा ने एकाएक गुस्से में कुत्ते को ठोकर मारते हुए धीरे से कहा। वह थोड़ा चीखा, फिर दुम हिलाने लग गया; जैसे कुछ कष्ट हो। फिर दुम हिलाकर चला गया। मीशा भूखा था।

काफी देर तक वह अपने बाएँ हाथ की अंगुलियों को अपनी स्थिति का ध्यान रखते हुए गंभीरता से चूसता रहा। अंतत: उसे बहुत ही शानदार खयाल सूझा, जो उसको शत्रु से समझौता करने से मुक्त कर देगा। इवानोव, जो अपने ही सुझाव का मालिक था, ने एक बार अपने भाई की अलजबरे की पुस्तक बेची थी और उससे मिले पैसों से एक चाकू खरीदा था।

मीशा भी पिछले वर्ष की अपनी पुस्तकें बेचकर पेस्ट्री बनानेवाले की दुकान से कचौड़ी और पेस्ट्री खरीदेगा। वह दूध की दुकान पर भी जा सकेगा और ये लोग यहाँ चिंता करते रहेंगे। ठीक है, इन्हें चिंता करने दो, यह इनका अपना दोष था। आनेवाले समय में ये मेरे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।

अपनी पुस्तकों की अलमारी ढूँढ़ते हुए मीशा ने एक पतली सी पुस्तक निकाली—'यह तो मुझे चाहिए, परंतु इतनी जल्दी नहीं। तब तक ये भूल जाएँगे कि यह पुस्तक मेरे पास थी और मुझे नई ले देंगे।' मीशा ने विचार किया और अंतत: उसे बेचने का निर्णय ले लिया।

वह खानेवाले कमरे से होकर जाना नहीं चाहता था, वे सब वहीं थे। वे सोचेंगे कि यह समझौते के लिए बहाना ढूँढ़ रहा है...वह नहीं। वह बिना दरवाजे के भी काम चला सकता था।

पुस्तक को सीने से लगाए वह खिड़की पर चढ़ा और बाजार की ओर चल दिया। शाम हो रही थी—दुकानें जल्दी ही बंद हो जाएँगी—जल्दी करना जरूरी होगा। मीशा हवा की भाँति उठा। उसने आधे बने मकानों में से होकर छोटे रास्ते से जाना चाहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसके जूते में स्पष्ट नजर आने-वाला छिद्र हो गया। किसी दूसरे अवसर पर ऐसी दुर्घटना से वह घबरा जाता, क्योंकि जूते नए थे और उसको इस चेतावनी के साथ दिए गए थे कि वह इनका ध्यान रखेगा—अब उसने ध्यान नहीं रखा। उन्हें नए खरीदने दो। वस्तुत: वे कहेंगे कि इसको मोची की तरह नंगे पाँव घूमने दो, परंतु वह जानता था कि वे खरीद देंगे। यह कितना अपमानजनक होगा कि एक वकील का बेटा फटे जूतों में देखा जाए! चिंता की कोई बात नहीं, वे खरीद देंगे। अंत में बाजार आ गया। वह प्रफुल्लित और उत्साहित था। क्या शोरगुल था—चीखते, चिल्लाते, झगड़ते...पूर्ण उपद्रव!

''गरम-गरम कचौरियाँ ऽऽ!'' एक भोंडे चेहरे और तेल लगी नाकवाला देहाती अपनी अनुस्वारसहित आवाज में चिल्लाया। उसने मीशा की ओर देखा और पूछा, ''तुम कचौरी लेना चाहते हो?''

''यह किस चीज की बनी है?'' मीशा ने पूछा।

''मुझसे लो, बेटा, उसकी ठंडी हैं और मेरी गरम।'' गरम कचौरियों से भरे मिट्टी के बरतन को थामे खड़ी देहाती औरत चिल्लाई।

''मैं अभी थोड़ी देर में कुछ खरीदूँगा। अभी मेरे पास समय नहीं है।'' गंदी भीड़ को चीरते हुए और पुरानी दुकानों की तरफ जाते हुए मीशा ने कहा। अत्यंत घबराहट में वह बूढ़े दुकानदार के पास पहुँचा, जो व्यवस्थित ढंग से अपनी दुकान के काउंटर के पास खड़ा था—वह दुकानदार कम और प्राध्यापक अधिक नजर आता था। स्कूली लड़के को देखते हुए उसने अपने आपको काउंटर के पीछे छिपा लिया और पुस्तक खोलकर पढ़ने का बहाना किया।

''क्या तुम पुस्तक खरीदते हो?'' मीशा ने उससे पूछा।

''बेचने के लिए तुम्हारे पास क्या है?''

''एशिया, अफ्रीका और अमेरिका, बिलकुल नई।'' मीशा ने कहा।

''स्मीरोव की?''

''हाँ।''

''यदि यूरोप होता तो मैं खरीद लेता, यह तो मेरे पास पहले से ही है, '' दुकानदार ने मीशा से पुस्तक लेते हुए अनिच्छा से कहा, ''यह पुराना संस्करण है, मैं तुम्हें इसके लिए दस कोपेक दे दूँगा।'' उसने पुस्तक के पन्ने पलटते हुए आगे कहा।

''मुझे कहा गया है कि बीस कोपेक से कम में न दूँ।'' मीशा ने अविश्वास से कहा।

दुकानदार ने जम्हाई ली और पुस्तक मीशा को लौटा दी।

''चलो, पंद्रह दे दो, बिलकुल नई है?''

दुकानदार ने कोई उत्तर नहीं दिया।

''बहुत अच्छा, फिर मैं दस ही ले लूँगा।''

''और तुम अच्छा सौदा कर रहे हो।'' दुकानदार ने कहा; उसने जम्हाई ली, दस कोपेक काउंटर पर रखे और पुस्तक को असावधानी से फेंक दिया। फिर वह अपनी पुस्तक की ओर मुड़ा और उसे पढ़ने लग गया।

''संभवत: मुझे यूरोप भी लाना चाहिए!'' पैसों को जेब में डालते हुए मीशा ने कहा।

''यदि ऐसा ही है तो ले आओ। किसी दूसरी पुस्तक के दस कोपेक नहीं मिलेंगे। अपने सारे मित्रों को भेजो। मैं औरों से अच्छी कीमत देता हूँ।''

''मैं भेजूँगा उन्हें।''

मीशा दुकान से बाहर आया और दूसरी दुकानों पर खानेवाली चीजों का निरीक्षण करने लगा। इसके पूर्व कि वह कचौरियाँ ले, उसका मन हलवा और खसखस के लिए ललचाया। उसने कुल तीन कोपेक का खरीदा और बड़े मजे से खाया; फिर वह कचौरीवाली औरत के पास गया।

''यह किस चीज की है?''

''खुंबी, मांस और गाजर की। कितने की दूँ?''

''पाँच कोपेक की दो। मुझे गाजर पसंद नहीं है। एक खुंबी की और एक मांस की कचौरी दो।''

दो कचौरियाँ खाने के बाद उसे प्यास लगी। बाकी बचे दो कोपेक से उसने जौ के लाल जूस के दो मग खरीदे। वह दूसरा मग कठिनाई से समाप्त कर सका। यह मलिन और बहुत ही मीठा था; फिर भी उसे छोड़ना करुणा थी।

''ओफ!'' मीशा ने दूसरा मग कठिनाई से खत्म करते हुए कहा।

''क्या बात है? चढ़ गई है क्या?'' दुकानदार ने शोखी से पूछा और अपनी संगीतमयी आवाज में चिल्लाता रहा—''मीठा-ताजा जूस।''

जब मीशा घर आया तो उसने मेज पर ठंडे मांस की प्लेट, कुछ डबल रोटी, दूध का एक गिलास और हलकी रोटी की तीन टिकियों को रखे देखा। जिस चीज ने उसे ललचाया वे हलकी रोटी की टिकियाँ थीं, जिनमें उसकी बड़ी रुचि थी, परंतु उसका अहंकार उसे इनको खाने नहीं देगा। यदि उन्हें याद न रहे कि उन्होंने दो टिकिया रखी थीं या तीन, तो वह एक खा लेगा। उसने ध्यानपूर्वक तीनों का किनारा काटा और खा गया। उसने दूध का भी आचमन किया। वह बहुत अच्छा था, परंतु नहीं, वह और अधिक नहीं लेगा।

जौ का लाल जूस वास्तव में उसे चढ़ गया था और हलवे, खसखस, खुंबी और गंदे मांस की कचौरियों ने उसके पेट में गड़बड़ी कर दी।

''फू...भयानक!'' उसने गुस्से में पुकारा और रह-रहकर फर्श पर थूकता रहा।

''तुम कहाँ चले गए थे?'' नीना ने दरवाजे पर आकर पूछा।

''यह मेरा मामला है। मैं तो नहीं पूछता कि तुम कहाँ घूमती रहती हो!''

नीना ने पास से मेज की ओर देखा, जिसपर मीशा का खाना लगा हुआ था। वह छुआ नहीं गया था।

''मम्मी ने कहा है कि तुम्हें मांस खाना है।''

''मुझे खाने की जरूरत नहीं है। मैं बुद्धिहीन और मोची हूँ। तुम सभी वकील हो! इससे बुद्धिहीन को कोई अंतर नहीं पड़ता।''

''जैसा तुम चाहो।''

''ठीक है, तुम अपने पेटुशकोव के साथ घूमने जा सकती हो। मुझे अकेला छोड़ दो।''

''मूर्ख!'' उसने चहककर कहा और बाहर चली गई।

मीशा ने शत्रुओं के अवरोध का सामना करने के लिए अपने आपको योग्य समझा और खाने के प्रति पूर्ण उदासीनता से उनकी चोटों से बचने में भी समर्थ जाना। खुंबी और मांस की कचौरियाँ, हलवा और खसखस उसके साथी थे।

यह सिलसिला संभवत: काफी देर तक चलता रहता, यदि एक घटना ने इस परस्पर विकृत संबंधों का अंत न कर दिया होता। मीशा के पेट में दर्द हुआ और समय के साथ-साथ बढ़ता चला गया। दर्द ने उसे विवश कर दिया कि वह मुँह के बल चारपाई पर लेटा रहे। वह अपनी बनाई स्थिति को धोखा देना नहीं चाहता था। इसलिए उसने कुछ समय तक अपने ऊपर नियंत्रण किया और तकिए में ही अपनी कराहट को सहन करता रहा, परंतु खुंबी की कचौरियाँ और ताजा जौ का लाल जूस अपना काम कर गए। वह जोर-जोर से कराहा और उसने तकिए को अपने हाथों से पीटा।

''ओह, क्या दंड मिला है!'' समय-समय पर अपने पैरों को मारते हुए दु:खी होकर उसने कहा। सायंकाल होते-होते वह सहन नहीं कर सका और जोर-जोर से रोने लगा। पिता को छोड़कर, जो सामान्यतया उस समय क्लब में होते थे, उसके सारे शत्रु उसकी चारपाई की ओर भागे। उसकी माँ ने थर्मामीटर लगाया, उसकी बहन सरसों का घड़ा लाई, नौकरानी डॉक्टर के लिए दौड़ी, यहाँ तक कि फालस्टाफ भी मरीज को देखने आया और कार्यरत शत्रुओं के बीच से रास्ता बनाते हुए अपनी बुद्धिमान बड़ी-बड़ी आँखों से दु:खी होकर सहानुभूति से मीशा को देखा।

''क्या किया है तुमने?'' माँ ने शंका से पूछा। वह अंदर-ही-अंदर डर रही थी कि उसने कहीं जहर न खा लिया हो। दरअसल पहले कई बार वह इसकी धमकी दे चुका था।

''क्या तुमने कुछ खाया है? मीशा बेटे, मुझे बताओ, तुम तो प्यारे बच्चे हो, जल्दी बताओ।''

''आह, मम्मी, ओह, मैंने एशिया, अमेरिका और अफ्रीका बेच दिए हैं...आह...और खुंबी की कचौरियाँ खरीदी थीं।''

''यह क्या? मीशा...ओ मेरे परमात्मा! यह तो अचेत हो गया। पिता को क्लब से बुलाने के लिए किसी को भेजो; मेरे परमात्मा!''

उसकी माँ मीशा के ऊपर झुक गई, माथे पर हाथ रखा और गालों को चूमा। उसकी बहन आँखों में आँसू लिये कमरे में दौड़ी और चिंतित होकर खिड़की से डॉक्टर के आने की प्रतीक्षा में लग गई। थोड़ी देर में डॉक्टर आ गया।

''ठीक है, नौजवान, कहाँ दर्द है? जरा मुड़ जाओ?''

मीशा आज्ञानुसार मुड़ गया। डॉक्टर ने परीक्षण किया।

''आज क्या खाया है?''

''आज इसने कुछ नहीं खाया। जब से स्कूल से लौटा है, जरा सी भी कोई चीज नहीं ली।'' उसकी माँ ने कहा।

''यह बुद्धिमानी नहीं है, आखिर तुमने कुछ खाया है, नौजवान। मुझे साफ-साफ बताओ।''

''हाँ, मैंने खुंबी की कचौरियाँ खाई हैं, मैंने एशिया, अफ्रीका...।''

''मामला क्या है?'' चकित पिता ने गाड़ी, जिसपर वह क्लब से आया था, से कूदते हुए धीरे से पूछा।

एक घंटे के बाद सारा घर शांत था। पेट पर पुलटिस बाँधे मीशा बिस्तर पर लेटा था; उसके पास उसकी माँ और बहन बैठी हुई थीं। दोनों ने खलबली मचाई और आज्ञानुसार उसकी हर अनियमित माँग पूरी कर दी।

दर्द जा चुका था और मीशा पूर्णतया संतुष्टि महसूस करने लगा था।

❑

तीन फकीर

—टॉलस्टॉय

आर्चएंजल नगर से सोलोवकी, जो डवीना नदी पर एक बंदरगाह था, के लिए एक पादरी जहाज में सवार हुआ। उसके साथ कई और लोग भी पवित्र मंदिरों की तीर्थयात्रा के लिए जा रहे थे। मंद-मंद वायु चल रही थी, सागर शांत था और आकाश नीला। जैसे-जैसे तीर्थयात्री आगे बढ़ रहे थे। उन्होंने जहाज की छत पर लेटकर, बैठकर अथवा भोजन करते समय परस्पर बातचीत की।

एक दिन प्रात:काल जहाज की छत पर आकर पादरी ने उसके पिछले भाग में चहलकदमी की। फिर उसने जहाज के कर्मचारियों और यात्रियों को जहाज के अगले भाग में एकत्र होते देखा और उनमें सम्मिलित होने के लिए आगे बढ़ा। एक छोटा लड़का दूर सागर के ऊपर इशारा कर रहा था और जो कुछ वह कह रहा था, उसके आसपास खड़े लोग उसे सुन रहे थे। पादरी ने क्षितिज का सूक्ष्म निरीक्षण किया, जिसकी ओर लड़का इशारा कर रहा था, परंतु दूर चमकते सागर के अतिरिक्त उसे कुछ भी नजर नहीं आया। यह सुनने के लिए कि लड़का क्या कह रहा था, जब पादरी उसके निकट गया तो एकत्र हुए सभी लोगों ने आदर से उसको सलाम किया।

''मैं तुम्हें टोकना नहीं चाहता, मेरे भाइयो!'' उसने कहा, ''मैं तो केवल वह सुनना चाहता हूँ, जो तुम कह रहे हो।''

''इस सागर का मछुआ, यह लड़का, '' एक व्यापारी ने कहा, ''हमें किन्हीं फकीरों के बारे में बता रहा था।''

''कैसे फकीर? मैं जानना चाहूँगा।'' बाँध के पास अपना स्थान ग्रहण करते हुए पादरी ने कहा, ''तुम किसकी ओर इशारा कर रहे हो?''

''वह छोटा टापू, जो बंदरगाह के अग्रिम भाग में नजर आ रहा है।'' मछुए ने उत्तर दिया—''आत्मोत्थान के लिए वहाँ तीन फकीर रह रहे हैं।''

''परंतु वह टापू है कहाँ?'' पादरी ने पूछा।

''मेरे हाथों के सामने देखो, श्रीमान्! उस छोटे बादल से थोड़ा हटकर बाईं तरफ उसे देख सकते हो।''

पादरी ने सागर के पार देखा, परंतु लंबे-चौड़े फैलाव में कुछ भी नहीं देख सका। ''मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता!'' उसने कहा, ''ये किस प्रकार के फकीर हैं?''

''वे एक प्रकार के योगी लोग हैं, '' लड़के ने उत्तर दिया—''मैंने प्राय: उनके बारे में सुना है और पिछली गरमियों में उनको देखा भी था।'' फिर उसने बताया कि किस प्रकार उलटी हवा उसे टापू के छोर तक ले गई थी। उसे मालूम नहीं था कि वह कहाँ था। उसने टापू को खोजा और मिट्टी से बनी एक निर्जन झोंपड़ी के पास गया। यहाँ उसने फकीरों में से एक को देखा और तत्पश्चात् बाकी दोनों भी झोंपड़ी में आ गए। उन्होंने उसे खाना खिलाया और उसके कपड़े सुखाए तथा मछली पकड़नेवाली उसकी नाव की मरम्मत में उसकी सहायता की।

''वे किस तरह के दिखाई देते थे?'' पादरी ने पूछा।

''श्रीमान्, जिसको पहले झोंपड़ी में देखा, वह बहुत ही बूढ़ा था। मेरा अनुमान है, सौ वर्ष का होगा। वह बहुत ही छोटा था, गोल पीठ थी और पुरानी गंजी पहने हुए था। उसकी दाढ़ी सफेद थी और वह मुसकराता था, श्रीमान्, संत की तरह! दूसरा भी वृद्ध था और उसकी लंबी पीली दाढ़ी थी। वह लंबा था और फटा कोट पहने था। उसका शरीर पुष्ट था और वह अकेला ही मेरी नाव को पलट सकता था। वह उत्साही और प्रसन्नचित्त था। तीसरा अत्यंत लंबा, चाँद की तरह सफेद था। उसकी दाढ़ी घुटनों तक पहुँचती थी। वह देखने में तीक्ष्ण और उदास था। उसकी आँखें

गुफा में से चमकती मालूम होती थीं। वह अपने पेट पर पेटी के अतिरिक्त कुछ भी पहने हुए नहीं था।''

''उन्होंने क्या कहा था?''

''उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, श्रीमान्! वे आपस में भी कम बोलते थे; केवल एक के देखने मात्र से ही दूसरा समझ जाता था। मैंने लंबे से पूछा कि वे कब से वहाँ थे, तो वह क्रुद्ध हो गया और मुझपर गरजा, परंतु छोटे वृद्ध ने उसका हाथ थाम लिया और मुसकराया; तब लंबा आदमी चुप हो गया। फिर वृद्ध आदमी ने मुसकराकर मुझसे कहा, 'तुम हमें क्षमा करो।' ''

जैसे-जैसे ये बातें चल रही थीं, वैसे-वैसे जहाज भी टापू के निकट पहुँच रहा था। ''वह वहाँ, पूज्य पिता, '' व्यापारी ने पुकारा—''टापू अब साफ दिखाई दे रहा है।'' और सागर के ऊपर इशारा किया। पादरी ने छोटा काला बिंदु देखा, जो वस्तुत: टापू ही था। पादरी ने उसे देर तक देखा और कुछ निश्चय करके जहाज के चालक के पास गया और उससे पूछा, ''उस टापू का क्या नाम है?''

''श्रीमान्, मैं नहीं समझता कि उसका कोई नाम है। इस सागर में उस जैसे कई टापू हैं।''

''मुझे बताया गया है कि वहाँ फकीर रहते हैं। क्या यह बात सत्य है?''

''जो कुछ भी तुम सुनते हो, उसपर विश्वास नहीं कर सकते, '' आदमी ने उत्तर दिया—''कहा जाता है कि वहाँ फकीर रहते हैं और मछुआरों ने उन्हें देखा है। मैं विश्वास से नहीं कह सकता।''

''मैं किनारे पर जाना चाहता हूँ, '' पादरी ने कहा, ''और फकीरों से मिलना चाहता हूँ। क्या ऐसा किया जा सकता है?''

''ठीक है, आदरणीय। हम जहाज को किनारे पर नहीं ले जा सकते। तुम नाव में बैठ सकते हो, परंतु यह मामला कप्तान के हाथ में है। वह सामने आ रहा है।''

''कप्तान!'' पादरी ने कहा, ''मैं उन फकीरों से अवश्य मिलना चाहता हूँ। क्या किसी तरीके से तुम मुझे टापू के किनारे तक पहुँचा सकते हो?''

इस प्रकार का कोई काम करने के लिए कप्तान सहमत नहीं था। ''यह काफी आसान है, माइ लॉर्ड, परंतु इससे समय नष्ट होगा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वे तुम्हारे कष्ट के योग्य नहीं हैं। मुझे बताया गया है कि वे बुद्धिहीन हैं। जो कुछ तुम कहोगे, वे समझ नहीं पाएँगे और न ही स्वयं कुछ कहेंगे!''

''हो सकता है, '' पादरी ने कहा, ''परंतु मैं टापू पर जाना चाहता हूँ; इस कष्ट और फालतू समय के लिए मैं भुगतान करूँगा।''

इतनी प्रतिष्ठावाले आदमी को मना करना कठिन था। आवश्यक आदेश दे दिए गए। जहाज को दूसरी कील पर डालकर शीघ्रता से टापू पर लाया गया। वे पादरी के लिए आसन लाए, जिसके अग्र भाग पर बैठकर उसने ध्यानपूर्वक टापू को देखा, जबकि जहाज के लोग उसके पीछे एकत्र हो गए। शीघ्र ही तीव्र दृष्टिवाले नाविकों ने चट्टानों और छोटी झोंपड़ी को देखा। अंतत: उनमें से एक ने कहा कि उसने तीन फकीर देखे हैं। फिर कप्तान ने अपनी दूरबीन उठाई और किनारे का निरीक्षण करने के बाद पादरी को देते हुए कहा, ''वहाँ सामने देखो! किनारे की चट्टान पर तीन आदमी खड़े हैं।'' पादरी ने दूरबीन ले ली और तीनों आदमियों को देखा—एक बहुत लंबा, दूसरा उससे छोटा और तीसरा वास्तव में बहुत ही छोटा था। वे तीनों एक-दूसरे का हाथ थामे तट पर खड़े थे।

फिर कप्तान ने कहा, ''हम आगे नहीं जा सकते, श्रीमान्, हमें यहीं लंगर डालना होगा। यदि तुम अब भी चाहते हो तो जहाज की नाव में किनारे पर जा सकते हो।'' अत: पतवार को नीचे किया गया और जहाज हवा में भागा। लंगर उठा लिया गया और बादबान नीचे कर दिए गए। जहाज सागर की लहरों पर तैरने लगा। नाव को एक तरफ

डाला गया था, जिसकी देखभाल मल्लाहों का जत्था कर रहा था। पादरी सीढ़ी द्वारा उतरा और नाव के पिछले भाग में बैठ गया। मल्लाहों ने पानी को काटना शुरू किया और नाव झलुए की तरह अपने रास्ते पर तेज दौड़ने लगी। एक-दूसरे का हाथ थामे तीनों फकीर पास-पास खड़े साफ नजर आने लगे। शीघ्र ही नाव चट्टान के निकट आई। एक नाविक ने कुंडी से उसको पकड़ा और पादरी किनारे पर कूद गया। फकीर आगे आए और झुककर सलाम किया। उसने उनको अपना आशीर्वाद दिया और उन्होंने पुन: सिर झुकाया।

फिर पादरी बोला, ''मुझे बताया गया है कि तुम हमारे लॉर्ड ईसा के अनुयायी बनकर परमात्मा की उपासना और अपनी मुक्ति के लिए काम कर रहे हो। परमात्मा की कृपा से मैं भी लॉर्ड का सेवक हुँ, भले ही मैं अयोग्य हूँ और उसकी भेड़ों के झुंड का चरवाहा कहलाता हूँ। अत: मैं चाहता हूँ कि यदि संभव हो तो मैं तुम्हें कुछ उपदेश दूँ; क्योंकि तुम भी परमात्मा के सेवक हो।''

फकीरों को कहने के लिए कुछ नहीं सूझा, वे केवल एक-दूसरे को ताकते हुए मुसकराए।

''क्या तुम बताओगे कि अपनी मुक्ति कैसे पाना चाहते हो और परमात्मा की सेवा कैसे करते हो?'' पादरी ने पूछा।

दो लंबे फकीरों ने गहरी साँस ली और तीसरे आदरणीय छोटे आदमी की ओर देखा। वह मुसकराया और बोला, ''परमात्मा के सेवक! हम परमात्मा की सेवा के योग्य नहीं हैं। हम अपने लिए भोजन ढूँढ़कर अपनी सेवा करते हैं।''

''परंतु तुम परमात्मा से प्रार्थना कैसे करते हो?'' पादरी ने पूछा। फिर बूढ़े आदमी ने कहा, ''हम जो कहते हैं, वह यह है—तुम तीन हो, हम भी तीन हैं, हम पर दया करो।''

ज्यों ही उसने यह कहा, तीनों फकीरों ने अपनी नजरें आकाश की ओर उठाईं और मिलकर बोले, ''हम तीन हैं, तुम भी तीन हो, हमपर दया करो।''

यह पादरी के हृदय को स्पर्श कर गया और वह मुसकराया।

''तुम्हें पवित्र त्रिमूर्ति की ठीक शिक्षा दी गई है, '' उसने कहा, ''परंतु प्रार्थना करने का यह तरीका नहीं है। तुम्हारी धर्मनिष्ठा ने मुझे प्रसन्न किया है, मेरे बच्चो! यह स्पष्ट है कि तुम परमात्मा की सेवा करना चाहते हो, परंतु करना जानते नहीं। मुझसे सुनो। मैं तुम्हें सिखाता हूँ। तुम्हें मैं अपने शब्दों में शिक्षा नहीं दूँगा बल्कि पवित्र धार्मिक पुस्तकों से बताऊँगा कि परमात्मा किस प्रकार चाहता है कि तमाम मनुष्य उसकी प्रार्थना कैसे करें।'' तत्पश्चात् उसने फकीरों को पिता परमात्मा, परमात्मा के बेटे तथा पवित्र प्रेम के बारे में सबकुछ बताते हुए दैवी प्रकाश के बारे में बताया और कहना जारी रखा—''परमात्मा का बेटा हम सबको बचाने और प्रार्थना करने के तरीके को सिखाने के लिए पृथ्वी पर आ गया। सुनो और मेरे पीछे इन शब्दों को कहो—हमारा पिता।''

पहले फकीर ने दोहराया—''हमारा पिता!'' और उसके पीछे दूसरे ने और अंत में तीसरे ने भी।

''जो स्वर्ग में है।''

फकीरों ने कहने का प्रयास किया—''जो स्वर्ग में है।'' परंतु उनमें से कोई भी इसे समझ नहीं पाया। लंबे फकीर के होंठ अजीब थे, इस कारण वह बोल नहीं सका। तीनों में से सबसे बूढ़ा फकीर शब्दों को समझ नहीं सका और तीसरे ने शब्दों को निराशाजनक ढंग से आपस में मिला दिया।

निरुत्साहित न होते हुए पादरी चट्टान पर बैठ गया। तीनों फकीर उसके सामने खड़े रहे और वाक्यखंड को दोहराते रहे, जब तक बार-बार कहने से याद नहीं हो गया। रात तक पादरी निरंतर प्रयत्न करता रहा और एक-एक शब्द को सौ-सौ बार दोहराता रहा, जब तक फकीर पूरा वाक्यखंड बोलना सीख नहीं गए। और फिर जैसा कभी-

कभी होता है, शब्द परस्पर मिलाए जाने लगे तो पादरी रुक गया और पुन: नए सिरे से शुरू किया। पादरी ने उसको तब तक नहीं छोड़ा, जब तक उन्होंने परमात्मा की पूरी प्रार्थना याद नहीं कर ली और व्यक्तिगत या सामूहिक तौर पर दोहरा नहीं सके।

रात गहरी हो चुकी थी और चाँद सागर के ऊपर आ चुका था। इसके पहले कि पादरी विदा होने के लिए उठे, उन्होंने पहले की तरह झुककर सलाम किया। उसने सिखाए गए तरीके से प्रार्थना करने के लिए कहते हुए उन्हें चूमा। फिर वह पुन: नाव पर बैठ गया। ज्यों ही नाविक उसे जहाज की ओर लेकर चले, 'हमारा पिता' कहते हुए फकीरों की आवाजों ने उसका पीछा किया। जहाज पर चढ़ जाने के बाद वह प्रार्थना की आवाज को सुन नहीं सका, परंतु चाँदनी में तीन बूढ़े आदमी तट पर खड़े थे।

बादबानों को खोल दिया गया और लंगर उठाया गया। जहाज तेजी से अपने रास्ते पर चल दिया। जहाज के पिछले भाग में बैठा पादरी अब भी चट्टानी टापू को निहार रहा था। जल्दी ही फकीर उसकी आँखों से ओझल हो गए और चाँद के चौड़े रास्ते के लिए केवल सागर ही सामने था। तीर्थयात्री सो गए थे और जहाज पर पूरी तरह शांति थी, परंतु जहाज के पिछले भाग में बैठे पादरी की आँखों में नींद नहीं थी। वह फकीरों और उनको दी गई अपनी शिक्षा से आनंदित हो रहा था और परमात्मा को इस बात के लिए धन्यवाद दे रहा था कि वह उनकी सहायता कर पाया।

इस प्रकार सोचता हुआ वह बैठा था और लहरों पर नाचती हुई चाँदनी उसकी आँखों को चुँधिया रही थी कि एकाएक उसे कोई चमकती सफेद वस्तु चाँदनी में उड़ती हुई नीचे आती दिखाई दी। क्या यह कोई बादल था अथवा कोई पक्षी, जो उनका पीछा कर रहा था। पादरी ने सागर को सावधानी से देखा। विचित्र वस्तु शीघ्र ही जहाज पर छा गई। यह बादल नहीं था और न ही कोई पक्षी या बड़ी मछली, परंतु एक विशाल डीलडौलवाले आदमी की आकृति थी। फिर भी यह नहीं हो सकता था, क्योंकि एक आदमी सागर के धरातल पर भला कैसे उड़ सकता है?

पादरी ने जहाज चालक को पुकारा—''देखो, भाई!'' वह इशारा करते हुए चिल्लाया—''वह क्या है?'' परंतु वह पहले ही जानता था। तीन फकीर अपनी सफेद दाढ़ियों के साथ सागर पर उड़ रहे थे और उन्होंने जहाज को ऊपर-नीचे से देखा, जैसे वह लंगर डाले हुए हो। जहाज-चालक ने भयभीत होकर हैंडल को छोड़ दिया और चीखा —''परमात्मा, हमारी रक्षा करो। फकीर, फकीर! वे ऐसे भाग रहे हैं, जैसे भूमि पर भाग रहे हों।''

भयसूचक चेतावनी जहाज के सभी लोगों को जहाज की छत पर ले आई और वे भयभीत हो जहाज के पिछले भाग में एकत्र हो गए। एक-दूसरे का हाथ पकड़े अब भी फकीर, चाँदनी में चमकते सागर पर, जहाज को रोकने के लिए हाथ हिलाते उड़ रहे थे। भले ही वे खुश्क भूमि पर दौड़ते हुए प्रतीत होते थे, परंतु उनके पैर चलते हुए दिखाई नहीं देते थे। इसके पहले कि जहाज हवा को पकड़ता, फकीर वहाँ आ गए और एक ओर सवार हो गए। एकत्र हुए लोगों के सामने खड़े होकर उन्होंने कहा, ''ओ, परमात्मा के सेवक! जो कुछ भी तुमने सिखाया था, हम वह सब भूल गए हैं। जब तक हम उसे दोहराते रहे, वह हमें याद रहा, परंतु जब हमने एक घंटे तक दोहराना बंद कर दिया तो शब्दों में से एक को भूल गए। हम उसको पुन: याद नहीं कर सके और इस प्रकार सब भूल गए। हमें एक भी शब्द याद नहीं है; कृपया हमें पुन: सिखाओ।''

पादरी ने क्रॉस का चिह्न बनाया और फकीरों के सामने घुटनों के बल यह कहता हुआ झुक गया, ''ओ पवित्र फकीरो! परमात्मा ने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। अब सिखानेवाली कोई बात नहीं रही। केवल हम पापियों के लिए प्रार्थना करो।'' तत्पश्चात् वह उनके पैरों पर झुक गया।

एक क्षण के लिए फकीर रुके और फिर सागर पर उड़ने के लिए मुड़े। अगले दिन प्रात:काल जहाज की छत का

वह भाग, जहाँ वे खड़े हुए थे, चमक रहा था।

❑

महान् धड़ाका

—लियोनिड एन. एंड्रेइव

वे सप्ताह में तीन दिन—मंगलवार, बृहस्पतिवार और शनिवार को 'विंट' (एक प्रकार का ताश का खेल) खेलते थे। ताश खेलने के लिए रविवार अत्यंत सुविधाजनक था, परंतु उस दिन को दूसरे कामों के लिए छोड़ दिया गया था, जैसे—किसी के यहाँ आना-जाना हो, थिएटर आदि; जिसके लिए इसको सप्ताह का अत्यंत व्यस्त दिन माना जाता था। फिर भी देहात की गरमियों में रविवार को ही खेलते थे।

वे इस प्रकार खेलते थे—मोटे और गरम स्वभाववाले मासलेनीकोव के साथ जेकोव इवानोविच खेलता था और इवप्रकशिया वासिल्योना अपने चिड़चिड़े भाई प्रकोपी वासिलाविच का साथ देती थी। यह प्रबंध कई वर्षों से चल रहा था—छह साल या इससे भी अधिक; और यह इवप्रकशिया वासिल्योना के कारण था। इसका कारण था कि उसके भाई के विरुद्ध खेलने में कोई रुचि नहीं लेता था; क्योंकि यदि एक हारता था तो दूसरा जीतता था और दाँव भले ही मामूली होते थे, इवप्रकशिया और उसका भाई आराम से खेल रहे थे। फिर भी वह खेल को खेल की तरह नहीं समझती थी; जब भी जीत जाती तो अति प्रसन्न होती थी। उसका जीता हुआ माल हमेशा अलग रखा जाता था और जो रकम वह घर चलाने या अपने महँगे मकान का किराया चुकाने में खर्च करती थी, उसकी अपेक्षा इसको अधिक महत्त्व देती थी।

वे हमेशा प्रकोपी वासिलाविच के फ्लैट में एकत्र होते थे; क्योंकि यह काफी बड़ा था और यह अपनी बहन के साथ अकेला रहता था। वहाँ एक बड़ी सफेद बिल्ली भी थी, परंतु वह हमेशा आराम-कुरसी पर सोती थी और कमरों में पर्याप्त शांति रहती थी। प्रकोपी वासिलाविच विधुर था; वह अपनी पत्नी को विवाह के दूसरे वर्ष में ही खो बैठा था और दो महीने तक दिमागी बीमारी के बहाने अस्पताल में पड़ा रहा था। इवप्रकशिया कुँवारी थी, भले ही एक बार एक विद्यार्थी से प्रेम कर चुकी थी। इसे कोई नहीं जानता था और ऐसा लगता था कि यह भी उसे भूल चुकी थी; क्योंकि इसने कभी विद्यार्थी से विवाह नहीं किया था, परंतु प्रतिवर्ष जब दरिद्र विद्यार्थियों के लिए अपील की जाती तो वह एक सौ रुबल का नोट भेज दिया करती थी—'अनजाने मित्र की ओर से।' आयु में वह पार्टी में सबसे छोटी थी—तैंतालीस वर्ष की।

जब सहयोगियों का मौलिक प्रबंध किया गया तो चारों में से मासलेनीकोव इससे विशेषकर नाराज था—इसलिए कि उसे हमेशा जेकोव इवानोविच के साथ खेलना पड़ता था, अर्थात् दूसरे शब्दों में, किसी 'रंग सर' के अवसर पर उसे महान् धड़ाका करने की आशा को खो देना पड़ता था। हर तरह से वह और उसका सहयोगी अयोग्य थे। जेकोव इवानोविच एक नीरस, थोड़ा बूढ़ा आदमी था—वह गरमियों और सर्दियों में काला कोट एवं पतलून पहनता था और शांत तथा कठोर स्वभाववाला था। वह हमेशा ठीक आठ बजे प्रकट होता था—न एक क्षण पहले, न एक क्षण बाद, और तुरंत अपनी नीरस अंगुलियों से ताश के पत्तों को उठाता था। उसकी एक अंगुली में हीरे की अंगूठी रहती थी, परंतु जिस बात पर मासलेनीकोव को अपने सहयोगी पर अत्यंत गुस्सा आता था, वह यह थी कि वह चार सरों से अधिक नहीं बोलता था, भले ही उसके हाथ में अधिक सरों की व्यवस्था होती थी।

एक बार जेकोव इवानोविच ने रंग की दुक्की से शुरू किया और तेरह चालें चलता हुआ रंग के इक्के तक चला गया। मासलेनीकोव ने गुस्से में आकर अपने पत्ते मेज पर फेंक दिए, उसके सहयोगी ने जल्दी से उठा लिये और अपनी चार चालें बनाता हुआ अपनी जीत को लिखने लग गया।

''परंतु तुमने महान् धड़ाका घोषित क्यों किया?'' निकोलस डिमीट्रिविच (यह मासलेनीकोव का ही नाम था)

चिल्लाया।

''मैं चार से अधिक चाल नहीं चलता, '' उसके सहयोगी ने नीरसता से उत्तर दिया, ''तुम कभी नहीं बता सकते कि क्या होगा।''

इसलिए मासलेनीकोव कभी भी उसे विश्वास नहीं दिला सका। वह हमेशा स्वयं जोखिम उठाता था। चूँकि ताश पर उसकी पकड़ अच्छी नहीं थी, इसलिए वह हमेशा हारता था, परंतु उसने साहस कभी नहीं छोड़ा। बिना हेरा-फेरी वह अगली बार जीतने की आशा करता था। अंत में उसने अपने सहयोगी से संधि कर ली और वे प्रसन्नतापूर्वक खेलते रहे। निकोलस डिमीट्रिविच जोखिम उठाता था, उसका सहयोगी हानि लिखता जाता था और चार चालों तक चलता था।

इस प्रकार वे गरमियों में, सर्दियों में, वसंत एवं पतझड़ ऋतुओं में खेलते रहे। अब रक्त से लाल, आँसुओं से भीगा—नंगे और अयोग्य लोगों के कराहने को अपने रास्ते में छोड़ता, बाजू हिलाता हुआ पुराना संसार अपनी विभिन्न जीवन वृत्तियों का अनुसरण कर रहा था। इन सबके लिए धुँधला-सा सुझाव निकोलस डिमीट्रिविच द्वारा पेश किया गया था। कभी-कभी उसको आने में देर हो जाती थी; जबकि दूसरे लोग मेज पर पहले ही बैठे होते थे। हरे कपड़े पर लाल ताश के पत्ते पंखों की तरह बिछे पड़े थे।

लाल गालोंवाला निकोलस डिमीट्रिविच ताजा हवा का वातावरण लिये, जल्दी से अपने लिए क्षमा माँगते हुए जेकोव इवानोविच के सामने बैठकर बोला, ''बुलेवर्ड पर क्या भीड़ जमा है, जैसे लगातार नदी बह रही हो...!'' इवप्रकशिया वासिल्योना, मेजबान के नाते अपने मेहमानों की मानसिक प्रवृत्तियों की विशेषावस्था पर ध्यान न देना अपना कर्तव्य समझती थी। अत: अकेली ने ही उत्तर दिया जबकि जेकोव इवानोविच क्रूर चुप्पी में ताश फेंटता रहा। उसके भाई ने चाय की ओर ध्यान दिया।

''हाँ, संभवत: मौसम सुहावना है, परंतु क्या हम शुरू न करें?'' और उन्होंने खेलना शुरू कर दिया। कमरे की ऊँची आवाज को गृह सामग्री और दरवाजों पर लटके परदों ने नष्ट कर दिया और यह मौन मकबरा बन गया। नौकरानी गरम चाय से भरे गिलासों के साथ नरम कालीन पर चुपचाप चल रही थी। उसके कलफ लगे एप्रेन की फ्रऔं-फ्रऔं, गिनती लिखनेवाले चाक की खुरचन और लंबा जुर्माना देने पर निकोलस डिमीट्रिविच की ठंडी आह के अतिरिक्त कुछ भी सुनाई नहीं देता था। उसके लिए हलकी चाय डाली गई और विशेषकर मेज पर रखी गई; क्योंकि वह रकाबी में डालकर लंबे घूँटों से पीया करता था।

सर्दियों में वह उन्हें बताया करता था कि प्रात: दस डिग्री तापमान था और इस समय बीस डिग्री है। गरमियों में वह कहा करता, ''एक बड़ी पार्टी बाँस की टोकरियों के साथ अभी-अभी जंगल में गई है।'' इवप्रकशिया वासिल्योना विनीत भाव से आकाश को देखती—गरमियों में वह छत पर खेलते थे और चाहे आकाश साफ होता तथा देवदार वृक्षों के शिखर धूप से चमक रहे होते, वह कहती—''मुझे आशा है कि वर्षा नहीं होगी।'' और जेकोव इवानोविच ईमानदारी से ताशों को फेंटता था और ईंट की दुक्की का गिरना यह प्रतिबिंबित करता था कि निकोलस डिमीट्रिविच चंचल और असावधान था। एक समय, विशेषकर मासलेनीकोव अपने सहयोगी को परेशान किया करता था। हर बार जब वह आया, उसने ड्राइफस के बारे में एक-दो बार चर्चा की। उसने उदासीन भाव से इन्हें सूचित किया—

''ड्राइफस का मामला बुरी तरह चल रहा है।'' अथवा इसके अतिरिक्त वह मुसकराते हुए कहता कि उसका दंड अनुचित है और निस्संदेह बदल दिया जाएगा। फिर वह समाचार-पत्र निकालता और ड्राइफस के बारे में कुछ अंश पढ़ने लगता।

''पहले पढ़ चुके हैं!'' जेकोव इवानोविच नीरसता से कहता, परंतु उसका सहयोगी कोई ध्यान न देता हुआ, जिसे वह रुचिकर और महत्त्वपूर्ण मानता, उसे पढ़ता। एक बार उसने दूसरों को वाद-विवाद के लिए उकसाया और लगभग झगड़े के लिए उत्तेजित कर दिया, जब इवप्रकशिया वासिल्योना ने कार्रवाई के कानूनी पक्ष को मानने से इनकार कर दिया और उसकी तुरंत रिहाई की माँग की; जबकि जेकोव इवानोविच ने इस बात पर जोर दिया कि कुछ औपचारिकताओं को पहले पूरा करना चाहिए। जेकोव इवानोविच याद करनेवाला पहला था; मेज की ओर संकेत करके उसने कहा, ''समय नहीं हुआ क्या?''

अत: उन्होंने खेलना आरंभ कर दिया और उसके बाद निकोलस डिमीट्रिविच ने किसी तरह ड्राइफस के बारे में काफी चर्चा की, परंतु उसे केवल चुप्पी से उत्तर दिया।

इसी तरह वे गरमियों, सर्दियों, वसंत और पतझड़ ऋतुओं में खेलते रहे। कुछ घटनाएँ घटती थीं, परंतु मनोविनोद के लिए कभी-कभी प्रकोपी वासिलाविच बिलकुल भूल जाता था कि उसके सहयोगी ने क्या कहा था। एक बार वह पाँच चाल चलकर एक भी सर नहीं बना पाया था। उस समय निकोलस डिमीट्रिविच उसकी हानि को बढ़ते देखकर जोर से हँसता था, जबकि जेकोव इवानोविच ने नीरसता से कहा था—''यदि तुम चार, केवल चार कहते तो संभवत: तुम जीत के निकट पहुँच जाते।''

बहुत ऊँचे दर्जे की उत्सुकता देखने को मिलती, जब इवप्रकशिया वासिल्योना धड़ाके के लिए बोली लगाती। यह न समझते हुए कि वह कौन सा पत्ता फेंके, लाल हो जाती, काँपने लग जाती और दयालु भाव से अपने अल्पभाषी भाई की ओर देखने लगती, जबकि उसके दो विरोधी उसके स्त्रीत्व और असहायता के लिए अपनी नवाबी नम्रता के साथ कृपापूर्वक अपनी मुसकराहट से उसे प्रोत्साहित करते और धैर्य से प्रतीक्षा करते थे। आमतौर पर वे खेल को गंभीरता से खेलते थे, बहुत समय पहले से ताश ने निर्जीव वस्तु होना बंद कर दिया था। उसके हाथों में प्रत्येक हाथ और पत्ते का अपना विशेष महत्त्व था और अपना जीवन स्वयं जीता था। हाथों को पसंद और नापसंद किया जाता था—वे भाग्यशाली थे, वे अभागे थे। पत्ते हमेशा विभिन्नता से आपस में मिलते थे और यह मिलना किसी विश्लेषण या कानून के अधीन नहीं था। और साथ-ही-साथ पूर्णतया न्यायसम्मत था। उस न्यायसम्मतता में खिलाड़ियों के व्यक्तित्व की अपेक्षा ताश के पत्तों का व्यक्तित्व रहता था। खिलाड़ी अपने लक्ष्यों के लिए उसका प्रयोग करते थे और पत्ते अपना हिस्सा प्रदान करते थे; जैसे वे अपनी इच्छाओं, रुचियों, सहानुभूतियों और चपलताओं से सजीव हो गए हों। ईंट के पत्ते प्राय: जेकोव इवानोविच को जाते और इवप्रकशिया वासिल्योना का हाथ हुकम के पत्तों से भरा रहता था, भले ही वे उसे अच्छे नहीं लगते थे। कभी-कभी पत्ते चंचल हो जाते और जेकोव इवानोविच हुकम के पत्तों से बच नहीं पाता था; जबकि इवप्रकशिया वासिल्योना ईंट के पत्तों का आनंद लेती थी और बड़ी-बड़ी चालें चलकर हार जाती थी। निकोलस डिमीट्रिविच को हमेशा बुरे पत्ते हाथ आते थे और वह अपना कोई भी पत्ता बदलने के लिए हमेशा तैयार रहता था। उसके पत्ते होटल में आनेवाले व्यक्ति की तरह उदासीन रहते थे, जो थोड़े समय के लिए वहाँ ठहरता था। कई अवसरों पर अनुक्रम सायंकालों को उसके पास दुक्कियों और तिक्कियों के अतिरिक्त कुछ नहीं आता था और इसी कारण उसे पक्का विश्वास हो गया था कि वह कभी भी महान् धड़ाका नहीं कर पाएगा, क्योंकि पत्ते उसकी इच्छा को जानते थे और उसमें विघ्न डालना चाहते थे। अत: उसने बहाना बनाया कि वह उसके प्रति पूर्णतया उदासीन था और इसको चिढ़ाने के लिए प्राय: छक्के और सत्ते के साथ एक-आध तसवीर को लेकर वह पत्तों का क्रम बदलने का काम करने लगा।

इवप्रकशिया वासिल्योना ने अपनी भावनाओं को छिपाए रखा और जेकोव इवानोविच के हाथ में जो भी पत्ते आते, उनके प्रति दार्शनिक उदासीनता को, चार से अधिक 'न' बोलने के विदेशी उपाय के साथ सच मानना बहुत

पहले सीख लिया था। केवल निकोलस डिमीट्रिविच ने पत्तों की चंचलता पर अपनी नाराजगी को छिपाना कभी नहीं सीखा था। जब वह सोता था तो बिना सर के महान् धड़ाका जीतने के सपने देखा करता था। अपने हाथ के पत्ते उठाते ही उसे पहले इक्का, फिर बादशाह, फिर दूसरा इक्का नजर आते थे, परंतु जब वह पुन: खेलने बैठता तो उसका हाथ छोटे पत्तों से भरा हुआ होता और उनमें दुर्भाग्य के कुरूप मनसूबे नजर आते। धीरे-धीरे, सोते-जागते वह महान् धड़ाका बनाने के सपने देखता रहा, जब तक ये सपने उसके जीवन की प्रबलतम इच्छा नहीं बन गए।

इस बीच ताश से असंबंधित घटनाएँ भी घटीं। इवप्रकशिया वासिल्योना की सफेद बिल्ली मर गई। उसके मालिक ने उसे बाग में एक नीबू के पेड़ के पास दफना दिया। फिर निकोलस डिमीट्रिविच दो सप्ताह तक लुप्त रहा। उसके सहयोगी नहीं जानते थे कि वे क्या करें; क्योंकि तीन व्यक्तियों से विंट खेलना उनकी आदत के विरुद्ध और विनोदहीन था। पत्तों ने भी स्वयं इस अनभिज्ञ समुदायता को प्रमाणित कर दिया। जब निकोलस डिमीट्रिविच पुन: प्रकट हुआ तो उसकी सफेद अल्प लटाओं में से नजर आनेवाला उसका चेहरा पीला पड़ चुका था और सिकुड़ा हुआ प्रतीत होता था। उसने बताया कि उसका बेटा किसी अपराध में पकड़ा गया था और उसे सेंट पीटर्सबर्ग भेज दिया गया था। सभी हैरान हुए; क्योंकि वे नहीं जानते थे कि उसका बेटा भी था। संभवत: उसने कभी बताया हो; परंतु वे उसके बारे में भूल गए थे। उसके पश्चात् जल्दी ही उसका आना पुन: बंद हो गया और एक शनिवार को जब वे और दिनों से अधिक समय तक खेलते रहे थे, सबको हैरानी से पता चला कि उसे काफी समय से हृदय रोग था। उसी दिन उसको दिल का गंभीर दौरा पड़ा था, परंतु तत्पश्चात् सबकुछ पहले की तरह चला और खेल अधिक गंभीर और रुचिकर हो गया, क्योंकि निकोलस डिमीट्रिविच उन्हें बाहरी मामलों से पहले से कम प्रसन्न करता था।

बृहस्पतिवार को एक चौंका देनेवाला परिवर्तन हुआ। जैसे ही खेल आरंभ हुआ, निकोलस डिमीट्रिविच ने पाँच की आवाज दी और केवल जीत ही नहीं गया बल्कि छोटा धड़ाका भी बनाया; क्योंकि जेकोव इवानोविच के पास इक्का था, जिसके बारे में वह चुप रहा था। कुछ समय तक सामान्य पत्ते हाथ में आते रहे, परंतु बाद में अच्छे पत्तों का क्रम शुरू हो गया। मानो पत्ते यह देखना चाहते हों कि यह कितना प्रसन्न होगा! वह खेलने के लिए दाँव लगाता था। जेकोव इवानोविच के साथ-साथ सभी हैरान थे। निकोलस डिमीट्रिविच, जिसकी मोटी अंगुलियाँ काँप रही थीं, की उत्तेजना ने दूसरे खिलाड़ियों को भी छूत का रोग लगा दिया।

''आज तुम्हारे साथ क्या बात है?'' उद्विग्न प्रकोपी वासिलाविच ने कहा, जो दुर्भाग्य के अग्रदूत सौभाग्य से डर रहा था। इवप्रकशिया वासिल्योना यह सोचकर खुश थी कि निकोलस डिमीट्रिविच के पास अंतत: अच्छे पत्ते थे। वह अपने भाई को उसके दुर्भाग्य से दूर करने के लिए भूमि पर तीन बार थूककर चिल्लाई—''फि, फि! इसमें कुछ भी विशेषता नहीं, पत्ते हर एक को उसकी बारी देते हैं।''

पत्ते बाँटते समय निकोलस डिमीट्रिविच को क्षणिम छोड़ता हुआ प्रतीत हुआ और कुछ दुक्कियाँ आ गईं, फिर इक्के और बादशाह तथा बेगमों ने पीछा किया। उसको पत्ते उठाने और खेल शुरू करने का समय ही नहीं मिला और अपनी व्याकुलता में वह दो बार धोखा खा गया, जिस कारण उनको पुन: पत्ते बाँटने पड़े। उसके सारे दाँव सफल रहे, भले ही हठी जेकोव इवानोविच अपने इक्कों के बारे में चुप रहा। उसके सहयोगी के भाग्य में परिवर्तन के कारण हैरानी ने शंका को स्थान दिया और वह अपने नियत कर्तव्य में निरंतर लगा रहा—चार से अधिक नहीं बोलना! उसने अब अपनी अग्रता की ओर ध्यान नहीं दिया; परंतु साहसपूर्वक यह विचार करके कि बदले में उसको इच्छित पत्ते मिल जाएँगे, महान् धड़ाके का दाँव लगा दिया।

जब प्रकोपी वासिलाविच पत्ते बाँट चुका, मासलेनीकोव ने अपने पत्ते उठाए। उसके दिल ने धड़कना लगभग बंद कर दिया और आँखों के सामने धुंध छा गई—उसके हाथ में विश्वस्त बारह सर थे, चिड़ी और पान के इक्के से

दहले तक और ईंट का इक्का और बादशाह। यदि वह बदले में हुकम का इक्का ले सके तो समझो बिना सर के महान् धड़ाका!

''दो, कोई ट्रंप नहीं!'' अपनी आवाज को संभालते हुए उसने कहा।

''तीन हुकम!'' इवप्रकशिया वासिल्योना, जो उतनी ही उत्तेजित थी; क्योंकि उसके पास बादशाह से नीचे हुकम के सारे पत्ते थे।

''चार पान।'' जेकोव इवानोविच ने नीरसता से प्रत्युत्तर दिया। निकोलस डिमीट्रिविच ने उसी समय छोटा धड़ाका घोषित कर दिया, परंतु इवप्रकशिया वासिल्योना ने उत्तेजना से प्रभावित होकर हुकम में महान् धड़ाका बोल दिया, भले ही उसको महसूस हुआ कि वह बना नहीं पाएगी। निकोलस डिमीट्रिविच ने एक क्षण के लिए सोचा और विजय की हवा से अपनी उत्तेजना को छिपाने के लिए बोल दिया, ''महान् धड़ाका, कोई ट्रंप नहीं।''

निकोलस डिमीट्रिविच ने 'नो ट्रंप महान् धड़ाके' की घोषणा करके सबको चकित कर दिया और अतिथि सत्कार करनेवाली के भाई ने पुकारा, ''ओह!''

निकोलस डिमीट्रिविच ने पत्ता लेने के लिए हाथ बढ़ाया; परंतु एक ओर झुककर मोमबत्ती को गिरा दिया। इवप्रकशिया वासिल्योना ने उसको उठा लिया। निकोलस डिमीट्रिविच एक क्षण के लिए बैठ गया और अपने पत्ते मेज पर रख दिए। फिर धीरे से बाईं ओर गिर गया। गिरते ही उस मेज से टकराया, जिसपर चाय रखी थी; वह भूमि पर गिर गई।

जब तब डॉक्टर आया तब तक निकोलस डिमीट्रिविच दिल के दौरे से मर चुका था। जीवित लोगों को सांत्वना देने के लिए डॉक्टर ने मृत्यु की अस्पष्टता के बारे में कुछ शब्द कहे। मृतक को खेल के कमरे में सोफे पर लिटा दिया गया। चादर से ढका हुआ वह बड़ा भयावना लगता था। चादर से एक टाँग नहीं ढकी थी और ऐसे लगती थी कि वह किसी दूसरे आदमी की हो। कागज का एक बड़ा टुकड़ा उसके काले जूते के तलुवे से चिपका हुआ था। ताश खेलनेवाली मेज अभी साफ नहीं की गई थी। पत्ते उसके ऊपर उलटे पड़े हुए थे और निकोलस डिमीट्रिविच के ढेर के रूप में पड़े थे, मानो उसने रखे थे।

जेकोव इवानोविच शव को न देखने का अथवा कालीन से लकड़ी की छत पर न जाने का प्रयत्न करता हुआ अनिश्चित छोटे कदमों से कमरे में घूम रहा था—लकड़ी की छत पर उसकी एड़ियाँ भयानक शोर करती थीं। मेज के पास से कई बार गुजरते हुए वह खड़ा हुआ। उसने निकोलस डिमीट्रिविच के पत्तों को उठाया, उन्हें देखा और उसी तरह पुन: ढेर में रख दिया। फिर उसने अपने पत्तों को देखा, जो डिमीट्रिविच उससे माँग रहा था। यह हुकम का इक्का था, जो उसे महान् धड़ाका दे सकता था। बार-बार ऊपर-नीचे घूमता हुआ जेकोव साथवाले कमरे में चला गया, बैठा और रोया; क्योंकि मृतक व्यक्ति का भाग्य उसे दयनीय लगा। अपनी आँखें बंद करके उसने निकोलस के चेहरे के चित्र को देखने का प्रयत्न किया; जैसे वह जीवित अवस्था में था और जीत से प्रसन्न होता। यह सोचकर उसे विशेष खेद हुआ कि उसकी इच्छा बिना सर महान् धड़ाका करने की थी। शाम की घटनाएँ उसकी आँखों के सामने से गुजर गईं—ईंट की पंजी से मृतक के जीतने को लेकर अच्छे पत्तों तक। यह सब विशेष अपशकुन का प्रतीक था। यहाँ निकोलस मरा हुआ पड़ा था, जबकि वह महान् धड़ाका जीत सकता था।

सबसे अधिक दयनीय बात यह थी कि निकोलस नहीं जानता था कि हुकम का इक्का उसकी माँग की प्रतीक्षा कर रहा था और उसके हाथ में महान् धड़ाका था—कभी नहीं। उसे आभास होता जान पड़ता था कि उसने पहले महसूस नहीं किया था कि मृत्यु क्या होती है, परंतु अब उसने देखा कि यह कितनी विवेक-रहित, भयावनी और अनिवार्य होती है—कभी नहीं जानेगा! यद्यपि जेकोव को उसके कान में जोर से कहना पड़ता और पत्तों को दिखाता

तो भी इन्हें नहीं जान पाता; क्योंकि इस पृथ्वी पर अब वह जीवित नहीं था। केवल एक क्षण और रहता तो हुकम के इक्के को देख लेता, परंतु वह इसे जाने बिना ही मर गया।

''क...भी...न...हीं!'' इसकी सत्यता और अर्थ से अपने आपको आश्वस्त करने के लिए उसने शब्दों के टुकड़े करके धीरे से उच्चारण किया। शब्द था और उसका अर्थ भी था—इतना भयानक और कड़वा कि जेकोव पुनः कुरसी पर गिर गया और रोने लगा। उसने निकोलस का हाथ खेला, उसकी सरों को एक-एक करके इकट्ठा किया, जब तक तेरह सर पूरी नहीं हो गईं; और जो उसने सोचा था, कितनी बड़ी जीत होती, जिसको मृतक कभी नहीं जानेगा। यह पहला और अंतिम अवसर था जब जेकोव अपने चार से अधिक बोला था और मित्रता के नाम पर महान् धड़ाका जीता था।

''तुम यहाँ हो, जेकोव इवानोविच?'' इवप्रकशिया ने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा और मेज पर बैठकर आँसुओं से फूट पड़ी—''ओह, कितना भयंकर!''

उन्होंने एक-दूसरे को देखा और यह सोचकर कि साथवाले कमरे में सोफे पर मृतक ठंडा, भारी और गूँगा पड़ा है, चुपचाप रोते रहे।

''क्या तुमने समाचार भेज दिया है?'' जेकोव ने पूछा।

''हाँ, मेरा भाई नौकरानी को साथ लेकर गया है, परंतु मैं नहीं जानती कि वे उसका फ्लैट कैसे ढूँढ़ेंगे—हमें पता मालूम नहीं।''

''क्या वह उसी फ्लैट में नहीं रहता था जहाँ पिछले साल था?'' जेकोव ने विस्मित होकर पूछा।

''नहीं, वहाँ से चला गया था। नौकरानी ने बताया था कि वह बुलवर्ड से छोटी गाड़ी पकड़ा करता था।''

''तुम पुलिस के द्वारा पता कर सकते हो!'' जेकोव ने शांत होते हुए कहा, ''उसकी पत्नी नहीं है क्या?''

इवप्रकशिया वासिल्योना ने बिना उत्तर दिए जेकोव इवानोविच की ओर ध्यानपूर्वक देखा। उसने अनुभव किया कि उसके मन में कोई विचार था। उसने एक बार नाक छिनकी, रूमाल से नाक पोंछी, रूमाल को जेब में डाला और फिर अपनी सूजी हुई आँखों की भौंहों को पूछताछ की मुद्रा में उठाते हुए पूछा, ''हमें चौथा अब कहाँ से मिलेगा?''

इवप्रकशिया वासिल्योना ने उसे नहीं सुना। उसका अभ्यासिक मन काम कर रहा था। एक क्षण की चुप्पी के बाद उसने पूछा, ''क्या तुम भी उसी जगह पर रहते हो?''

❑

स्लावी आत्मा

—एलेक्जेंडर आई. कुपरिन

मैं अपने बीते दिनों की याद को जितना कुरेदता हूँ और अपने बचपन की घटनाओं तक पहुँचता हूँ, उतनी ही मेरी स्मरणशक्ति अविश्वसनीय और व्याकुल हो जाती है। निस्संदेह जो बातें मुझे याद प्रतीत होती हैं, वे बाद में मुझे बताई गई थीं—बाद में मेरे चेतन वर्षों में उन्होंने बताईं, जिन्होंने प्यार और ध्यान से मुझे पहले कदमों से चलते देखा था। इससे अधिक और कुछ नहीं हो सकता था, परंतु कुछ पढ़ने और कहीं सुनने के बाद वे सब मेरी आत्मा में डूब गए होंगे। कौन कह सकता है कि उन यादों में यथार्थ कहाँ समाप्त होता है और कल्पना कहाँ से शुरू होती है! कल्पना, जो कभी की सचाई में बदल गई है और इससे अधिक, यह दोनों कहाँ अभेद्यता से परस्पर एक-दूसरे में मिल गए हैं?

विशेषकर मेरे सामने यास और उसके दो साथियों की मौलिक आकृतियाँ उभर आती हैं। मैं यहाँ तक कह सकता हूँ, जीवन-पथ में दो मित्र—अश्वारोही सेना का पुराना मतस्का और बाड़े का कुत्ता बाऊटन।

यास अपनी सार्थक बोलचाल और काम से पहचाना जाता था। वह हमेशा ऐसे आदमी की छाप छोड़ता था जो आत्मकेंद्रित हो। वह कभी-कभार बोलता था, सदा अपने शब्दों को तौलता था और अपनी भाषा को यथासंभव रूसी बनाने का प्रयत्न करता था; केवल आध्यात्मिक उत्थान के क्षणों में छोटी रूसी गालियों पर उतर आता था—यहाँ तक कि पूरे वाक्यों में। गंभीरता से सिले उसके कपड़ों को, उसके काले रंग को, उसके शांत, परंतु कुछ-कुछ उदास और हजामत किए हुए चेहरे को और अर्थपूर्णता से उसके दबे पतले होंठों को धन्यवाद, जिससे प्रतीत होता था कि वह पुराने रीति-रिवाजों का रक्षक था।

मुझे छोड़कर सब आदमियों में से केवल यास ही मेरे पिता की प्रशंसा करता था। हम बच्चों, माँ और उसके तथा हमारे परिचितों के लिए वह सम्माननीय था, परंतु कुछ-कुछ दया और घृणित कृपा के साथ! उसके अपरिमित अहंकार का कारण मेरे लिए सदा रहस्य का साधन बना हुआ था। कभी-कभी ऐसा होता था कि नौकर अपनी अच्छी जानी-पहचानी धृष्टता के साथ अपने मालिकों की शक्ति की चमक-दमक स्वयं अपना लेते थे, परंतु मेरे पिता, यहूदी नगर में एक विनीत डॉक्टर, इतनी सादगी और शांति से रहते थे कि दूसरे यास को तिरस्कार की दृष्टि से देखें, इसके लिए कोई कारण नहीं दे सके थे। इसी प्रकार यास में भी नौकर की धृष्टता का कारण नहीं था; न शहरी चमक-दमक का, न ही विदेशी वाक्यखंड का; न ही पड़ोसी नौकरानियों पर विजय पाने के आत्मविश्वास का और न ही गिटार पर झंकृत कल्पना की रसिक कला का—कला, जिसकी सिद्धि ने कई अनुभवहीन दिलों को पहले ही बरबाद कर दिया था। वह अपने खाली समय को पूर्ण आलस्य के साथ अपने बक्से पर लेटकर गुजारता था। वह कभी पढ़ता तो नहीं ही था, खुले तौर पर पुस्तकों की निंदा भी करता था। उसके विचार में बाइबिल के अतिरिक्त सब पुस्तकें झूठी थीं और लोगों से पैसा बटोरने के लिए लिखी गई थीं। अत: बक्से पर लेटे वह अपने ही मन में आनेवाले लंबे विचारों की ओर ध्यान देता था।

मतस्का फौजी सेवा से निकाला गया घोड़ा था। उसकी बुराइयाँ भयप्रद अनुपात तक पहुँच गई थीं। इसके अतिरिक्त उसकी अगली टाँगें जोड़ों पर झुकी हुई थीं। उसका शरीर पिलपिले, उभरे मांस से सजा हुआ था, जबकि उसकी पिछली टाँगें कठोर थीं। वह अपने टेटुए को दिखाते हुए ऊँट जैसा अपना सिर हमेशा सीधा ऊपर को उठाए रहता था। साथ ही उसका बड़ा आकार, सामान्य पतलापन और आँख की अनुपस्थिति उसकी आकृति को भद्दा एवं शोकाकुल बनाते थे। ऐसे घोड़े जो अपना सिर ऊपर को रखते हैं, उन्हें फौज में तारों का अध्ययन करनेवाला

'ज्योतिषी' कहते थे।

यास बाऊटन की अपेक्षा मतस्का को अधिक मान देता था। बाऊटन कभी-कभी ओछापन दिखाता था, जो उसकी आयु के अनुकूल नहीं था। वह उन बड़े, लंबे बालोंवाले, खुरखुरे कुत्तों में से था या जो बड़े चूहे की, जिससे यह केवल दस गुना बड़ा था, या फिर छोटे बाल-कटे कुत्ते की याद दिलाता था। वह पैदाइशी रखवाली करनेवाला कुत्ता था। घर में वह अत्यंत गंभीरता और अनुशासित रूप से रहता था, परंतु सड़क पर बहुत ही अनुचित व्यवहार करता था। यदि वह पिता के साथ बाहर जाता तो कभी भी गाड़ी के पीछे नहीं दौड़ता था जैसे दूसरे अच्छे कुत्ते करते हैं। जो घोड़ा उसे रास्ते में मिलता यह उसके जबड़े पर झपटता तथा तभी पीछा छोड़ता, जब वह उत्तेजित होकर हिनहिनाने और इसे काटने के लिए अपना सिर झुकाता था। वह अपरिचित बाड़ों में घुस जाता और दर्जन भर कोपाकुल कुत्तों को पीछा करते देखकर सिर पर पाँव रखकर लुढ़कता हुआ भाग जाता था। सबसे बुरी बात यह थी कि वह ऐसे कुत्तों को मित्र बनाता था जिनकी प्रसिद्धि संदिग्ध थी।

हमारे पोडोली या बोलीनी में बन-ठनकर निकलने के अतिरिक्त आदमी को कोई चीज बुद्धिमत्ता प्रदान नहीं करती थी। एक सज्जन—जो बहुत पहले अपनी जागीर गिरवी रख चुका था तथा जो अब भी गिरवी रखी थी और प्रतिदिन वकीलों के आने की आशा करता था—हर रविवार को अपनी चार या कभी छह सुंदर घोड़ोंवाली गाड़ी में गिरजा जाता। जब वह नगर के चौक पर पहुँचता तो हमेशा कोचवान को कहता—''चाबुक मारो, जोसेफ!'' किसी तरह मुझे विश्वास हो गया था कि पड़ोसी जागीरदारों में से कोई इस शान से नहीं निकलता था जैसे यास पिता को निकालता था—जब कभी उसे कहीं जाना होता था। यास पहले स्वयं चौकोर किनारे और चौड़े पीले फीते से सजी अच्छे पेटेंट चमड़े की टोपी पहनता था। फिर कमानीदार सफरी गाड़ी में मतस्का को जोतकर घर से सौ कदम दूर ले जाया करता था। ज्यों ही पिता दरवाजे पर नजर आते, यास विजयी ढंग से अपनी चाबुक घुमाता। मतस्का कुछ समय तक चिंताग्रस्त होकर अपनी दुम हिलाता, फिर अपना सिर ऊपर-नीचे करके टाँगें उठाता हुआ धीमी चाल से चल देता था। ओसारे पर पहुँचते ही यास इस तरह का व्यवहार करता, जैसे वह लगाम खींचकर बड़ी कठिनाई से अशांत घोड़े को रोकने के लिए अपना सारा जोर लगा रहा हो। उसका सारा ध्यान घोड़े की तरफ था और भले ही कुछ भी हो जाए, यास अपना सिर नहीं मोड़ता था। इसमें शक नहीं कि यह सबकुछ हमारे परिवार की शान के लिए किया जाता था।

मेरे पिता के बारे में यास के बहुत ऊँचे विचार थे। कभी-कभी ऐसा होता कि एक विनीत यहूदी या किसान पिछले कमरे में अपनी बारी की प्रतीक्षा करता; जबकि पिता दूसरे मरीजों को देखते थे। मेरे पिता को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए—हाँ, डॉक्टर के रूप में—यास उन लोगों से प्रायः बातचीत करने लग जाता था। ''तुम क्या सोचते हो?'' श्रेष्ठ ढंग से मरीज को सिर से पाँव तक देखते हुए और अँगीठी के पास खड़े होकर पूछता—''संभवतः तुम सोचते हो कि किसी अधिकारी या निरीक्षक से मिलने आए हो। मेरा मालिक भाई न केवल निरीक्षक से बड़ा है बल्कि वह सुपरिंटेंडेंट से भी ऊपर है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि संसार में जो कुछ भी जानने योग्य है, यह जानता है। तुम्हें क्या परेशानी है?''

''मुझे दर्द हो रहा है—यहाँ मेरे दिल में, '' मरीज व्याकुलता में बिना समझे बोल उठा, ''और मेरी छाती में और...''

''ठीक है, तुम देखते हो! और क्यों? और उसका इलाज कैसे किया जाता है? तुम नहीं जानते, मैं भी नहीं जानता, परंतु मेरे मालिक ने तुम्हें देखकर उसी समय बता दिया कि तुम जियोगे या मरोगे।''

यास बहुत व्यवस्थित तरीके से रहता था। वह अपने पैसों से भिन्न-भिन्न घरेलू चीजें खरीदता था और सावधानी

से उन्हें अपने टीन के डिब्बे में जमा करता जाता था। हम बच्चों को इससे अधिक प्रसन्नता नहीं होती थी, भले ही हमें उसे चीजें साफ करते हुए देखने की अनुमति मिल जाती थी। ढकने के अंदर की तरफ भिन्न-भिन्न विषयों के चित्र अंकित थे। यहाँ हरी मूँछोंवाले कुलपति जैसे दिखाई देनेवाले जरनल के साथ ऐसी चीजें थीं जैसे 'आत्मा का मुकदमा' नीवा से नक्काशी किया हुआ औरतों के सिरों का अध्ययन और बेतूल के पेड़ पर एलिया मटोनीसा के तीर की प्रतीक्षा करते, अपनी दाईं आँख खोले, बुलबुल का चोर इत्यादि। फिर धीरे-धीरे बक्से में से सारी चीजें निकाली जातीं—कोट, वास्कट, लंबे कोट, भेड़ के चमड़े की टोपियाँ, प्यारी तश्तरियाँ, शीशे से सजाए गए पुराने बक्से, फूल और छोटे, गोल मुँह देखनेवाले शीशे; जेब में से सेब या ऐसी दूसरी चीज निकाली जाती जो हमेशा हमारे स्वाद के लिए उत्तम रहती थी।

कुल मिलाकर यास बहुत ही कार्यकुशल और परिश्रमी था। एक दिन उसने एक बड़ा जल-पात्र तोड़ दिया। मेरे पिता ने उसे बुरा-भला कहा। अगले दिन यास वैसे ही दो नए जल-पात्र ले आया। ''इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। हो सकता है, मुझसे दूसरा भी टूट जाए और किसी तरह ये घर में काम आ जाएँगे।'' उसने कहा। कमरों में उसने सफाई का नमूना पेश किया था और इसे कायम रखा था। उसने ईर्ष्यापूर्वक अपने अधिकारों और कर्तव्यों की चौकसी की थी। यह पक्का था कि जैसे फर्श को वह साफ करता था, कोई दूसरा नहीं कर सकता था। एक दिन उसमें और नौकरानी म्योका में गरमागरम बहस को गई कि दोनों में से कौन फर्श को अच्छी तरह से साफ कर सकता है। हमें विशेषज्ञ बनने के लिए प्रार्थना की गई और हमने यास को चिढ़ाने के लिए नौकरानी के हक में निर्णय दे दिया। मानव अंत:करण को न समझते हुए हम बच्चों को शंका नहीं हुई कि हमने अपने निर्णय से उसको कितना बड़ा धक्का पहुँचाया था। वह बिना कुछ कहे चला गया और उस दिन उस छोटे नगर में हर किसी को पता चल गया कि यास ने शराब पी थी।

उसके साथ वर्ष में दो या तीन बार प्राय: ऐसा हो गया था और इससे उसको और उसके परिवार में सबको दु:ख होता था। लकड़ी काटने, घोड़ों को चारा डालने और पानी पिलानेवाला कोई नहीं होता था। पाँच या छह दिनों के लिए हम न उसको देखते और न ही उसकी बाबत कुछ सुनते थे। सातवें दिन भद्दे रूप में वह बिना टोपी और कोट के नजर आता था। उसके तीन कदम पीछे विचित्र रंगों के यहूदियों की भीड़ होती थी। सड़कों पर लड़के शोर मचाते और उसपर मुँह चिढ़ाते थे। सब जानते थे कि अब नीलामी होगी और वस्तुत: कुछ ही क्षणों में घरेलू चीजों के अपने बक्से को हाथों में उठाए यास बाहर आता और भीड़ शीघ्र ही उसके आसपास इकट्ठी हो जाती थी।

''ठीक है, तो तुम मुझे बोदका नहीं दोगे?'' वह पतलून और वास्कट को हाथों पर लटकाए हुए बोला, ''मेरे पास पैसा नहीं है क्या? और यह क्या है? और वह?''

और एक के बाद दूसरा कपड़ा भीड़ में उड़ता और लालची हाथ उनको थाम लेते।

''तुम इसके लिए क्या दोगे?'' यास किसी यहूदी पर चिल्लाया, जिसने उसका कोट थाम रखा था—''तुम कितना दोगे, घोड़ी के सिर!''

''ठीक है, मैं तुम्हें पचास कोपेक दूँगा।'' यहूदी ने उत्तर दिया।

''पचास, अरे पचास?'' यास को अत्यंत चिंता हुई—''मुझे पचास नहीं चाहिए, मुझे बीस दो, दो मुझे।...ठीक है? ओ, कंजूसो! लाओ, इस सारे माल के लिए मुझे दस कोपेक दो! ईश्वर तुम्हारे सिरों से आँखें निकाल ले! तुमपर प्लेग की मार पड़े! अच्छा होता, यदि तुम्हें बचपन में ही मौत आ जाती!''

हमारे नगर में पुलिस थी, परंतु उसका काम तो केवल बपतिस्मा के अवसरों पर ही उपस्थित रहना होता था। ऐसे अवसरों पर वे अव्यवस्था में हस्तक्षेप न करके विनीत और मौन अतिथि की भूमिका निभाते थे। यास की चीजों की

लूट को देखकर और अपने गुस्से तथा घृणा को काबू में न रखकर (वह मूर्ख शराबी हो चुका था, इसलिए उसको अपने किए की सजा मिलनी ही चाहिए) मेरे पिता स्वार्थरहित ढंग से भीड़ में कूद पड़े। एक ही क्षण में वहाँ मेरे पिता और यास ही रह गए। यास ने हाथ में हजामत का भद्दा डिब्बा पकड़ा हुआ था। एक-दो क्षण हैरानी में निकले, असहाय स्थिति में यास ने अपनी भौंहें उठाईं और एकाएक अपने आपको उनके घुटनों पर फेंक दिया—''मालिक, मालिक! उन्होंने मेरे साथ क्या किया है? मेरे प्यारे मालिक!''

''गोदाम जाओ!'' मेरे पिता ने यास को, जो उनके कोट के पल्लू को पकड़कर चूम रहा था, धकेलकर गुस्से में कहा—''जाओ, गोदाम में जाकर सो रहो! और कल तक तुम्हारा चिह्न यहाँ नजर नहीं आना चाहिए।'' आज्ञानुसार यास गोदाम में चला गया और फिर इसके लिए शराबीपन के वे पीड़ादायी घंटे शुरू हुए, जिनको पछतावे की पीड़ा ने असीमता से बुरा बना दिया था। वह अपना चेहरा नीचा किए और सिर को हथेलियों पर थामे लेटा रहा। उसकी दृष्टि उसके सामने एक बिंदु पर टिकी थी। वह अच्छी तरह से जानता था कि उस क्षण घर में क्या हो रहा है। उसने स्पष्ट रूप से देखा कि हम उसके पक्ष में किस प्रकार वकालत कर रहे हैं और पिता किस अशांति से अपना हाथ हिला रहे हैं। वह पूर्णतया जानता था कि इस बार पिता को प्रेरित नहीं किया जा सकता है।

समय-समय पर हम विस्मय से गोदाम के दरवाजे पर अंदर से आती हुई कराहने और सिसकने की आवाजों को सुनते रहे।

निराशा और उदासीनता के ऐसे अवसरों पर यास से मिलना बाऊटन अपना नैतिक कर्तव्य समझता था। बुद्धिमान कुत्ता जानता था कि उदासी के ऐसे सामान्य क्षणों में यास कभी भी जान-पहचान नहीं दिखाएगा। इसी कारण, जब भी वह किसी कठोर नौकर को दरवाजे से बाहर निकालता तो बाऊटन हमेशा किसी दूर की चीज को देखने का बहाना करता या फिर मक्खी को पकड़ने की चिंता में व्यस्त नजर आता था। एक बात मेरे लिए हमेशा पहेली बनी रही, हम प्राय: बाऊटन को प्यार करते और खिलाते थे, उसके बालों से काँटे निकालते थे, जिसको कष्ट होते हुए भी वह चुपचाप सहन करता था। ऐसे अवसरों पर हम कभी-कभी उसकी ठंडी-गीली नाक का चुंबन भी लेते थे, फिर भी उसकी सारी सहानुभूति और प्यार यास के लिए था, जिससे उसको मुक्कों के सिवा कुछ नहीं मिलता था। आह, अब उस दयाहीन अनुभव ने मुझे चीजों को ध्यान से परखना सिखा दिया था। मैंने अनुमान लगाया कि बाऊटन का यास से लगाव इतना रहस्यपूर्ण नहीं था। यह मैं नहीं था बल्कि यास था, जो उसे रात के खाने से बची-खुची चीजों की प्लेटें दिया करता था।

शांति के समय बाऊटन कभी भी यास की कृपा को उकसाने में नहीं चूकता था, परंतु संताप के दिनों में वह साहसी ढंग से गोदाम में जाता और लंबे लेटे हुए यास के पास बैठ जाता था; कोने की तरफ घूरता और सहानुभूति से भारी-भारी साँसें लेना आरंभ कर देता था। यदि इससे भी सहायता न मिलती तो बाऊटन अपने रक्षक के मुँह और हाथों को चाटने लगता था—पहले थोड़ा डरते हुए और बाद में साहसी ढंग से। अंतत: यास सिसकते हुए अपनी बाँहें बाऊटन के गले में डाल देता और बाऊटन धीरे-धीरे कराहना शुरू कर देता। शीघ्र ही दोनों आवाजें मिलकर एक अजीब और हृदयस्पर्शी सहगान बन जाती थीं।

अगले दिन प्रात:काल यास घर में आया। वह उदास था और अपनी आँखें उठा नहीं सकता था। मेरे पिता के प्रकट होने से पहले ही उसने फर्श और फर्नीचर को चमकाकर रख दिया था। मेरे पिता के आ जाने के खयाल ने उसे कँपा दिया था, परंतु मेरे पिता प्रेरित नहीं हुए। उन्होंने यास का पासपोर्ट और वेतन उसे देकर आज्ञा दी कि जितनी जल्दी हो सके, रसोई साफ कर दे। प्रार्थना और विनती अप्रभावित रहीं।

तब यास ने अपनी अंतिम चाल चली।

‘‘आप वास्तव में चाहते हैं कि मैं चला जाऊँ, मालिक?’’

‘‘हाँ, और शीघ्र।’’

‘‘ठीक है, मैं नहीं जाऊँगा। आप मुझे बाहर फेंक सकते हैं, परंतु मेरे बिना आप सब मक्खियों की तरह मर जाएँगे—मैं नहीं जाऊँगा।’’

‘‘पुलिस तुम्हें भेजेगी।’’

‘‘मुझे भेजेगी...?’’ यास ने व्याकुल होकर पूछा, ‘‘ठीक है, तो उन्हें भेजने दो। सारा नगर देखेगा कि बीस साल की आपकी विश्वसनीय सेवा के बाद यास को किस तरह थाने ले जाया जा रहा है। ले जाएँ मुझे। मुझे नहीं श्रीमान्, शर्म आपको आएगी!’’

और यास वास्तव में नहीं गया; धमकियों से प्रभावित नहीं हुआ। उनकी ओर ध्यान न देते हुए वह निरंतर अपने काम में जुटा रहा और नष्ट हुए समय को पूरा करता रहा। रात में सोने के लिए रसोई में नहीं गया, बल्कि मतस्का की घुड़साल में ही सो रहा। घोड़ा सारी रात भूमि पर पैर मारता रहा और डरता रहा कि कहीं उसका पैर यास पर न पड़ जाए। मेरे पिता का स्वभाव अच्छा था—आलसी पुरुष, आसपास की वस्तुओं और अपनी आदतों के दास—सायंकाल तक उन्होंने यास को क्षमा कर दिया।

अपने ढंग से यास काफी सुंदर था—काला, चिंताकुल, छोटा रूसी। लड़कियाँ उसे देखती थीं, भले ही उनमें से कोई भी चुलबुलेपन से उसे कुहनी मारने या उत्साही मुसकराहट देने का साहस नहीं करती थी। वह बहुत घमंडी था और स्त्री जाति के लिए ठंडी घृणा रखता था। इसी प्रकार पारिवारिक जीवन का भी उसके लिए कोई आकर्षण नहीं था। ‘‘जब भी कोई महिला झोंपड़ी में आती है, ’’ वह नाक चढ़ाकर कहता—‘‘तो हवा तुरंत गंदी हो जाती है।’’ एक बार उसने किसी तरह से इस दिशा में कदम उठाया और हमें अत्यधिक विस्मित कर दिया।

एक सायंकाल जब हम चाय पी रहे थे, यास शांत, परंतु अत्यधिक उत्तेजना से डाइनिंग-रूम में आया और अपने कंधे के ऊपर से गुप्त रीति से संकेत करता हुआ बोला, ‘‘क्या यह अंदर आ सकती है?’’

‘‘वहाँ कौन है?’’ पिता ने पूछा, ‘‘हाँ-हाँ, उसे अंदर आने दो।’’ आशा की स्थिति में हमने अपनी दृष्टि दरवाजे पर जमा दी, जिसमें से एक अजनबी महिला प्रकट हुई। वह कम-से-कम पचास वर्षीय, फटे कपड़े पहने, शराब पिए हुए एक सनकी महिला थी।

‘‘हमें अपना आशीर्वाद दीजिए, मालिक, हम विवाह करना चाहते हैं।’’ यास ने उनके घुटनों पर गिरते हुए कहा।

‘‘झुक जा, ओ मूर्ख!’’ उसने महिला का बाजू खींचते हुए कहा।

मेरे पिता बहुत हैरान हुए और कुछ देर के बाद स्थिति को समझ पाए। काफी देर तक वह यास को समझाते रहे कि एक पागल आदमी ही ऐसी औरत से विवाह करेगा। यास झुके घुटनों पर खड़ा चुपचाप सुनता रहा; सनकी औरत भी उठी नहीं।

‘‘तब मुझे विवाह नहीं करने देंगे, मालिक?’’ यास ने अंततः पूछा।

‘‘नहीं!’’ पिता ने उत्तर दिया—‘‘और इससे अधिक मुझे विश्वास है कि तुम अपने आप नहीं करोगे।’’

‘‘चलिए, ऐसे ही सही, ’’ यास ने स्थिरता से कहा, ‘‘उठो, मूर्ख औरत!’’ उसने औरत से कहा, ‘‘तुमने सुना, मालिक ने क्या कहा है? चलो, जाओ।’’ इन शब्दों के साथ आकस्मिक अभ्यागत को गले से पकड़कर उसके साथ खानेवाले कमरे में लुप्त हो गया।

विवाह के लिए यास का केवल यही प्रयास था। हर एक ने उसको अपने-अपने ढंग से वर्णित किया, परंतु कोई भी उसके आशय का अंदाजा लगाने से आगे नहीं सोच सका; और जब भी कोई पूछता तो यास गुस्से में हाथ

हिलाकर उसे एक तरफ कर देता था।

इससे अधिक रहस्यमयी और आकस्मिक उसकी मौत थी। वह इतनी अचानक और अगम्य ढंग से हुई कि उसका यास की जीवन संबंधी घटनाओं से कोई संबंध नहीं था और मैं उसे लिखने में अशिष्टता का आभास करता हूँ। मैं जिम्मा लेता हूँ कि जो कुछ मैंने बताया है, वह न केवल घटा ही है, बल्कि उसका जरा सा भाग भी उसकी छाप छोड़ने के लिए अतिशयोक्ति के रूप में नहीं लिया गया।

एक दिन स्टेशन, जो हमारे नगर से तीन मील दूर था, पर एक व्यक्ति ढंग से कपड़े पहने—वह बूढ़ा नहीं था, पाखाने में लटका पाया गया। उसी दिन आत्महत्या को देखने के लिए यास ने आज्ञा माँगी। वह लगभग चार घंटे के बाद लौटा और सीधा खानेवाले कमरे में गया। वहाँ मिलनेवाले बैठे थे और यह दरवाजे में रुक गया। गोदाम में पश्चात्ताप करने के बाद वह पूर्णतया संयमी हो गया था।

''क्या चाहते हो तुम?'' माँ ने पूछा

''हा, हा, हा!'' वह फूट पड़ा—''उसकी जबान बाहर लटक रही थी, एक भद्र पुरुष की जबान...।'' मेरे पिता ने उसे तुरंत रसोई में जाने की आज्ञा दी। मिलने आए लोगों ने यास की असामान्यताओं की चर्चा की और शीघ्र ही घटना भूल गए।

अगले दिन लगभग आठ बजे शाम को वह नर्सरी से गुजरा, मेरी छोटी बहन के पास गया और उसको चूमा।

''अलविदा!'' उसने उसके बालों को सहलाते हुए कहा।

''अलविदा, यास!'' अपनी गुड़िया से बिना नजर उठाए उसने उत्तर दिया।

आधे घंटे के बाद म्योका भागती हुई मेरे पिता के अध्ययन-कक्ष में आई—पीली और काँपती हुई—''श्री...मान्, वह गैरट में...यास...।'' वह अचेत होकर गिर गई।

गैरट में पतली रस्सी से यास लटक रहा था।

जब मजिस्ट्रेट ने बावरची से जिरह की तो पता चला कि मौतवाले दिन यास का व्यवहार अजीब था।

''वह मुँह देखनेवाले शीशे के सामने खड़ा हुआ, '' उसने कहा। फिर दोनों हाथों से अपना गला दबाया, जब तक उसका चेहरा लाल नहीं हो गया और उसकी जबान मुँह से बाहर नहीं आ गई—आँखें सिर से बाहर नहीं निकल गईं!...वह स्पष्टतया यह देखने की कोशिश कर रहा था कि लटकने के बाद वह कैसा लगेगा!''

मजिस्ट्रेट ने लिख दिया कि आत्महत्या दिमाग की खराबी के कारण की थी।

यास के दफनाने के एक दिन बाद—ऐसी जगह में जो इस प्रकार के मामलों के लिए जंगल की ढलान पर आरक्षित थी—बाऊटन का कहीं भी पता नहीं चला। ऐसा लगता था कि वफादार कुत्ता यास की कब्र की ओर चला गया था और अपने प्यारे मित्र के लिए कराहता और शोक प्रकट करता हुआ उसके पास ही लेटा रहा तथा उसके बाद वह बिना कोई चिह्न छोड़े, लुप्त हो गया।

अब मैं लगभग बूढ़ा आदमी जब कभी अपने बीते समय का पुनरावलोकन करता हूँ तो मेरा ध्यान यास की ओर जाता है और हर बार यही विचार आता है—क्या अद्‌भुत आत्मा थी—ईमानदार, शुद्‌ध, परस्पर विरोधी, भद्‌दा; फिर भी बड़ा—यास के शरीर में एक वास्तविक स्लावी आत्मा!

❑

गिरगिट

—एनटोन चेखव

पुलिस सारजेंट अचुमीलोफ अपना नया चोगा पहने और बगल में गठरी दबाए सड़क के आरपार चल रहा था। उसके पीछे लाल बालोंवाले सिपाही जब्त किए गए करौंदों से किनारों तक भरी झरनी ले जा रहे थे। हर तरफ खामोशी छाई हुई थी। सड़क पर एक भी व्यक्ति नहीं था। दुकानों और सार्वजनिक घरों के खुले दरवाजे एवं खिड़कियाँ परमात्मा की दुनिया को भूखा और शोकपूर्ण देख रहे हैं, यहाँ तक कि भिखारी भी इधर-उधर दिखाई नहीं देते।

एकाएक अचुमीलोफ ने किसी को चिल्लाते सुना—

''तो तुम काटना चाहते हो? तुम शापित जंगली जानवर! बच्चो, इसे काटने मत दो। आज कुत्तों को काटने नहीं दिया जाता, रोको उसे।''

कुत्ते का भौंकना सुनाई देता है। अचुमीलोफ ने उधर देखा, जिधर से आवाज आ रही थी। उसने एक कुत्ते को पिंचूगिन के लकड़ी के बाड़े से भागकर अपनी तीन टाँगों पर लंगड़ाते हुए देखा। एक आदमी माँड़ लगी केलिको कमीज और खुले बटनोंवाली वास्कट पहने उसका पीछा कर रहा था। आदमी कुत्ते के पाँव के बिलकुल निकट था। एकाएक वह आगे की ओर झुककर भूमि पर गिर गया और उसने कुत्ते के पिछले पाँव को पकड़ लिया। पुन: कुत्ते का भौंकना और चिल्लाहट सुनाई दी—''उसे काटने मत दो।'' दुकानों की खिड़कियों से निद्रालु चेहरे प्रकट हुए और लकड़ी के बाड़े में शीघ्रता से लोगों का जमघट लग गया; जैसे वे उस भूमि में से ही उगे हों!

''क्या तुम सोचते हो कि यह उपद्रव हो सकता है?'' सिपाही ने पूछा।

अचुमीलोफ बाएँ मुड़ा और लोगों की भीड़ की तरफ गया। लकड़ी के बाड़े के दरवाजे के निकट उसने खुले बटनोंवाली वास्कटवाले आदमी को अपना दायाँ हाथ थामे देखा। उसकी अंगुली से रक्तस्राव हो रहा था। उसके आधे नशीले चेहरे पर ऐसे भाव हैं जैसे वह कह रहा हो—''ठहरो, मैं तुमसे हरजाना वसूल करूँगा, दुरात्मा!'' उसकी अंगुली अपने आपमें विजय-चिह्न प्रतीत होती थी। अचुमीलोफ को लगा कि यह सुनार खरीयुकिन है। भीड़ के मध्य में अपने अगले पैर फैलाए और सिर से पाँव तक काँपते हुए, तीखे थूथन के साथ, पीठ पर पीला बिंदु लिये सारे झगड़े की जड़ बैठा है—एक युवा सफेद शिकारी कुत्ता। उसकी जलमयी आँखों में घृणा का भाव है।

''मामला क्या है?'' अचुमीलोफ ने भीड़ में से रास्ता बनाते हुए पूछा। ''यहाँ किसलिए हो? तुम्हारी अंगुली को क्या हुआ? कौन चीख-चिल्ला रहा था?''

''मैं बिना किसी को छुए डेमिट्री डेमिट्रीएविच से जंगल में मिलने जा रहा था, श्रीमान्!'' खरीयुकिन ने अपनी मुट्ठी पर खाँसते हुए कहा, ''जब एकाएक इस दुष्ट कुत्ते ने मेरी अंगुली काट ली। मुझे क्षमा करें। मैं कामकाजी आदमी हूँ और विशेष प्रकार का काम करता हूँ; किसी-न-किसी को मुझे भुगतान करना पड़ेगा, क्योंकि हो सकता है कि एक सप्ताह तक मैं इस अंगुली का उपयोग न कर सकूँ। जानवरों से बचने के लिए, श्रीमान्, कोई कानून नहीं है! यदि ये सभी काटना शुरू कर दें तो उससे तो यही अच्छा रहेगा कि इस दुनिया में ही न रहा जाए!''

''अब!'' अचुमीलोफ ने अपनी भौंहें ऊपर-नीचे करके कठोरता से पूछा, ''यह कुत्ता किसका है? मैं इस मामले को जाने नहीं दूँगा। मैं तुम लोगों को सिखाऊँगा कि कुत्ते इस तरह खुले नहीं छोड़ने चाहिए। जो लोग नियमों का पालन नहीं करते, उनके लिए कुछ-न-कुछ करने का समय आ गया है। जब मैं उस दुरात्मा को दंड दूँगा तो उसे

पता चलेगा कि कुत्तों को घूमने के लिए खुला छोड़ने का क्या अर्थ होता है। मैं उसे दिखाऊँगा कि मैं कौन हूँ!'' सिपाही की ओर मुड़कर उसने कहा, ''येलेड्रिन! पता लगाओ कि यह कुत्ता किसका है और रिपोर्ट पेश करो। यह कुत्ता मार दिया जाएगा। इस काम को जल्दी करो। संभवत: यह कुत्ता पागल है। किसका कुत्ता है यह?''

''यह जनरल यीगेलोफ का कुत्ता प्रतीत होता है।'' भीड़ में से किसी ने कहा।

''जनरल यीगेलोफ का? ह...म्म! येलेड्रिन, मेरा चोगा उतारो, अत्यंत गरमी है! संभवत: वर्षा होनेवाली है। एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही—यह कुत्ता कैसे काट सकता है?'' अचुमीलोफ ने खरीयुकिन की ओर मुड़ते हुए कहा, ''वह तुम्हारी अंगुली तक पहुँच नहीं सकता। यह इतना छोटा कुत्ता है और तुम इतने बड़े आदमी हो। तुमने संभवत: अपनी अंगुली को स्वयं नाखून से फाड़ लिया है और उसके पश्चात् तुम्हें कुत्ते का खयाल आया। तुम पैसा बटोरने का प्रयत्न कर रहे हो। मैं तुम लोगों को जानता हूँ, तुम पिशाच हो!''

''इसने कुत्ते के मुँह पर सिगरेट फेंककर उससे छेड़खानी की, परंतु कुत्ता मूर्ख नहीं है, वह इसको जान गया, श्रीमान्!''

''तुम झूठ बोलते हो, तिरछी आँखवाले! इसने नहीं देखा, श्रीमान्। यह झूठ क्यों बोल रहा है? तुम बता सकते हो कि यह आदमी झूठ बोल रहा है या अपनी अंतरात्मा के अनुसार बात कर रहा है, जैसे परमात्मा के सामने हो। न्यायाधीश को निर्णय करने दो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ या सच! आजकल के कानून के अनुसार हम सब बराबर हैं। मेरा एक भाई सेना में काम करता है। यदि तुम...।''

''बकवाद बंद करो।''

''नहीं, यह जनरल का नहीं है।'' सिपाही ने ध्यान से देखा—''जनरल के पास इस प्रकार के कुत्ते नहीं हैं। उनके कुत्ते अधिकतर बैठनेवाले हैं।''

''क्या तुम्हें पक्का विश्वास है?''

''हाँ, पूरा विश्वास है।''

''मैं भी इसे जानता हूँ। जनरल के पास कीमती और अच्छी नस्ल के कुत्ते हैं; परंतु यह? पिशाच जानता है कि यह क्या है? इसके न बाल हैं और न ही शक्ल-सूरत—केवल सामान्य कुत्ता। क्या कोई ऐसा कुत्ता पाल सकता है? तुम लोगों का क्या खयाल है? यदि ऐसा कुत्ता पीटर्सबर्ग या मॉस्को में नजर आता तो जानते हो, क्या होता? वे कानून की तरफ नहीं देखते, बल्कि...यहीं अंत हो जाता। खरीयुकिन, तुम्हें पीड़ा हुई है; मैं मामले को ऐसे ही जाने नहीं दूँगा। मुझे उनको सबक सिखाना होगा। यही समय है इसका।''

''परंतु यह संभवत: जनरल का ही कुत्ता है।'' सिपाही ने थोड़ा सोचकर कहा, ''यह उसके थुथने पर तो लिखा नहीं है। मैंने उस दिन ऐसा ही कुत्ता जनरल के बाड़े में देखा था।''

''येलेड्रिन, चोगा पहनाने में मेरी सहायता करो; यहाँ हवा के झोंके आ रहे हैं, मैं काँप रहा हूँ। कुत्ते को जनरल के पास ले जाओ और वहाँ पता करो। उससे कहना कि मैंने इसे ढूँढ़ा है और उसके पास भेजा है। उससे यह भी कहना कि कुत्ते को सड़क पर न आने दे। संभवत: यह कीमती कुत्ता है; यदि हर कोई इसकी नाक पर सिगरेट फेंकने लगा तो यह बरबाद हो जाएगा। कुत्ता एक कोमल जीव है। और तुम, बुद्धिहीन प्राणी, अपना हाथ नीचे करो; तुम्हें अपनी भद्दी अंगुली की नुमाइश करना जरूरी नहीं। यह तुम्हारी अपनी गलती है।''

''जनरल का बावरची यहाँ है। इससे पूछते हैं।''

''सुने, प्रोखोर, एक मिनट के लिए यहाँ आओ। देखो, यह तुम्हारा कुत्ता है क्या?''

''यह कुत्ता? हमने ऐसा कुत्ता कभी नहीं पाला।''

''यह प्रश्न पूछे जाने योग्य नहीं है, '' अचुमीलोफ ने कहा, ''यह आवारा कुत्ता है। इससे अधिक कहने के लिए कुछ नहीं है। यदि मैं कहता हुँ कि यह आवारा कुत्ता है तो आवारा है; इसको मार दिया जाएगा।''

''यह हमारा नहीं है, '' प्रोखोर ने कहना जारी रखा—''यह कुत्ता जनरल के भाई का है, जो अभी-अभी आया है। मेरा मालिक शिकारी कुत्तों का शौकीन नहीं है, परंतु उसका भाई ऐसा है।''

''तो उसका भाई व्लेडीमीर डवेनोविच पहुँच गया है?'' अचुमीलोफ ने पूछा और आनंदपूर्वक मुसकराहट उसके चेहरे पर फैल गई—''बहुत ठीक, मुझे इसका पता नहीं था। क्या वह यहाँ मिलने आया है?''

''हाँ, मिलने ही आया है।''

''ठीक है, ठीक है, संभवत: वह अपने भाई के लिए उदास हो गया होगा। मुझे इसका पता नहीं है। तो तुम कहते हो कि कुत्ता उसका है? मैं अति प्रसन्न हूँ। इसे ले जाओ—एक छोटा, अच्छा कुत्ता! एक तेज, छोटा और काटनेवाला कुत्ता और इसने उस व्यक्ति की अंगुली को पकड़ा है। हा...हा...हा! मेरी प्यारी नन्ही वस्तु, तुम काँप क्यों रहे हो? वह आदमी खलनायक है!'' प्रोखोर कुत्ते को बुलाता है और उसको लेकर लकड़ी के बाड़े से चला जाता है। लोगों की भीड़ खरीयुकिन की हँसी उड़ाती है।

''मैं किसी दिन तुम्हें पकड़ूँगा!'' अचुमीलोफ ने उसे धमकाया और अपने आपको अपने नए चोगे में लपेटकर सड़क के आरपार चलना जारी रखा।

❑

दृश्य चित्रकार का प्रेम

—स्कीटालिट्ज (ए. पेट्रोव)

दृश्य चित्रकार कोस्तोविस्की मौज-मस्ती के लिए ऐसे समय गया, जब उसे जाना नहीं चाहिए था। एक कौतुकपूर्ण नाटक प्रस्तुत करने के लिए तैयारियाँ जोरों पर थीं, जिसकी सफलता मंच की सुंदरता पर निर्भर थी। सारे शहर में बड़े-बड़े विज्ञापन-पत्र लगाए जा चुके थे। विभिन्न कामों को पूरा करना और जल्दी से पूरा करना अब जरूरी हो गया था और नए दृश्य को भी चित्रित करना था, परंतु वही हुआ जिसका डर मंच-प्रबंधक को लंबे समय से था—कोस्तोविस्की शराब पीने चला गया था।

ऐसा हमेशा उसी समय होता था जब उसकी जरूरत होती थी; जैसे कोई प्रेतात्मा आकर उस समय उसे उकसाती हो और निषिद्ध शराब जैसे उसे पहले से अधिक प्रलोभन देती हो। उसने पापकर्म के एहसास का अनुभव करने के लिए अजेय इच्छा को महसूस किया—हर एक की इच्छा के विरुद्ध काम करना, अपने हितों के विरुद्ध काम करना; हाँ, केवल बुरे व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, जिसने इस समय उसको बुरी तरह से काबू किया हुआ था।

शक्तिशाली प्रभावों के बिना ऐसे प्रतीत होता था कि उसका चातुरी से भरा स्वभाव ठहर नहीं सकता था और वह उनको केवल शराब पीने में ही ढूँढता था। उसके अति आनंद लेनेवाले दिन हमेशा रुचिकर मुठभेड़ों और अजीब साहसिक कामों से भरे होते थे, जो केवल उसी के लिए अनोखे थे, परंतु होश में आते ही वह संतुलित हो अपने काम में प्रचंड शक्ति के साथ जुट जाता था। ऐसे समय में उसके आसपास की हर वस्तु उत्तेजना का ज्वर-ताप बन जाती थी और वह स्वयं प्रेरणा की आग में जलता था। केवल इसलिए कि वह एक विलक्षण दृश्य बनानेवाला चित्रकार था और अपने कौशल में अपूर्व ज्ञान रखता था, उस काम से निकाला नहीं गया था। उसने कंपनी को अपने अपवादों, साहसी कामों, अपनी असावधानी, भद्दे कपड़ों और नीच आकृति से बुरी तरह अपमानित किया; परंतु इन सबके होते हुए भी उसके ब्रश से अत्यंत उत्कृष्ट और कारीगरी से बनाए गए दृश्य उभरते थे, जिसके लिए जनता उसको प्राय: रंगमंच पर बुलाया करती थी और जिसके बारे में बाद में प्रेसवाले भी लिखते थे।

परदे के पीछे कंपनी के सदस्य अपने आपको कोस्तोविस्की से पृथक् रखतेथे और कोई भी उससे अंतरंग संबंध रखना नहीं चाहता था। सामूहिक गान करनेवाले भी शराब पीते थे, परंतु वे अपने आपको सामान्य कारीगर, चित्रकार की अपेक्षा ऊँची श्रेणीवाले मानते थे और उसे अपने समाज में लेना नहीं चाहते थे। सामूहिक गान करनेवाली लड़कियाँ और नर्तकियाँ उसे नपुंसक समझती थीं तथा उसकी ओर मुँह बनाकर घृणा से देखती थीं। वह भी अपनी तरफ से इनमें कोई रुचि नहीं लेता था।

वह तो केवल बैले नर्तकी जूलिया की ही प्रशंसा करता था—और उसे केवल कलाकार के रूप में प्यार करता था। वह रोशनी की किरणों से ढके हुए मंच पर नाच रही थी। यह रोशनी उसने स्वयं अपनी कुशलता से लगाई थी। वह उसके सुंदर छोटे सिर को घूमते हुए पसंद करता था, उसकी प्रशंसा करता था। वह उसपर विशेषकर तेज किरण डालकर उसको दूसरी नर्तकियों से जुदा करता था। वास्तविक जीवन में वह उससे बात नहीं करता था और वह भी बहाना बनाती थी कि उसने उसकी ओर कभी भी ध्यान नहीं दिया।

मित्रों के प्रेम और कंपनी में किसी की सहानुभूति के बिना एक अजीब एकांत में रहते हुए—परंतु साथ-ही-साथ कंपनी के लिए अति आवश्यक माने जाने के कारण—उसे बहुत पीड़ा हुई, अत: वह शराब पीने लगा; जैसाकि इस समय हुआ, जब उसकी अत्यंत आवश्यकता थी।

नाटक के मंचनपूर्व अभ्यास के बाद मंच पर खड़े मंच-प्रबंधक ने हिब्रू प्रकार के काले कारोबारी प्रबंधक से कोस्तोविस्की के बारे में बातचीत की।

मंच-प्रबंधक के चौड़े, मोटे चेहरे से क्रोध, चिंता और शोक के चिह्न टपक रहे थे।

''ठीक है, कृपया मुझे जरा बताओ!'' वह रोते हुए बोला, जबकि उसके दिल में तूफान उमड़ रहा था—''अब मैं करूँ तो क्या करूँ? क्या करूँ इस समय?''

और उसने असहाय रूप से अपने पेट पर, हाथ पर हाथ रखकर क्रोध और शोकपूर्ण दृष्टि से अपने साथी की ओर देखा।

''गंदगी, बस यही कुछ, '' कार्यकारी प्रबंधक ने उत्तर दिया—''जब हम यहाँ आ रहे थे तो उसने स्टीमर पर पीना शुरू किया और अभी तक होश में नहीं आया। और जानते हो कि यहाँ आते हुए वह सागर में गिर गया था। वह मजाक था! मैं एकाएक चीख से जाग गया। मैं अपने पाँव पर उछला और पूछा, 'कौन है?' 'कोस्तोविस्की।' 'आह, कोस्तोविस्की!' मैंने सोचा कि वही था, परंतु वह कोई और था। मैं अपने बिस्तर पर चला गया जैसे कुछ हुआ ही नहीं था, क्योंकि मेरी राय में कोस्तोविस्की आदमी नहीं, सूअर है।''

''वह पानी में गिरा कैसे? क्या पिए हुए था?''

''वस्तुत: वह पिए हुए था। वह डैक पर सोया हुआ था और भूल गया था। स्टीमर आकस्मिक रूप से एक ओर झुक गया और वह घूम गया।''

''हा, हा, हो, हो, हो!'' मंच-प्रबंधक की गहरी हँसी गूँज उठी।

''ही, ही, ही, ही, ही!'' कार्यकारी प्रबंधक ने अपनी पतली, तेज हँसी से साथ दिया—''परंतु इससे भी अधिक मजे की बात यह है कि सागर ऐसों को नहीं अपनाता; पूर्व इसके पहले कि वह पूरी तरह जागता उसको बाहर निकाला गया। वास्तव में एक अजीब घटना! यहाँ तक कि ऐसे दुष्ट को सागर ने भी लेने से इनकार कर दिया।''

''परंतु वह अब कहाँ है?'' मंच प्रबंधक ने हँसी बंद करके तथा कोस्तोविस्की की सागर की दुर्घटना सुनकर नरम होते हुए पूछा।

''यहीं ड्रेसिंग-रूम में अपने आपको थोड़ा होश में ला रहा है।'' उन्होंने उसे शहर भर में तलाश किया और अंत में अपने मित्र को एक शराबखाने में कुछ नौसिखियों के साथ हाथापाई करते हुए देखा। इन्होंने उसकी मुक्केबाजी को समाप्त किए बिना उनसे अलग कर दिया और अपने साथ वहाँ से ले आए। अब वह अपनी चोट खाई सुंदर आँख को सेंक रहा था।

''यहाँ लाओ इस दुष्ट को!''

युवक मंच के पार तेजी से दौड़ा और दृश्यों के पीछे लुप्त हो गया। तुरंत खाली थिएटर तीखी आवाजों से प्रतिध्वनित हो गया।

''कोस्तोविस्की, कोस्तोविस्की!''

''वह तुरंत आ जाएगा।'' युवक ने लौटकर कहा और आँख मारी, मानो कहना चाहता हो—''अब तुरंत मजा आएगा।''

धीमे और अस्थिर कदम आते हुए सुनाई दिए और मंच पर वह व्यक्ति प्रकट हुआ, जो क्रोधावस्था और दुर्भावों का कारण बना था तथा जिसको सागर ने भी स्वीकार नहीं किया था।

वह मध्यम कद का, ऐंठा हुआ, मांसल, कुछ-कुछ गोल कंधोंवाला था। उसने रोगन के धब्बोंवाली भद्दी नीली कमीज पहन रखी थी और उसके ऊपर चमड़े की पेटी बाँधी हुई थी। उसकी पतलून रोगन के धब्बों से छितरा गई

थी और जिसको उसने लंबे जूतों में डाला हुआ था। गोरिल्ले की तरह लंबे, मांसल हाथों के साथ कोस्तोविस्की की आकृति एक सामान्य कारीगर जैसी थी; संभवत: उसके हाथ अधिक शक्तिशाली थे। उसका चेहरा सुंदरता से दूर, परंतु विचित्र था—गालों की ऊँची हड्डी और लंबी लाल मूँछें उसकी शक्ति के प्रतीक थे। सिकोड़ी हुई भौंहों के बीच विषादयुक्त और साथ-ही-साथ अच्छे स्वभाव के साथ देखती हुई बड़ी-बड़ी नीली आँखों का जोड़ा था। प्रचंडता और शक्ति की छाप उसके चेहरे की मुख्य विलक्षणता थी। उसकी बाईं आँख बड़े मलिनीकरण से सुशोभित थी—जो ठीक निशाने पर लगे मुक्के का निशान था। उसके रूखे लाल बाल विद्रोही रूप से चारों ओर फैले हुए थे। कुल मिलाकर कोस्तोविस्की एक साहसी-जंगली की आकृति प्रस्तुत करता था।

उसने स्वाभिमान से भरकर, किंतु लज्जित होकर अपना सिर झुकाया, मगर अपना हाथ पेश नहीं किया।

''तुम अब क्या करना चाहते हो, कोस्तोविस्की?'' मंच-प्रबंधक शांत स्वर में बोला, ''कल के लिए नाटक की घोषणा हो चुकी है, परंतु हमें इसे टालना पड़ेगा। यह सारा कष्ट मुझे किस बात के लिए दे रहे हो? क्या यह तुम्हारे लिए उचित है? तुम शराब क्यों पीते हो? जरा देखो, आँखों के नीचे यह कौन सा गहना लिये फिरते हो! तुम्हें अपने आपपर शर्म आनी चाहिए!''

कोस्तोविस्की एक कदम पीछे हट गया और अपनी लंबी अंगुलियों को अपनी लटों में फेरते हुए हठी भाव से उत्तेजित हो गया।

''मार्क लूकिच!'' उसने रूक्ष, परंतु प्रभावशाली आवाज में पुकारा—''मैंने पी, यह सच है! परंतु अब—सब जरूरी काम कर दूँगा। आज शनिवार है और कोई खेल नहीं होगा। मैं कल तक यहाँ से बाहर नहीं जाऊँगा। सारी रात काम करूँगा...मैं...मैं...हे महाप्रभु!''

कोस्तोविस्की ने अपने हाथ हवा में हिलाए, ऐसा प्रतीत हुआ कि एकाएक उसने उद्दंड शक्ति को पा लिया था। उसने प्रायश्चित्त के लिए काम करने की इच्छा व्यक्त की।

''परंतु क्या तुम जानते हो कि करना क्या है? बिलकुल नया दृश्य बनाना होगा और अच्छी तरह बनाना होगा। समझे या नहीं?''

''मैं उसको अच्छी तरह बनाऊँगा, डरने की कोई बात नहीं।'' कोस्तोविस्की ने साहसपूर्वक और पुन: अपने रूक्ष बालों में अपनी दसों अंगुलियाँ फेरते हुए कहा। फिर मंच पर कुछ क्षण सोचते हुए चलकर मंच-प्रबंधक के सामने खड़ा हो गया।

''कृपया मुझे यह पूर्णतया बता दो कि किस प्रकार का दृश्य चाहते हो और यह किसके लिए चाहिए?'' उसने शांतिपूर्वक पूछा।

''तुम जानते हो, यह दूसरा अंक है! दो आदमी रात को बिना जोते हुए खेत में गुम हो गए हैं। यह स्थान भोथरा, अस्पष्ट और उजाड़ होना चाहिए। वे बुरी तरह भयभीत हैं और अलौकिक घटनाएँ घट रही हैं। तुम्हें इस प्रकार का मैदान चित्रित करना है, जिसमें हर चीज हो—दूरी का भाव, अँधेरा, बादल और स्पष्टतया इस प्रकार का कि देखते ही जनता के दिल में भय की लहर दौड़ जाए।''

''यह काफी है।'' कोस्तोविस्की ने टोका—''मैं मैदान बना दूँगा; मैं सारी रात लैंप की रोशनी में काम करूँगा और कल तैयार हो जाएगा। क्या तुम्हारे पास सामान है?''

''हर चीज तैयार है, जो भी काम के लिए जरूरी है।'' कार्यकारी प्रबंधक बोला।

परंतु कोस्तोविस्की पहले ही कलाकार की प्रेरणा अनुभव कर चुका था। उसने अपने विशिष्टों से मुँह मोड़ा और यह भी नहीं सोचा कि वे वहाँ उपस्थित थे और मंच के मध्य में खड़े थे। उसने अपनी अभिमानी आवाज में पुकारा

—

''पेवल! तुम उधर जाओ; वेनका! यहाँ तुम्हारे साथ; ओ लिवली! तुम उधर, शैतान के बच्चो, कोस्तोविस्की अब काम करना चाहता है।''

कारीगर पेवल और नौसिखिया वेनका, एक चालाक और झुका-झुका व्यक्ति, मंच के प्रति दृढ़ता से समर्पित, भागे हुए आए और तुरंत मंच पर काम में लग गए। उन्होंने परदे को फैलाया और रंग-रोगन तथा ब्रश लाए।

''ठीक है, '' कार्यकारी प्रबंधक ने मंच-प्रबंधक से कहा, ''परमात्मा को धन्यवाद है कि अंत में उसने होश संभाल लिया है। अब हमें खेल को टालने के लिए विवश नहीं होना पड़ेगा। आओ, चलें और खाना खाएँ; अब हमें उसके काम में बाधक नहीं होना चाहिए।''

सारी रात मंच पर तेज रोशनी रही और खाली थिएटर में कब्र-सा मौन छाया रहा। केवल कोस्तोविस्की के पैरों की आवाज थी। वह अपने लंबे ब्रश के साथ कभी परदे के उस तरफ, कभी इस तरफ लगातार आता-जाता था। हर तरफ रंग-रोगन की बाल्टियाँ और बरतन पड़े थे।

उसने अपने काम में लंबे-लंबे कदम भरे। अपनी आँख के नीचे नीले निशान के साथ, रंग लगे सूअर की तरह बाल और मूँछें लिये उसने अपने बड़े ब्रश के साथ दानव की तरह काम को पूरा किया। उसकी आँखें जल रही थीं और उसके चेहरे से प्रेरणा झलक रही थी। उसने निर्माण कर दिया।

दिन के ग्यारह बजे मंचनपूर्व अभ्यास के लिए एकत्र हुई सारी मंडली कोस्तोविस्की की निर्मित वस्तु के सामने आश्चर्य से मुँह खोले खड़ी थी। अभिनेता, सामूहिक गान करनेवाले स्त्री-पुरुष और सामूहिक नाच करनेवाले मंच से बड़े परदे को देख रहे थे। फिर उन्होंने मंच से नीचे उतरकर देखा और स्वतंत्र रूप से अपनी-अपनी राय दी। मंच की सारी पृष्ठभूमि को उस विशाल चित्र ने घेर रखा था। यह बिना जोता हुआ मैदान था। इसके एक किनारे पर बरडोक्स के वृक्ष और दूसरी और मैदानी घास लगी थी। इससे आगे आसपास उगी घास के बीचोबीच एक उजाड़ कब्र नजर आ रही थी और उसके आगे बिखरी उदासी। आश्चर्ययुक्त अपरिमित दृश्य के साथ भुथरा मैदान, परियों की कहानियों का मैदान, शूरवीरों के समय का मैदान—बिना किसी रास्ते के, उजाड़! देखनेवालों को ऐसा प्रतीत होता था कि प्रसिद्ध रूसी कहानी का शूरवीर इलिया मुशेमेटस अचानक मिट्टी के ढेर के पीछे से प्रकट होगा और जोर से चिल्लाएगा—'क्या मैदान में कोई जीवित आदमी है?' परंतु रूखा मैदान शांत था, अंधकारमय, भयंकर रूप से शांत था। आकाश के विपरीत अँधेरी कब्रों के ढेर और कुरूप, काले, झाड़ीदार बादल उमड़ते हुए अस्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। इन बादलों और कब्रों के ढेर का और इस मैदान के अपरिमित वृक्षों का अंत नहीं था। सारा चित्र अंधकारमय था और आत्मा को कष्ट देता था। ऐसा लगता था कि अभी-अभी कोई भयंकर घटना घटने वाली थी और कब्रों के ढेर तथा बादल इसके प्रतीक थे तथा एक तरह से उन्हें जीवित दिखाया गया था। यह सच था कि जब कोई कोस्तोविस्की के चित्र को पास से देखता था तो उसकी समझ में कुछ नहीं आता था—केवल बड़े ब्रश से की गई लीपा-पोती और मारे हुए छींटे दीख पड़ते थे—शीघ्र और तीक्ष्ण प्रहारों से अधिक कुछ नहीं, परंतु ज्यों ही देखनेवाला परदे से दूर जाता तो विशाल मैदान का चित्र साफ दिखाई देता था और उसको ध्यान से देखता था। सबसे अधिक वह अलौकिक डर की भावना से भर जाता था।

''ठीक है, इसकी बाबत तुम क्या कहते हो?'' भीड़ में भिनभिनाहट हुई—''प्रेत की तरह का कोस्तोविस्की! वास्तव में बुद्धिमान, चतुर! देखो तो, क्या आसुरी काम किया है!''

''यह तो कुछ भी नहीं है, '' उसने स्वाभाविक रूप से कहा, ''हम केवल कारीगर हैं; जब हम काम करते हैं तो काम करते हैं, परंतु जब हम आनंद मनाने में तत्पर होते हैं तो जी भरकर आनंद लेते हैं—हमें बनाया ही इस तरह

का गया है।''

वे उसपर हँसे, परंतु सात दिनों तक उसकी ही चर्चा करते रहे। उसे पहले कभी ऐसी सफलता नहीं मिली थी जैसी अब मिली।

उसने अपना काम जारी रखा। ऐसा लगा कि उसकी शक्ति अभी-अभी जागी हो। अब अभ्यास चल रहा था। उसने एक हिंदू मंदिर का चित्र बनाया, अपने सहायकों पर चिल्लाया और देवी प्रेरणा की गरमी में मंच-प्रबंधक की भी निंदा करने लगा, जब उसने इसका ध्यान किसी दूसरी तरफ लगाना चाहा था।

वह जंगली था, गैर-जिम्मेदार और महान् था!

पहले से अधिक गंदा और बिखरा हुआ वह मंच के पीछे अपने कमरे में अकड़ता हुआ गया; अत्यंत सुंदर, मनोहर मंदिर बनाया और प्रेरणा के आनंद में मस्त रहा। प्रेरणा से भरी निद्राहीन रात से उत्तेजित उसकी समस्त आकृति, उसकी शक्ति एवं योग्यता मूर्तिमत्ता थी; आँख के नीचे नीली मलिनता के साथ उसका पीला चेहरा, सूअर की तरह बाल और जलती आँखें, जो नीली किरणें छोड़ती प्रतीत होती थीं—इन सब चीजों से पता चलता था कि कोस्तोविस्की की प्रेरणा क्षणिक नहीं थी, बल्कि अनंत रोशनी में लंबे नैरंतर्य से बराबर जलती आ रही थी।

वह मंदिर बनाने में पूरी तरह से मग्न था। तभी उसने पास में एकाएक किसी के हलके कदमों को महसूस किया और जहाँ वह खड़ा था वहाँ अति उत्तम सुगंध फैल गई। वह पीछे मुड़ा—सामने जूलिया खड़ी थी।

वह सामूहिक नर्तकी की पोशाक पहने हुए थी, जो न के बराबर थी; क्योंकि उसको अभ्यास के लिए नाचना था। वह नन्ही सुंदर वस्तु थी। उसने लाल चुस्त कपड़े, सफेद साटन की स्लीपर और छोटी जाली की स्कर्ट पहनी हुई थी। उसकी ऊँची तथा दृढ़ छाती धैर्य और शांति से ऊपर-नीचे हो रही थी और उसका मलाई जैसा चेहरा मुसकरा रहा था। उसकी काली, बादाम जैसी शिथिल आँखें नम्रता और आशाजनक रूप से कोस्तोविस्की को देख रही थीं। वह नर्तकी की पोशाक में ऐसे लग रही थी मानो अभी-अभी परियों के देश से आई हो और ऐसे आदमी का अनुमान लगाना कठिन था, जो कोस्तोविस्की से इतना भिन्न हो, जितनी वह परी। उसमें विशिष्ट आकर्षण और मृदुता थी। वह उसके सामने विकल एवं घबराया हुआ खड़ा था और प्रसन्नतापूर्वक प्रशंसा से उसे घूर रहा था। उसने लंबे ब्रश को नीचा करके उसके पाँव के पास फर्श पर रख दिया।

कोस्तोविस्की अपना काम भूल गया और जूलिया खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह अपने छोटे तेज दाँतों को चबाते हुए छोटे कदम भरती हुई उसके पास आई और अपना सुंदर छोटा हाथ उसकी तरफ बढ़ाते हुए साहसपूर्वक बोली, ''कैसे हो कोस्तोविस्की?''

❑

कुछ महीने बीत गए। विशाल नाचघर में दरवाजों तक लोगों की भीड़ थी। एक-दूसरे को संकुलित करते, आपस में टकराते, धक्का देते वे दृश्यों के पीछे काम में लगे हुए थे। परदे में से लोगों की भिनभिनाहट और पवित्र वाद-वृंद की स्वर लहरियाँ आ रही थीं।

मंच के बढ़ई इधर-उधर भाग रहे थे; जैसे उनपर भूत सवार हो गया हो। वे दृश्य को इधर-उधर बदलते, व्यवस्थित करते तथा अँधेरे में कहीं से बड़े-बड़े परदों को ऊपर उठाते, नीचे गिराते—मंदिरों की दीवारें, बिना ढलान के जंगल और समुद्र की लहरें।

इस सारे काम की देखभाल कोस्तोविस्की कर रहा था। वह पहचाना नहीं जा सकता था। वह अपनी आयु से कहीं छोटा और चमकीला नजर आता था। उसकी आँखें खुशी और आनंद से चमक रही थीं। उसने पैरों में चमकीले पेटेंट चमड़े के बूट पहन रखे थे और आकर्षक तरीके से सिली स्वच्छ मखमल की वास्कट पहनी हुई थी,

उसके बाल अब रूखे नहीं थे।

''समुद्र के पेंदे को नीचे आने दो!'' उसने तेज आवाज में आज्ञा दी।

विशाल परदा, जिसपर उसने समुद्र का पेंदा बनाया था, नीचे कर दिया गया। चित्रकार ने थोड़ा पीछे हटकर प्यार से 'समुद्र के पेंदे' को देखा। यह उसका सबसे ताजा निर्माण था।

''सुनो पेवल!'' वह चिल्लाया—''जब जलपरियाँ तैरना शुरू करती हैं तो तुम जूलिया को पहले आने दो और बाकी सबको उसके पीछे, उसको पेंदे तक जाने दो।''

''ऐसा ही होगा।''

अंत में, समुद्र के पेंदे में जलपरियों के तैरने के लिए हर चीज तैयार हो गई। कोस्तोविस्की पहले ही ऊपर बैठा हुआ था। उसके हाथ में मंच की ओर किया हुआ प्रतिबिंब फेंकनेवाला शीशा था। दृश्य और अभिनेताओं पर रोशनी फेंकने का प्रबंध उसको स्वयं करना था। समुद्र का पेंदा कोमल, कवित्वपूर्ण रोशनी से भर दिया गया था। यह हलकी, हरी, चाँदी-सी रोशनी पानी में जाती हुई इस तरह नजर आ रही थी मानो उसके ऊपर धूप से जगमगाता दिन हो। और यहाँ पेंदे में रहनेवाले को रोशनी का पता नहीं चलता था। दूर एक ओर प्रवाल की चट्टान थी और हर तरफ आधी जीवित हरियावल ने लालसापूर्वक पानी में अपनी टहनियाँ फैला रखी थीं। हर तरफ पतली जैली मछलियाँ तैर रही थीं।

पहले-पहल जो चीज नीचे आती थी, वह मुँह खोले पानी में डूबी गुफा थी, जिसमें भयंकर विशाल पिशाचनुमा मछली के हाथ निकले हुए थे। वह बिना हिले-डुले घूर रही थी।

इस प्राचीन और असामान्य संसार में लहराते हुए बालों, नंगे कंधों, कमर से नीचे मछली का आकार लिये तथा चमकीली चाँदी-से पंखों से ढकी एक सुंदर युवती प्रकट हुई। उसके सिर के माधुर्य और कंधों की सुंदरता को पानी में डूबे इस कुरूप संसार ने चार चाँद लगा दिए थे।

वह प्रभावी ढंग से इठलाती, बलखाती मछली की भाँति तैरी। उसकी परतें चमकती हुई चिनगारियाँ फेंक रही थीं। बाकी जलपरियों ने उसका पीछा किया।

उन सबको एक ने ढक लिया था। वह सबसे नीचे तैरी। वह अपनी सुंदरता की कांति से सबसे पृथक् दिखाई देती थी। औरों की अपेक्षा उसको प्रभावी ढंग से प्रकाशित किया गया था। प्रतिबिंब शीशे की कोमलतम किरणें उसपर प्यार की गरमी से गिर रही थीं; बाकी उसके पीछे दौड़तीं और प्यार से उसके शोभायमान शरीर को छूती थीं। किरणें उसके चेहरे पर नशीला प्रभाव डाल रही थीं और उसकी आँखें तारों की भाँति चमक रही थीं। ऐसा जान पड़ता था कि वह रोशनी से ही बनाई गई थी—और यह रोशनी उसकी प्रत्येक हलचल के साथ हजारों रंगों में बदलती थी। समुद्र की यथार्थ रानी! उसने महसूस किया कि मोहक कलाकार ने उसे अद्‌भुत सुंदरता प्रदान कर दी थी। प्रसन्न जनता इसी सुंदरी की प्रशंसा के लिए टूट पड़ने को तैयार थी। इसने कलाकार के निकट तैरते हुए कृतज्ञतापूर्ण मछली की अपनी चमकीली दुम को हिलाया, जिसपर अनुरक्त जादूगर की इच्छा से एकाएक कई रंगों के हीरों की बौछार हो गई।

वह दृश्यों के पीछे तैरी और अपने पाँव के पंजों पर खड़े होकर खुशी से मुसकराते हुए उसने प्रतिबिंब शीशे के पीछे से कोस्तोविस्की को हवाई चुंबन भेजा।

सारी मंडली परदे के पीछे इस प्रेम के मामले को जानती थी। जूलिया हमेशा कोस्तोविस्की के साथ थिएटर से जाती थी। दोनों एक ही होटल में रहते थे; उसका कमरा इसके कमरे के साथ रहता था। कोस्तोविस्की भरपूर आनंद लेता हुआ उसके साथ रहता था। यह आनंद उसे सुंदरता प्रदान करता था और वह मन से उसको मिलने का अवसर

देती थी। उसने एक आज्ञाकारी कुत्ते की तरह उसका पीछा किया और महिलाओं के श्रृंगार-कक्ष के दरवाजे पर लंबी और शांतिपूर्वक प्रतीक्षा की; जबकि वह आराम से अपने चेहरे की सज्जा को उतारती रही, कपड़े पहनती रही और दूसरी लड़कियों के साथ बातचीत करती रही।

इस बार नाटक के बाद उसे, विशेषकर सीढ़ियों पर लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। दूसरी लड़कियाँ अपने आपमें मग्न होकर एक के बाद एक करके उतरीं और प्रतीक्षा कर रहे अपने-अपने परिचितों के साथ चली गईं। दृश्य का चित्रकार जूलिया की प्रतीक्षा करता रहा, परंतु वह कहीं नजर नहीं आ रही थी।

शोकाकुल और दु:खी कोस्तोविस्की अपने स्थान पर खड़ा अपनी ओर उदासीनता से देखता हुआ श्रृंगार-कक्ष के दरवाजे की ओर अपनी आकांक्षी नजरें लगातार जमाए रहा। कभी-कभी दरवाजा थोड़ा-थोड़ा खुलता था, क्योंकि लगभग सारी लड़कियाँ जा चुकी थीं।

अंत में सामूहिक नाचनेवाली रोचक यहूदी लड़की रोजा बाहर निकली। ''तुम यहाँ किसलिए खड़े हो?'' वह हैरानी से अपनी भौंहें उठाती हुई और कपटी ढंग से मुँह बनाती हुई भनभनाई—''मैं सबसे अंत में आनेवाली हूँ, वहाँ और कोई नहीं है, जूलिया काफी देर से जा चुकी है। ऐसा जान पड़ता है कि तुमने उसे जाते हुए नहीं देखा।''

''क्या वह चली गई है?'' कोस्तोविस्की ने पूछा। उसके चेहरे पर रंगा हुआ भाव नजर आया।

''हा, हा, हा, हा!'' रोजा की चाँदी के सदृश हँसी खनखनाई—''बहुत सादे ढंग से नाटक समाप्त होने से पहले ही वह अपने नए प्रेमी के साथ चली गई और, मेरे प्यारे, तुमने उसे बहुत पहले की थका दिया था।''

दृश्य चित्रकार पीछे हटा और अपना सिर पकड़ लिया। ''यह सच नहीं है।'' उसने थकी आवाज में कहा।

''ठीक है, मैं भी ऐसा ही चाहती हूँ, '' रोजा ने उत्तेजित होकर कहा, ''और यह सब तुम्हारी अपनी करनी है। वह आगे जाना चाहती थी। तुम उसपर इस प्रकार रोशनी फेंकते थे कि सारी अगली पंक्ति उसे दूसरी मालूम होती थी। उसने अपने लिए जीवन-वृत्ति बना ली है और अब आगे के लिए उसे तुम्हारी जरूरत नहीं।'' और रोजा हँसती हुई दौड़कर सीढ़ियाँ उतर गई।

कोस्तोविस्की देर तक उसी स्थान पर निश्चल खड़ा रहा और खाली थिएटर की मौन और अँधेरे में लिपटा हुआ उन्हें पहले धीरे-धीरे, फिर तेजी से महसूस करने लगा। उसकी छाती पीड़ा से भर गई थी।

❑

जब कोस्तोविस्की ने जूलिया के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो जूलिया उससे उदासीनता से मिली। उसकी गीली आँखों ने अपनी मोटी पलकों के नीचे से शांत भाव और उदासीनता से देखा। उसके काले बाल, जो असावधानी से इकट्ठे किए गए थे, विलासी ताज की तरह पड़े थे और दो लटाटें उसके भूरे गालों पर लटक रही थीं। उसने सस्ते कपड़े का सफेद कीमोनो पहना हुआ था और पाँव में हलकी स्लीपर थी।

''जूलिया!'' कोस्तोविस्की ने हाँफते हुए उत्तेजित होकर धीमे से कहा।

''बैठ जाओ!'' उसकी आकृति में कोई विशेषता न देखते हुए उसने असावधानी से कहा, ''और अपने आपको स्वयं किसी चीज में लगाने का प्रयास करो। तुम्हारा मन लगाने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है।''

''जूलिया!''

वह अपने बिस्तर पर आधी झुक गई और पुस्तक पढ़ने में मग्न हो गई।

वह इस औरत की व्यर्थ धूर्तता से चिढ़ गया। वह इस प्रकार की चालाकी का प्रयोग क्यों करती थी तथा उसको और क्रोधित करती थी; जबकि वह उसे सीधे-सीधे ढंग से बताकर मामले को निपटा सकती थी।

''जूलिया, तुम मेरे साथ मेहमानों जैसी बात करती हो, जिनका मन बहलाया जाता है। यह किस प्रकार का

शिष्टाचार है?''

''यह किसी शिष्टाचार की बात नहीं है, '' उसने नाराजगी के स्वर में उत्तर दिया—''यह हमारे संबंधों को सरल बनाता है, बस, यही कुछ; हर कोई अपने आपको उसमें लगाता है जिसको वह पसंद करता है। मैं पढ़ रही हूँ और तुम अपने आपको किसी दूसरे काम में लगाओ। यदि तुम मानसिक थकावट महसूस करते हो तो चले जाओ।''

वह वास्तव में उसे बाहर निकाल रही थी।

कोस्तोविस्की 'संबंधों को सरल बनाने' पर क्रोध में आपे से बाहर हो गया।

''मेरी बात सुनो!'' उसने संताप से भरी आवाज में कहा, ''मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ, तुम्हारी पुस्तक समाप्त होने तक मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता।''

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और बिस्तर पर आधी लेटकर पुस्तक पढ़ती रही। दु:खप्रद मौन छा गया।

कोस्तोविस्की मेज पर बैठ गया और चुपचाप जूलिया को देखने लगा। सिरहाने पर अपनी कुहनियों के सहारे झुकते हुए उसने अपने आपको बिल्ली के बच्चे जैसी सुशोभित स्थिति में डाल दिया था। हलकी, छोटी स्लीपरों में उसके छोटे पैर छिपे हुए थे और अपनी छिपनेवाली जगह से कोस्तोविस्की को चिढ़ा रहे थे। उसकी पोशाक में से उसके शरीर की सुंदर वक्र रेखाएँ नजर आ रही थीं। उसकी कमीज की चौड़ी बाँहों ने मछली की तरह उसके बाजुओं को कुहनियों तक नंगा रहने दिया था। कुल मिलाकर वह इतनी मधुर और सुंदर लग रही थी कि कोस्तोविस्की उससे घृणा करता हुआ भी उसे अपनी बाँहों में लेना चाहता था।

उसने अपनी दृष्टि उसकी तरफ से हटा ली। कमरा अव्यवस्थित था—एक सस्ते होटल का बिजली से रोशन कमरा। दरवाजे के पास उसके कपड़ोंवाली अलमारी थी, मध्य में मेज थी और खिड़की के पास श्रृंगार के लिए मेज तथा मुँह देखनेवाला शीशा था। कमरे में आनेवाले रास्ते के निकट टाँड़ पर उसकी कोमल कपड़े की वास्कट लटक रही थी, जिसके किनारों पर बिल्ली के पंजे काढ़े गए थे। उसने देर तक घृणापूर्वक बिल्ली के पंजोंवाली वास्कट को देखा और स्मरण किया कि पहले किस प्रकार वह इसको प्यार से मिलती थी और कुरसी पर बैठने के लिए विवश करके उसके तीखे बालों को कोमलता से सहलाती थी। उसके छोटे हाथ को कोमल अंगुलियों का कोमलता से छूना कितना आनंददायक होता था!

उसने जल्दी से अपनी पुस्तक फेंक दी और क्रोधित होकर बिस्तर से उठी—''तुम किसी चीज के बारे में मुझसे बात नहीं करोगे!'' वह लाल-पीली होकर बोली, ''सब चीजें पहले ही तय हो चुकी हैं। अब समय आ गया है कि इस रसिक प्रकार के प्रेम को, इस भावुक बकवास को समाप्त कर दिया जाए।''

''रसिकता, भावुक बकवास!'' उसने कड़वाहट से दोहराया—''जूलिया, हमारे बीच क्या चीज आ गई है?''

''हमारे बीच कुछ नहीं है, कुछ भी नहीं हो सकता, '' उसने पुकारा—''हममें कुछ भी सामान्य नहीं है, कुछ भी, और अब अपनी जान-पहचान को समाप्त होना ही होगा।''

उसने मेज को धक्का दिया और कमरे के सबसे अँधेरे कोने में बैठकर वहाँ से अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से उसे देखने लगी। उसकी आँखों में हमेशा एक-सा भाव रहता था। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता था कि वे किसकी ओर देखती थीं, किसको आमंत्रित करती थीं या किसी चीज के स्वामी को जाने बिना उसका वचन देती थीं— उसका तिरस्कार करते हुए साथ-ही-साथ उसको लुभाती थीं!

''मैं सब समझता हूँ, '' उसने उदास होकर कहा और अपनी कुरसी को उसके पास घसीट लिया—''तुम मुझसे जुदा होना चाहती हो। वे कहते हैं कि तुमने दूसरा—वादक वृंद की पहली पंक्ति में से किसी को अपना लिया है। चलो, हम जुदा हो जाते हैं, परंतु यह धोखा देकर दोषारोपण से भागना और झगड़ा किसलिए? मैं नहीं चाहता कि

यह सब इस बुरी तरह से समाप्त हो—झगड़े से। मैं कम-से-कम इसकी स्मृति रखना चाहता हूँ, परंतु जूलिया, याद रखो, पहली पंक्ति के सभी लोग तुमसे घृणा करते हैं, तुम्हारा अनादर करते हैं और केवल तुम्हारे शरीर के लिए तुमसे प्यार करते हैं। और, मैं तुम्हें सच्चा प्यार करता हूँ।

उसने कुहनी के ऊपर से उसका बाजू पकड़ा और अपने बड़े पंजे से झँझोड़ा।

''आह, असभ्य, गाली देता है! छोड़ो, मुझे जाने दो। मैं कह रही हूँ, तुम मेरा बाजू उतार दोगे! हत्यारा!''

वह उससे झगड़ा करना चाहती थी और वह अपनी तरफ से अपने अंदर भयंकर क्रोध के तूफान को महसूस कर रहा था। उसको मार-पीटकर, चीर-फाड़कर बाहर फेंक देना चाहता था।

उसने इसका हाथ और जोर से पकड़ा। उसकी आँखों का रंग हरा हो गया और दाँतों के बजने से कर्कश आवाज आने लगी।

''ऊई!'' वह चिल्लाई, परंतु यह उसके सामने अपने घुटनों पर गिर गया।

''मेरी मधुरतम, अत्यंत प्यारी, मेरी सुवर्णमयी, मेरी सूर्य, मेरी प्रसन्नता! तुम ही मेरी सबकुछ हो। मेरे समस्त विचार, मेरी सारी भावनाएँ, हर चीज तुम्हारे लिए है, तुमसे है और तुम्हारी बाबत है! ओह, मैं असभ्य और जंगली हूँ, परंतु मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम्हारे बिना मेरे लिए कोई जीवन नहीं है। मैं उसी पेंदे में डूब जाऊँगा जहाँ से तुमने उठाया था! ठीक है, मेरी प्यारी, मेरी प्रसन्नता, मुझे क्षमा कर दो। मैं तुम्हारे हाथ और पोशाक को चूमता हूँ। क्षमा!''

अपने झुके हुए घुटनों पर कोस्तोविस्की ने जूलिया के छोटे हाथों को थामा, उन्हें चूमा, फिर उसकी पोशाक को चूमकर रो दिया।

जब कोस्तोविस्की ने अपना सिर उठाया तो एकाएक जूलिया को अपनी तरफ दृष्टिपात करते हुए पाया—एक अजीब ध्यानपूर्वक दृष्टि! उसकी गीली और काली आँखों की इस दृष्टि में उसके लिए प्यार नहीं था, दया नहीं थी और न ही घृणा थी, कौतूहल से मिलता-जुलता कुछ क्षतिकर था, परंतु कौतूहल से अधिक हृदयहीन! यह जीवित प्राणियों की चीर-फाड़ करनेवाले का कौतूहल था, जिसका प्रदर्शन वह जीवित खरगोश की चीर-फाड़ करते समय करता है, या फिर एक प्रकृतिवादी का था, जो एक अनूठे गोबरैला को सूई चुभोकर उसकी ऐंठन को देखता है। वह अब भी उसमें रुचि लेता था, परंतु कुछ प्राचीन एवं मौलिक रूप में। उसकी असभ्यता का तेजी से नम्रता में बदलना, घोषणा का अनोखापन और एकाएक भयंकर क्रोध के दौरे से अपने आपको इसके सामने विनीत बनाना और क्षण भर के बाद रो देना—यह सब अत्यंत रुचिकर था।

परंतु कोस्तोविस्की का दिमाग एकाएक रोशन हो गया जैसे दामिनी ने इसे किया हो। वह जूलिया के साथ अपने वास्तविक संबंधों को तुरंत समझ गया और उसने महसूस किया कि उसके व्यवहार से इसे गहरा धक्का लगा है। वह इसमें केवल रुचि लेती थी, प्यार नहीं करती थी—और न ही कर सकती थी; क्योंकि वह इसके संसार की बजाय किसी दूसरे संसार की जीव थी और यह उसके लिए पूर्णतया अजनबी था। ये शब्द उसके हृदय में भर गए। वह मौन हो गया। उसने अपनी टोपी उठाई और बिना जूलिया की ओर देखे शीघ्रता से कमरे और फिर होटल से निकल गया।

कोस्तोविस्की ने अनायास अपने आपको मधुशाला में पाया, जहाँ लगभग अचेतावस्था में उसके पैर उसे ले गए थे। उसने लंबे समय से शराब नहीं पी थी; परंतु अब शराबखाने के लिए उसने तीव्र इच्छा दिखाई। गिलासों की खनखनाहट के लिए और बुरी बोदका की गंध को उसके मन ने इनकी आवश्यकता को भयंकर रूप से महसूस किया।

वह शराबखाने के एक कोने में अकेला एक छोटी मेज के पास बैठ गया। उसके सामने बोदका की बड़ी बोतल रखी थी और हानिकारक खाने की चीज पड़ी थी, जो ऐसे स्थानों के लिए अनोखी होती है। मेज का कपड़ा गंदा और बोदका तथा बीयर के धब्बों से भरा हुआ था। मोमबत्ती ने कमरे में धुँधली-सी रोशनी की हुई थी। कमरा मतवाले आदमियों से भरा था। वे सब बकवास करते हुए इधर-उधर घूम रहे थे और साथवाले कमरे से बिलियर्ड की गेंदों की आवाज आ रही थी। खिलाड़ियों में से जब किसी एक ने गेंद को मारा तो उसने खुशी से प्रचलित स्वर में गाना गाया—

''जहाँ भी जाता हूँ या घूमता हूँ,
मैं तुम्हें ही, जूलिया, देखता हूँ।''

''ओह, यह पिशाच!'' कोस्तोविस्की अपना दसवाँ गिलास भरता हुआ और बुझे मन से पीता हुआ बड़बड़ाया। वह इस बात से चिढ़ गया था कि जूलिया की याद यहाँ शराबखाने में भी उसे तंग कर रही थी। उसने उसे हमेशा के लिए भूल जाने का निर्णय लिया था। अब वह उससे घृणा करता था और उसे बिलकुल याद करना नहीं चाहता था।

शराबखाने ने अपनी आवाजों, अपनी गंध और जाने-पहचाने रंग में इसको लपेट लिया था, क्योंकि इन चीजों के साथ वह पहले रह चुका था।

परंतु उसके विचार हौले-हौले शराबखाने की तरफ से हट गए और एक बार फिर वह उसके सामने आ गई, जैसे वह उसे कभी छोड़ेगी नहीं।

अब उसने उसे जलपरी की पोशाक पहने देखा। उसका शरीर मछली का था, जो चाँदी जैसी परतों से ढका था और उसका प्रतिबिंब शीशे की किरणों के नीचे चमक रहा था। वह कसमसाती हुई बहुत सुंदर लग रही थी। उसने लुभानेवाली अपनी मुसकराहट से उसे लुभाया और दूर अथाह समुद्र में तैर गई। जलपरी के प्रेमी ने महसूस किया कि वह नष्ट हो गया है और फिर कभी भी अपनी पहले जैसी असावधानी, शक्ति तथा आत्मिक बल को प्राप्त नहीं कर सकेगा। उसने जलपरी और उसके चुंबनों को ध्यान देने से पहले अपने बीते जीवन को याद किया। यह सच है कि वह अधिक पीता था, परंतु उसमें शराबीपन नहीं था। वह साहसी था, क्योंकि उसकी शक्ति बाहर निकलने का तरीका ढूँढ़ रही थी। उसका दिल खिलवाड़ और मौज-मस्ती के लिए व्याकुल था। इसीलिए पौराणिक मछुआरे की तरह उसने अपने जाल में जलपरी को पाया था। उसने उसे अपने हाथों में उठाया, उसका चुंबन लिया और आलिंगन किया तथा असावधान जीवन को अलविदा कह दी। उस जलपरी ने इसका सत्यानाश कर दिया।

''ओह, पिशाच!'' कोस्तोविस्की गिलास खाली करता हुआ गरजा, इसलिए भी गरजा कि इससे दु:खदायी विचार दूर हो जाएँगे, परंतु उसकी याद ने इसके सामने प्रकट होकर उसे लगातार निर्दयता से दु:ख देना जारी रखा। हर क्षण नई पोशाक में वह सामने आती—परी की तरह, चरवाहिन बनकर और पुन: जलपरी के रूप में या फिर बड़े घरेलू चोगे में उसके निकट ही घूमती तथा उसकी घनी लटें उसके माथे एवं लाल गालों पर गिरी हुई होतीं। उसकी सारी आकृति ऐसी थी मानो दीप्तिमान कवित्व किरणों की बाढ़ आ गई हो।

''और जब मैं मित्रों के साथ शराब का लाल प्याला खाली करता हूँ तो मैं अपने सामने और किसी को नहीं, केवल जूलिया को देखता हूँ।'' बिलियर्ड रूम से प्रचलित रीति से प्रसन्न आवाज आई। धीरे-धीरे शराबखाना कुहरे से भर गया, जिससे बत्तियाँ धुँधली पड़ गईं और मौज-मेला मनानेवालों का शोर अस्पष्टता से सुनाई देने लगा मानो बहुत दूर से आ रहा हो—दूर से समुद्र की लहरों की तरह। शराबखाना समुद्री लहरों से भर गया—लहरें, जो ऊपर उठती थीं और नीचे गिरती थीं। इन लहरों से जलपरी तैरती हुई निकली, जो हँसते हुए कोस्तोविस्की को लुभा रही थी।

एक क्षण के लिए उसने अपना सिर उठाया और पुन: अपने सामने बोतल को देखा। उसने एक गिलास और बनाया तथा पी गया। कुहरा और गहरा हो गया—उसकी आँखों के सामने घूमने लगा, परंतु फिर भी बोतल के ऊपर उठते शराब के वाष्पकणों में उसकी कवित्व मधुर आकृति उसने देखी।

❑

विभिन्न शराबखानों में कई दिनों की तलाश के बाद जब अंत में कोस्तोविस्की को ढूँढ़ लिया गया, उसे होश में लाया गया तो समुद्र के पेंदे और जलपरियों के साथ नृत्य-नाटिका को पुन: खेला गया।

अब कोस्तोविस्की एक बार फिर अपनी पुरानी स्थिति में दिखाई दिया। गंदी, अव्यवस्थित पोशाक पहने दृश्य चित्रकार पहले से भी अधिक उद्‌विग्न दिखाई देता था। उसके बाल नुकीले और मूँछें भद्‌दी तरह से खड़ी थीं।

वह दृश्यों के पीछे चबूतरे पर उद्‌विग्न खड़ा हुआ जलपरियों को प्रतिबिंब शीशे की किरणों से रोशन कर रहा था। उसकी आत्मा कठोरता और निष्ठुरता से भर गई थी। उसने अपने आपको दूसरों से जुदा रखा, सारी मंडली से घृणा की।

और जलपरियाँ समुद्र के पेंदे में तैरती रहीं।

परंतु उनपर पड़ रही रोशनी पहले जैसी दीप्तिमान नहीं थी। जो रोशनी कलाकार उनपर फेंक रहा था, वह उदास और पीली थी, जिसके नीचे वे जीवनहीन, बीमार और अधमरी नजर आ रही थीं, परंतु जब जूलिया पहले की तरह सबसे नीचे तैरती हुई नजर आई तो कुरूप, गहरे नीले रंग की किरणें उसपर गिरीं और वह जलपरी की अपेक्षा अधिक कुरूप नजर आई। उसका चेहरा डरावना और नीला था; होंठ काले थे और शरीर ऐसा, मानो लिसलिसी मिट्‌टी में लपेटा गया हो!

थिएटर में अप्रसन्नता की बड़बड़ाहट फैल गई।

अपने दानवों के साथ रोशनी में कलाकार भी प्रकाशित हुआ और बुरे स्वप्न तथा उदासीनता की प्रतिरूप हरी आँखोंवाली मछली अँधेरे में से प्रकट हुई। हानिकारक अष्टभुजी मछलियाँ उसके आसपास घूमने लगीं।

जूलिया का शरीर हानिकारक ढेर में तैरता हुआ प्रतीत हुआ और अंत में एक जीवित राक्षसी बेढंगे प्राणी में बदल गया।

दृश्य चित्रकार ने प्रतिबिंब शीशे को धीरे से घुमाया और अपने द्‌वारा किए जा रहे रोशनी के काम को देखा। उसे ऐसा लगा कि उसने उस जलपरी के आकर्षण को सदा के लिए नष्ट कर दिया था—जलपरी, जिसको उसने प्यार किया था। कोस्तोविस्की को महसूस हुआ कि उसने उसको अब वास्तविक रोशनी में देखा था और वह केवल उसी समय दिव्य रूप से सुंदर नजर आती थी, जब उसपर प्रेम की तेज किरणें पड़ती थीं।

❑

सादे लोग

—मैक्सिम गोर्की

मैं मकई के खेत के साथ-साथ नरम, भूरी सड़क पर सावधानी से चल रहा था। मकई के पौधे मेरी छाती तक पहुँच रहे थे। सड़क इतनी सँकरी थी कि चक्रमार्ग पर तारकोल से पुती, टूटी और कुचली हुई बालें पड़ी थीं।

भारी बालें इधर-उधर झूम रही थीं। चूहे शोर मचाते मकई के खेत में दौड़ रहे थे। ऊपर आकाश में भारद्वाज पक्षी और अबाबीलें देखी जा सकती थीं, जो इस बात का प्रतीक थीं कि पास ही नदी और आबादी है। सोने के समुद्र पर घूमती हुई मेरी आँखें गिरजे की मीनार को ढूँढ़ रही थीं—मीनार, जो जहाज के मस्तूल की तरह आकाश में खड़ी थी। वृक्षों को ढूँढ़ता हुआ, जो दूर बादबानों की तरह दिखाई देते थे, परंतु रूक्ष, बिना बोए मैदान के अतिरिक्त कुछ भी नजर नहीं आया। मैदान दक्षिण-पश्चिम की ओर नरम ढलानों में बदल गया था और आसमान की तरह निर्जन एवं शांत था।

मैदान में तुम अपने आपको प्लेट पर बैठी हुई मक्खी के समान नजर आओगे। जब तुम इसके बिलकुल मध्य में पहुँचोगे तो ऐसा महसूस करोगे कि सूर्य से आलिंगन करती हुई, तारों से घिरी और उनकी सुंदरता से चौंधियाई हुई पृथ्वी ही विश्व का केंद्र है।

वह लंबा-चौड़ा, लाल रंग से लिपटा, बर्फ जैसे सफेद बादलों के साथ, परंतु नीले क्षितिज में गिरता हुआ मैदान था। सूर्यास्त की सुनहरी धूल मकई की बालों पर छिटकी हुई थी। मकई के फूल गहरे रंग के हो चुके थे और सायंकाल की शीघ्र होनेवाली शांति में पृथ्वी का गाना स्पष्ट रूप से सुना जा सकता था।

आकाश में गुलाबी पंखों के आकार के बादल छाए हुए थे। उनमें से एक ने मेरी छाती को छुआ और मोजिज की छड़ी की तरह शांतिमय विचारों के समुदाय को जन्म दिया। मैं सायंकाल की पृथ्वी का आलिंगन करना चाहता था और उसके कानों में प्रेम के शब्द कहना चाहता था—ऐसे शब्द, जो पहले कभी नहीं कहे गए थे।

आकाश पर तारे छिटके हुए थे और पृथ्वी एक तारा थी। पृथ्वी पर मनुष्य छिटके गए थे और मैं एक मनुष्य था —निडरता से हर रास्ते पर घूमता हुआ, जीवन के समस्त सुखों-दु:खों को देखता हुआ, बाकी मानव जाति की तरह कड़वा और मीठा घूँट पीता हुआ।

मुझे भूख लगी थी और प्रात:काल से मेरे थैले में रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था। इसने मेरे विचारों में रुकावट डाली और मुझे दु:खी किया। पृथ्वी इतनी धनी है और मनुष्य ने अपना इतना परिश्रम खर्च किया है, फिर भी मनुष्य भूखा!

सड़क एकाएक दाईं ओर मुड़ गई। मकई की कतारें अलग झूम रही थीं, जिनमें से वह घाटी नजर आ रही थी जिसके अधोभाग में एक नदी बह रही थी। शलजम की तरह पीला, नया पुल इसपर बनाया गया था, जिसका प्रतिबिंब नदी के पानी में पड़ता था। पुल के आगे, ढलान की विपरीत दिशा में सात झोंपड़ियाँ खड़ी थीं और कुछ पोपलर के लंबे, घने वृक्ष अपनी घनी छाया उनपर फेंक रहे थे। छोटे बालोंवाला घोड़ा उनके श्वेत-भूरे तनों के बीच अपनी दुम हिलाता हुआ घूम रहा था। धुएँ, तारकोल और भाँग के तर पौधों की तेज गंध आ रही थी। चूजे कर्कश आवाज में बोल रहे थे, बच्चा थकावट के कारण रो रहा था—वह शीघ्र ही सो जाएगा। इन आवाजों के कारण क्या कोई यह नहीं सोच सकता था कि यह सारा दृश्य किसी चालाक कलाकार की जल्दी में की गई उपज थी? नरम, कोमल रंग, जिनका उपयोग उसने किया था, वे धूप से पहले ही फीके पड़ चुके थे।

अर्धचंद्राकार में झोंपड़ी थी, एक वृक्ष था और उसके साथ ही एक छोटा लाल गिरजा था—ऊँचा और तंग, एक आँखवाले पहरेदार की तरह। एक सारस भूमि की ओर झुके हुए लंबी चीख मार रहा था। सफेद कपड़े पहने एक किसान औरत अपने आपको फैलाती हुई और नंगी बाँहें ऊपर उठाती हुई पानी खींच रही थी। ऐसा लगता था, मानो वह किसी भी समय बादलों की तरह तैरने लग जाएगी। कुएँ के चारों ओर चमकीला-काला कीचड़ था, जो पिसा हुआ मखमल-सा नजर आता था और लगभग तीन और पाँच वर्ष की आयु के दो लड़के, कमर तक नंगे, कीचड़ को अपने पीले पाँव से गूँध रहे थे; मानो सूर्य की लाल किरणें इसमें मिलाना चाहते हों। इस अच्छे काम ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। मैंने सहानुभूतिपूर्वक लड़कों को देखा। हाँ, विशेष रुचि के साथ देखा। कीचड़ में सूर्य अपने ही घर की भाँति स्वतंत्र था। वह भूमि में जितना भी गहराई में जाता, उतना ही भूमि और आदमी—दोनों के लिए उत्तम था।

ऊपर से मैं अपनी हथेली की तरह सबकुछ साफ देख सकता था। मैदान में सात झोंपड़ियाँ थीं। वहाँ मुझे कुछ काम नहीं करना था, फिर भी सायंकाल वहाँ के विनम्र लोगों से बात करना सुखकर लगेगा। अत: उन लोगों को आनंदकर और अद्‌भुत कहानियाँ सुनाने की तीव्र इच्छा लेकर पुल पार कर गया; क्योंकि तुम जानते हो, यह भी मनुष्य के लिए उतना ही जरूरी है, जितना रोटी खाना।

पुल के नीचे से एक शक्तिशाली, कुरूप व्यक्ति, बिना दाढ़ी बनाए, थैले जैसा पाजामा और मिट्‌टी से सनी लट्‌ठे की कमीज पहने मेरी तरफ इस तरह आया मानो मिट्‌टी का एक बड़ा ढेर जीवित हो गया हो।

''शुभ प्रभात!''

''तुम्हें भी, कहाँ जा रहे हो तुम?''

''यह कौन सी नदी है?''

''यह? सागेडक।''

उसके बड़े सिर पर सफेद बाल लहरा रहे थे। उसकी हलकी कटी मूँछें चीनी आदमी की तरह किनारों पर लटक रही थीं। उसकी छोटी आँखें तेज दृष्टि और शंका से मुझे घूर रही थीं; स्पष्टतया इसलिए कि मेरे कपड़ों में कई छिद्र थे और टुकड़े जुड़े थे। गहरी साँस लेते हुए उसने तंबाकू पीनेवाली मिट्‌टी की नली जेब से निकाली और आँखों को मरोड़ते हुए ध्यान से काले कटोरे को देखकर पूछा—

''तुम्हारे पास दियासलाई है क्या?''

''हाँ, है।''

''कुछ तंबाकू?''

''थोड़ा सा।''

वह थोड़ी देर उदास खड़ा रहा और बादलों में डूबते सूर्य को देखता रहा। फिर उसने पूछा—

''यह मॉस्को का तंबाकू है क्या?''

''नहीं, यह रोमंस्क-रीमोरिको का है।''

''ओह!'' उसने अपनी झुर्रीदार नाक को ठोकते हुए कहा, ''यह अच्छा तंबाकू है।''

मैं बिना मेजबान के झोंपड़ी में नहीं जा सका। इसलिए एक तरफ खड़ा हो गया, जब तक उसके धीमे से पूछे गए प्रश्न समाप्त नहीं हो गए कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जा रहा हूँ और किस काम के लिए। मैं किसी तरह उससे बात करने की चिंता से असंतुष्ट होता जा रहा था।

''काम?'' वह अपनी मूँछों में से भनभनाया—''यहाँ किसी प्रकार का काम नहीं है। यहाँ अब किस प्रकार का

काम रह गया है?''

वह नदी में थूककर और मुँह मोड़कर चला गया।

दूसरे किनारे से पानी में तैरती गंभीर बतख आई। उसके पीछे उसके बच्चे थे। दो छोटी लड़कियाँ उनके पीछे आईं। एक, जिसने लाल रूमाल बाँधा हुआ था तथा जिसके हाथ में छड़ी थी, बतख से थोड़ी बड़ी थी; दूसरी सफेद, मोटी, ऐंठे हुए घुटनोंवाली पक्षी की तरह शांत।

''यूफिम!'' एक अनदेखी चुभती हुई आवाज ने पुकारा। आदमी ने अपना सिर घुमाया और अनुमोदन करते हुए कहा, ''क्या गला पाया है!''

फिर उसने अपने पाँव की गंदी अंगुलियों को मलना शुरू कर दिया, जिनका मांस फट गया था। फिर उसने अपने टूटे नाखूनों को देखा और अंत में कहा, ''संभवत: तुम लिख-पढ़ सकते हो?''

''तुम किस काम के लिए पूछते हो?''

''यदि तुम पढ़ सकते हो तो मृतक के लिए पुस्तक पढ़ दो।''

इस विचार से वह प्रसन्न प्रतीत होता था। एक खुशी की लहर उसके चौड़े चेहरे पर फैल गई।

''क्या तुम इसको काम नहीं मानते?'' उसने अपनी आँखों की झपकी छिपाते हुए पूछा, ''मैं तुम्हें दस कोपेक दूँगा और मृतक की एक कमीज भी।''

''और भोजन?'' मैंने मजा लेते हुए पूछा।

''स्वाभाविक रूप से।''

''मृतक कहाँ है?''

''झोंपड़ी में, अंदर आओगे क्या?''

हम बगीचे के पीछे की ओर गए, जहाँ से चीखें आ रही थीं।

''यूफिम, यूफिम!''

नदी से साथ-साथ झाड़ियों के पीछे नरम सड़क पर साए हमारी ओर बढ़ रहे थे। मैं बच्चों की आवाजें और पानी के छींटों को सुन रहा था। कोई तख्त की योजना बना रहा था। सिसकियों की आवाज हवा में तैर रही थी। बूढ़े आदमी ने सावधानी से कहा, ''यहाँ एक औरत थी, जो पढ़ा करती थी; अचंभा थी वह! वे उसे शहर ले गए और वह अपनी टाँगों का प्रयोग खो बैठी—वह दया की मूर्ति थी। उसके जबान नहीं थी। वह बहुत परोपकारी थी, केवल झगड़ालू थी।''

उसी समय मेढक से जरा बड़ा एक कुत्ते का पिल्ला भागता हुआ मेरी ओर आया; उसने अपनी टाँगें और दुम उठाई तथा अपनी लाल घमंडी नाक से हवा को सूँघते एवं डराते हुए भौंका।

''नीचे!''

पीछे कहीं से नंगे पाँव एक स्त्री प्रकट हुई और गुस्से से ताली बजाते हुए चिल्लाई—

''यूफिम, मैं बुलाती हूँ; और तुम्हें बुलाती हूँ।''

''जैसे मैंने सुना ही न हो!''

''तुम कहाँ चली गई हो?''

मेरे साथी ने उसे चुपके से पीली नाशपाती दिखाई और मुझे साथवाली झोंपड़ी के सेहन में ले गया। नंगे पाँववाली स्त्री हमें गालियाँ देती हुई पीछे रह गई।

दो बूढ़ी औरतें झोंपड़ी के दरवाजे के साथ ही बैठी थीं—एक गोल और मैली-कुचैली, बुरी तरह प्रयोग की गई

चमड़े की गेंद की तरह; दूसरी हड्डियों से भरी, झुकी कमर और काले चिड़चिड़े चेहरेवाली। उसके पैरों के पास भेड़ जैसा बड़ा कुत्ता लेटा हुआ था, जिसके उलझे बाल, भीगी लाल आँखें थीं और वह अपनी खुरदरी जीभ को बाहर निकाले हुए था। यूफिम ने हमारे मिलने का सारा विवरण दे दिया और बताया कि मैं किस काम आ सकता हूँ। दो जोड़ी आँखों ने चुपके से मेरी ओर ध्यान दिया। बूढ़ी औरतों में से एक ने अपनी गंदी गरदन झुकाई और दूसरी ने अंत तक मेरी बातों को सुनकर कहा, ''बैठ जाओ, मैं तुम्हारे लिए खाना लाती हूँ।''

छोटे सेहन में काफी झाड़-झंखाड़ उग आए थे। मध्य में बिना पहियों की काली गाड़ी खड़ी थी। पशु घर में लाए जा रहे थे और खेत के पास घेरे से मंद-मंद आवाज करती नदी बह रही थी। सेहन के हर कोने से घास पर साए दीख पड़ रहे थे।

''किसी दिन हम सब मर जाएँगे!'' यूफिम ने अपनी नली को दीवार के साथ झाड़ते हुए शांति एवं विश्वास के साथ कहा। नंगे पाँव और लाल गालोंवाली स्त्री दरवाजे के पास खड़ी थी। उसने हलकी आवाज में पूछा, ''तुम आ रहे हो या नहीं?''

''पहले यह समाप्त कर लूँ, बाद में...।''

मुझे कंजूसी से रोटी और बचा-खुचा दूध दिया गया। कुत्ता उठा और अपने टपकते जबड़े को मेरे घुटनों पर रखते हुए अपनी चमकदार आँखों से मेरे चेहरे की ओर देखा, मानो मुझसे पूछ रहा हो—

'क्या यह स्वादिष्ट है?'

झुकी कमरवाली औरत की आवाज सेहन में सुनाई दे रही थी; जैसे सायंकालीन मंद वायु के साथ मिलकर सूखी घास को हिला रही हो।

''दु:ख से बचाने के लिए तुम परमात्मा से याचना एवं प्रार्थना करो, वह तुम्हें दोगुना फल देगा...।''

दुर्भाग्य की तरह काली स्त्री ने अपनी लंबी गरदन झुकाई और अनियमित रीति से अभिन्न स्वर में कुछ बड़बड़ाती, नपे-तुले कदमों से लड़खड़ाती हुई धीरे से मेरे पैरों के पास भूमि पर गिर पड़ी—

''कुछ ऐसे लोग हैं जो जब चाहते हैं, तब काम करते हैं और दूसरे ऐसे हैं जो कभी नहीं चाहते तो कभी काम नहीं करते, परंतु हमारे आदमी तब तक काम करते रहते हैं, जब तक उनमें काम करने की शक्ति रहती है—फिर भी उन्हें कोई इनाम नहीं मिलता!''

बूढ़ी औरत का बड़बड़ाना सेहन में बराबर सुनाई दे रहा था।

''परमात्मा की माँ हर किसी को इनाम देती है...सबको...।''

एक क्षण के लिए गहरा मौन।

गहरा और भारी मौन! अर्थ को गर्भ में धारण किए हुए जैसे महान् विचारों और महत्त्वपूर्ण शब्दों का जन्म होनेवाला हो!

''मैं तुम्हें बताऊँगी, '' बुढिया ने कमर सीधी करने का प्रयास करते हुए कहा, ''उसके शत्रुओं में से मेरे बूढ़े का एक मित्र था—उसका नाम ऐंडरे था। जब हम डोरिटसा में अपने दादा के साथ नहीं रह सके और लोगों ने उसे गालियों से तंग कर दिया, तब वह एक भी शब्द नहीं कह पाया और आँसू उसकी आँखों से बह निकले। उस समय ऐंडरे उसके पास आया और कहने लगा—''याकोव, क्या तुम्हें चले जाना नहीं चाहिए था? तुम्हारे पास हाथ हैं और पृथ्वी कितनी बड़ी है; एक पुरुष कहीं भी रह सकता है। यदि यहाँ के लोग तुमसे ईर्ष्या करते हैं तो यह इसलिए कि ये पशुओं की तरह मूर्ख हैं। इनका अनुकरण मत करो, परंतु सादगी से रहो। इनको अपना काम करने दो और तुम अपना करो। इनको इनकी अपनी रोशनी में जीने दो और तुम जियो अपनी रोशनी में। शांति से रहो और किसी के

आगे मत झुको; तब तुम सबपर विजयी हो जाओगे।'' इस प्रकार मेरा वासिल प्राय: कहा करता था—'वे वे हैं और हम हम हैं!' एक अच्छा शब्द, तुम जानो, कभी नहीं मरता—यह यहाँ भी पैदा होता है और अबाबील की तरह सारे संसार पर उड़ता है।

''यह सच है!'' यूफिम ने स्वीकार किया—''यह वस्तुत: सच है। हम कहते भी तो हैं एक अच्छा शब्द ईसा मसीह का और बुरा पुजारी का।''

''पुजारी का नहीं बल्कि तुम्हारा, यूफिम। यूफिम, तुम्हारे बाल सफेद हो गए हैं, फिर भी तुम बिना सोचे-समझे बातें करते हो...।''

इसी क्षण यूफिम की पत्नी हाथ हिलाती और गालियों की बौछार करती हुई प्रकट हुई।

''या मेरे परमात्मा, कैसा आदमी है यह? उत्तर नहीं देता, कोई बात नहीं सुनता; केवल कुत्ते की तरह चाँद पर भौंक रहा है।''

''ओह, प्यारी!'' यूफिम फुसफुसाया—''तुम कहाँ जा रही हो...?''

पश्चिम में नीले धुएँ और आग की तरह बादल उमड़ने शुरू हो गए; मानो सारा मैदान अभी-अभी आग में जल उठेगा। पूरब में अभी भी अँधेरा था और काली रात रेंगती आ रही थी।

मृतक की गरम गंध मेरे सिर के ऊपर झोंपड़ी की खिड़की से आ रही थी। कुत्ते की नाक और भूरे कान काँप रहे थे; आँखें टिमटिमा रही थीं और खिड़की की ओर देखती प्रतीत होती थीं। यूफिम बादलों की ओर देखकर अपने आपको आश्वस्त करना चाहता था—

''वर्षा नहीं होगी...नहीं...।''

''तुम्हारे पास स्तोत्र संग्रह है क्या?'' मैंने पूछा।

''क्या?''

''भजनों की एक पुस्तक।''

सभी चुप थे।

दक्षिणी रात तेजी से आई और पृथ्वी से रोशनी को साफ कर गई; मानो वह रोशनी नहीं, धूल हो। सूर्योदय तक सुगंधित सूखी घास पर सोना कितना आनंददायक होता है।

''संभवत: पंका के पास है!'' यूफिम ने व्याकुल होकर कहा, ''उसके बच्चों के पास...।'' कानाफूसी करते हुए वे झोंपड़ी में गए और गोल औरत ने आह भरते हुए मुझसे कहा—

''अंदर जाओ, यदि तुम चाहते हो तो उसे देखो।''

उसका प्यारा छोटा सिर नम्रता से झुक गया। अपनी छाती के ऊपर हाथ पर हाथ रखकर उसने मेरे कान में कहा, ''अत्यंत पवित्र माँ...पवित्रतम माँ।''

मृतक निष्ठुर दिखाई देता था। उसकी घनी सफेद दाढ़ी बीच में से दो भागों में बँटी थी। उसकी नाक घनी मूँछों से दबी हुई थी। उसकी बाहर निकली हुई आँखें खुली थीं और मुँह खुला हुआ ऐसे लग रहा था, मानो गहरी नींद में सो रहा हो, क्रोधी विचारों से घिरा हुआ हो और शीघ्र ही महत्त्वपूर्ण अंतिम इच्छा कहने वाला हो। उसके सिर की ओर मोमबत्ती जल रही थी, जिसका नीला धुआँ बलपूर्वक ऊपर उठ रहा था और मद्धिम-सी रोशनी हो रही थी, जो केवल आँखों के नीचे गड्ढों को और मृतक के गाल की झुर्रियों को बढ़ा रही थी। उसकी भूरी कमीज पर दो ढेरों की तरह उसके दो काले और हड्डीदार हाथ पड़े थे; मृत्युके कारण अंगुलियाँ मुड़ चुकी थीं। खिड़की से हवा का झोंका दरवाजे की तरफ आता था और अपने साथ गंदी घास के सड़ने की अप्रिय दुर्गंध लाता था। बूढ़ी औरत जब

सूखे ढंग से सिसकियाँ लेती थी तो उसका बड़बड़ाना अधिक स्पष्ट लगता था। खिड़की में से नजर आनेवाले आकाश के छोटे चतुर्भुज से आती हुई सूर्यास्त के बाद की लाली धमकाती हुई अस्पष्ट दिखाई देती थी और कफन की तरह सिकुड़ी सायंकाल की नीली रोशनी जब खिड़की से होकर कमरे में आती तो मोमबत्ती की पीली रोशनी उड़ती हुई जान पड़ती थी। मृतक के सफेद बाल मछली की परतों की तरह चमक रहे थे और चेहरा कठिनता से व्यग्र प्रतीत होता था। बूढ़ी औरत बड़बड़ा रही थी। उसका दिल ठंडा था। उसकी पीड़ा को शांत किए बिना उसके मन में पुराने शब्द कड़ुवाहट से उमड़े—

''मुझे कफन में देखकर, माँ, तुम शोक मत करना। मैं उठूँगा...जब...।''

वह नहीं उठेगा।

पतली औरत अंदर गई और उसने बताया कि खलिहान में स्तोत्र संग्रह नहीं है, परंतु एक और पुस्तक है, यदि उससे काम चल जाए।

दूसरी पुस्तक चर्च की स्लाव भाषा की व्याकरण निकली। शुरू के कुछ पृष्ठ नहीं थे और वह इन शब्दों से आरंभ होती थी—

''मित्र, मित्रगण, मित्र के...।''

''अब क्या किया जाए?'' विनीत छोटी औरत ने कहा। जब मैंने उसे बताया कि व्याकरण की पुस्तक मृतक के किसी काम की नहीं; तब बच्चे जैसा उसका चेहरा काँप गया और सूजी हुई आँखें पुन: डबडबा आईं।

''एक मनुष्य प्रसन्न जीवन जीता है!'' उसने सिसकियाँ भरते हुए कहा, ''और अंत में उसे सम्मानजनक अंत्येष्टि भी नहीं मिल पाती!''

मैंने उसे बताया कि मैं उसके पति के लिए वे सारे भजन और प्रार्थनाएँ पढ़ दूँगा जो मुझे याद हैं, केवल उसे झोंपड़ी के बाहर जाना होगा। मैं इस तरह का काम करने में अभ्यस्त नहीं था और मुझे पूर्ण प्रार्थनाएँ याद भी नहीं थीं। इसलिए जब कोई मुझे बोलता हुआ सुनता तो मैं भूल जाता था। उसने या तो मुझे समझा नहीं था या फिर मुझपर विश्वास नहीं किया था; क्योंकि देर तक सूँघती और अपनी कमीज की बाँहों से अपना थका चेहरा पोंछती हुई यह दरवाजे के पास खड़ी रही। कुछ समय के बाद वह बाहर चली गई।

काले आकाश में सूर्यास्त की लालिमा क्षितिज पर चमकी, जहाँ मैदान समुद्र से मिला हुआ प्रतीत होता था। झोंपड़ी पर नीला कुहरा छा गया और अपने साथ रात का कष्टकारक अँधेरा भी ले आया। मोमबत्ती लज्जापूर्वक जल रही थी। लेटा हुआ आदमी अधखुली आँखों से छाती पर पड़ते हुए कड़कड़ाते साए देख रहा था। मैंने अपनी आँख के कोने से उसे ध्यानपूर्वक देखा। कोई नहीं कह सकता था कि मृतक क्या कर बैठे! मैंने शुद्ध अंत:करण से धीमी आवाज में गाना आरंभ किया—

''हमारे पापों को क्षमा करो, भले ही हम जंगली पशुओं से भी बुरे हैं...।''

परंतु साथ-ही-साथ उन्हें नकारने के भी विचार जाग्रत हुए—

''जो कठिन और कड़वा है, वह पाप नहीं है, परंतु वह सचाई है; हमारे चेत एवं अचेत पाप, हमारी जवानी और बुरी शिक्षा के पाप और हमारी चंचलता और निराशा...!''

''ये तुमपर लागू नहीं होते, भाई।'' मैंने विचार किया।

परंतु आकाश के अनंत अँधेरे में नीले तारे टिमटिमाते रहे। मेरे अतिरिक्त उन्हें उस समय और कौन निहार रहा था?

दूर से गरजने की आवाज आई और सायंकाल की लाली में हर चीज काँप उठी।

पिटपट...पिटपट करता हुआ कुत्ता मिट्टी के फर्श पर चला। वह मेरी टाँगों को सूँघता, नरमी से गुर्राता इधर-उधर घूमता रहा और फिर चला गया। संभवत: अपने मालिक का गुर्राकर, जैसा कुत्ते प्राय: करते हैं—शोक मना रहा था। जब वह गया तो साए इसका पीछा करते प्रतीत होते थे; वे दरवाजे तक उड़े और मेरे चेहरे पर ठंडी पवन का पंखा किया। मोमबत्ती की ज्वाला अपने आपको मोमबत्ती से जुदा करके, छोटी और दयापूर्ण बनकर, मानो तारों की ओर उड़ जाना चाहती हो। मैं नहीं चाहता था कि वह लोप हो जाए। अत: उसके फड़फड़ाने को ध्यान से देखता रहा जिससे मेरी आँखें दुखने लगीं। पीड़ायुक्त झोंपड़ी में मेरा दम घुटने लगा। मैं मृतक के सिर की ओर निश्चलता और मौन को ध्यान से सुनता हुआ खड़ा हो गया। नींद की तीव्र इच्छा, जिसको जीतना कठिन था, मुझपर हावी हो गई। भरसक प्रयत्न के बाद मुझे मकारी, महान् जिटाउस और डेमस्किन के भजन याद आ गए और मेरे सिर में मक्खियों की तरह भिनभिनाने लगे।

''यदि तुम्हें नरम तकिया मिलता है तो उसे छोड़ दो और वहाँ ईसा मसीह के लिए पत्थर रखो। यदि तुम सर्दियों में सोते हो...।''

जागते रहने के लिए मैंने प्रशंसा का गीत गुनगुनाया—

''मेरे प्रभु, मेरी आत्मा को बचाओ, जिसको पापों ने बुरी तरह से दुर्बल बना दिया है।''

दरवाजे के पीछे से मैंने मंद बड़बड़ाहट सुनी।

''परमात्मा की दयालु माँ...मेरी आत्मा ले लो...।''

उसकी आत्मा मुझे सफेद कबूतर की तरह लगी और उसी तरह लज्जावान। जब यह उड़कर परमात्मा की माँ के सिंहासन की ओर जाएगी और माँ अपने सफेद हाथ आगे बढ़ाएगी तो यह छोटी आत्मा अपने छोटे पर फड़फड़ाना शुरू कर देगी और भययुक्त प्रसन्नता से मर जाएगी।

फिर परमात्मा की माँ अपने बेटे से कहेगी—

''देखो, पृथ्वी पर तुम्हारे लोग कितने भयभीत हैं। वे प्रसन्नता के आदी नहीं हैं। क्या यह ठीक है, मेरे बेटा?''

और वह उत्तर देगा।

''मैं नहीं जानता।''

उसके स्थान पर मैं गड़बड़ा जाता।

गहरे मौन में से एक उत्तर मिलता प्रतीत हुआ, वह भी गीत में। मौन इतना गहरा था कि दूर की आवाज इसमें डूबती हुई अप्राकृतिक प्रतीत होती थी—मेरी अपनी आवाज की मनमौजी प्रतिध्वनि। मैं रुक गया और सुनने लगा। आवाज स्पष्ट थी और निकट से ही आ रही थी। कोई अपने भारी पैरों को घसीटता और बड़बड़ाता हुआ आ रहा था—

''न...नहीं, वर्षा नहीं होगी।''

''कुत्ते क्यों नहीं भौंक रहे हैं?'' मैंने अपनी आँखें पोंछते हुए पूछा।

मुझे ऐसा लगा कि मृतक की भौंहों ने मरोड़ा खाया और मुसकराहट उसके होंठों पर काँप गई।

बाहर मैंने एक भारी आवाज सुनी।

''क्या? आह, बूढ़ी औरत...मैं जानती थी कि यह मर जाएगा। ठीक है, चुप रहो। जब तक इनका अंतिम समय नहीं आता, इस जैसे लोग खड़े हो जाते हैं और फिर हमेशा के लिए पुन: लेट जाते हैं, फिर कभी न उठने के लिए...कौन? ...अजनबी? ...ऊहूँ।''

किसी बड़ी और अँधेरे जैसी निराकार चीज ने दरवाजा खटखटाया और कमरे को अजीब वातावरण से भर दिया।

अपने हाथों को फैलाए एक आदमी आगे की तरफ लड़खड़ाया और मृतक के पैरों को अपने माथे से लगभग नरमी से छूता हुआ धीरे से बोला, ''ठीक है, वोसिल।'' फिर वह सिसकियाँ भरने लगा।

बोदका की तेज गंध आई। बूढ़ी औरत दरवाजे में खड़ी उससे प्रार्थना करने लगी—

''फादर डेमिड, इसे पुस्तक दे दो।''

''इसे क्यों दूँ, मैं स्वयं पढ़ूँगा।''

उसका भारी हाथ मेरे कंधों पर था और बालोंवाला उसका बड़ा चेहरा मेरी ओर झुका था।

''तुम अभी युवा हो, क्या तुम चर्च में हो?''

उसका सिर पीपे की तरह बड़ा था और उसके लंबे घने बाल मोमबत्ती की फड़फड़ाती ज्वाला से सोने की तरह चमक रहे थे। उसने लड़खड़ाकर मुझे इधर-उधर हिलाया। उसके मुँह से बोदका की गंध आ रही थी।

''फादर डेमिड!'' आँखों में आँसू भरकर हठ से बूढ़ी औरत ने कहा।

उसने उसको धमकाते हुए टोका।

''मैं तुम्हें कितनी बार बता चुका हूँ कि छोटे पादरी को फादर नहीं कहते; चलो, जाओ। बिस्तर पर जाओ। यह मेरा काम है। चली जाओ तुम...दूसरी मोमबत्ती जलाओ, मुझे कुछ भी नजर नहीं आ रहा है।''

बेंच पर बैठते हुए और पुस्तक को अपने घुटनों पर रखते हुए उसने पूछा—

''क्या तुम ड्रिंक लोगे?''

''यहाँ कुछ नहीं है।''

''यह क्या है?'' उसने कठोरता से पूछा, ''मेरे पास बोतल है, यह देखो।''

''यहाँ पीना उचित नहीं लगता।''

''तुम ठीक कहते हो, '' वह बड़बड़ाया—''मुझे बाहर जाना होगा।''

''तुम क्या करने जा रहे हो? बैठ जाओ और पढ़ो।''

''मैं? मैं पढ़ना नहीं चाहता। तुम पढ़ो। मैं अपने आपको...मेरे शत्रुओं ने मुझे पीसकर रख दिया है जैसे वे आसमान से लड़ने आए हों और इस सौदे में मैं अपने होश खो बैठा हूँ।''

उसने पुस्तक मेरी ओर फेंक दी और अपना सिर जोर से हिलाया—

''लोग मर रहे हैं, इसके बावजूद पृथ्वी पर अभी भी भारी भीड़ बची है...बिना कोई अच्छी चीज देखे लोग मर जाते हैं...।''

''यह धार्मिक भजन नहीं है।'' पुस्तक का परीक्षण करके मैंने कहा।

''तुम झूठ कहते हो।''

''यहाँ देखो।''

उसने पृष्ठ बदला और मोमबत्ती को उसके ऊपर लाते हुए गहरे लाल रंग के शब्द पढ़े—'ओकट्योच...।'

वह हैरान हो गया।

''ओकट्योच? यह यहाँ कैसे आई? इसका परिणाम भी तो भिन्न है...स्तोत्र संग्रह तो छोटी और मोटी पुस्तक है और यह...यह सब मेरी जल्दबाजी के कारण हुआ है।''

यह गलती उसे होश में ले आई। वह खड़ा हो गया और बूढ़े आदमी की दाढ़ी को छूते हुए उसके ऊपर झुक गया।

''वासिल, मुझे क्षमा करना...मैं क्या कर सकता हूँ?''

अपने आपको सीधा करते हुए उसने अपने घने बालों को हिलाया और जेब से बोतल निकालकर उसके सिरे को अपने होंठों से लगाया, फिर काफी देर तक साँस लेता हुआ उसे चूमता रहा।

''यह थोड़ी सी चाहते हो?''

''मुझे नींद आ रही है, पीऊँगा तो सो जाऊँगा।''

''ठीक है, तो सो जाओ।''

''और प्रार्थना?''

''यहाँ शब्दों को बड़बड़ाने से क्या लाभ, जबकि कोई समझता नहीं है!''

वह बेंच पर बैठ गया और झुकते हुए हाथों पर सिर रखकर चुप हो गया।

जुलाई की रात एकाएक पिघल रही थी। अँधेरा चुपचाप कोनों में खड़ा था। खिड़की में से प्रभात की ओस भरी ताजगी की महक आई। दो मोमबत्तियों की रोशनी पीली होती जा रही थी और उन दोनों की ज्वाला बीमार बच्चे की आँखों की तरह डरा रही थी।

''वासिल, यदि तुम जीवित होते, '' छोटा पादरी बड़बड़ाया—''तो मेरे पास आने-जाने के लिए कोई स्थान होता, परंतु अब मेरा अति उत्तम मित्र मर चुका है और कहीं भी जाने के लिए कोई स्थान नहीं है—प्रभु, तेरी न्यायपरायणता कहाँ है?''

मैं खिड़की के पास बैठा, सिर बाहर निकाले सिगरेट पी रहा था तथा झपकियाँ लेते हुए भारी विलाप को सुन रहा था—

''वे मेरी पत्नी को मार चुके हैं और मुझे भी चीर देंगे, जैसे सूअर बंदगोभी को चीर देता है! क्या यह ठीक है, वासिल?''

छोटे पादरी ने फिर अपनी बोतल निकाली; उसे चूमा, अपनी दाढ़ी साफ की और मृतक के ऊपर झुककर उसका माथा चूमा—

''अलविदा, मेरे मित्र!''

वह मेरी ओर मुड़ा और आकस्मिक शक्ति एवं स्पष्टता से बोला, ''वह एक सादा मनुष्य था; औरों की अपेक्षा उसमें कोई विशेषता नहीं थी। वह कपटियों में कपटी प्रतीत होता था, परंतु वह कपटी नहीं था। वह सफेद कबूतर था और मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था...सच कह रहा हूँ। और अब वह केरओ के कष्टप्रद काम से निवृत्त हो चुका है; मैं अभी जीवित हूँ और मेरे शत्रु बाकी बचे हैं।''

''क्या तुम्हें बहुत दु:ख हुआ है?''

उसने तुरंत उत्तर नहीं दिया, फिर उत्सुकता से बोला—

''हर एक को जरूरत से अधिक शोक है—मुझे भी इतना ही है...यदि तुम सो जाते हो...तो तुम्हारा दु:ख तुम्हारे स्वप्नों में पीछा करता है।

यह कहता हुआ वह ठोकर खाकर मेरे ऊपर गिर गया।

''मैं गाना चाहता हूँ, परंतु अभी नहीं। लोग जाग जाएँगे और बुरा मानेंगे...परंतु मैं गाना चाहता हूँ।''

धीरे से उसने उसके कान में गुनगुनाया—

विलाप अपना सुनाऊँ तो किसको

किसके लिए करे मेरा दिल विलाप

किसका ह...हा...थ...

उसकी दाढ़ी ने मेरी गरदन पर गुदगुदी की और मैं वहाँ से हट गया।

''तुम्हें अच्छा नहीं लगा? ठीक है, तुम्हें शैतान समझे! जाओ, अब सो जाओ।''

''तुम्हारी दाढ़ी से गुदगुदी होती है।''

''क्या तुम्हारे लिए अपनी दाढ़ी मुँडवा दूँ, मेरे प्यारे?''

वह थोड़ी देर के लिए चिंताग्रस्त हो फर्श पर बैठ गया।

''अच्छा तुम पढ़ो, मैं सोने जाता हूँ; पुस्तक लेकर भाग न जाना, यह चर्च की है। मुझे पहले भटकने का अनुभव हो चुका है। तुम जगह-जगह क्यों भागते फिरते हो? तुम इधर-उधर क्यों भटकते हो? अंततः तुम जा किधर रहे हो? कौन सी वस्तु तुम्हें खींचती है? अपने रास्ते पर चलो। कहो कि एक छोटे पादरी का विनाश हो गया है। किसी व्यक्ति से कहो, जो मुझपर दया करे। डवोमिड कुवेसोव, एक छोटा पादरी, जो मैं हूँ...मुक्ति से परे...।''

वह सो गया। पुस्तक को खोलते हुए मैंने पढ़ना शुरू कर दिया।

''बिना बोई भूमि, जो सबको पालनेवाली बन गई है, जो अपने हाथ खोलती है और अपने परोपकार से सभी प्राणियों को खिलाती है...।''

''सबको पालनेवाली!'' मेरे सामने सूखी सुगंधित घास से ढकी पड़ी थी। मैंने निद्रालु आँखों से उसके अँधेरे चेहरे को यह सोचते हुए देखा कि एक आदमी, जो उसके रास्तों में कई बार चल चुका था, उसे केवल एक ही चिंता थी कि मृतक एक बार जीवित हो जाए। मेरे दिमाग में अजीब-अजीब खयाल उभरे। मैंने खाली, निर्जन मैदान में एक आदमी को ऐंठकर चलते देखा। उसने हजारों हाथों से पृथ्वी का आलिंगन किया था। उसके रास्ते में मरे हुए मैदान जीवित हो उठे और फल, गाँव और नगर उसमें पैदा हो गए। वह फिर भी निरंतर मानव जीवन बोता हुआ चलता रहा। पृथ्वी ने सब मनुष्यों से दया से व्यवहार किया, उनकी समस्त गुप्त शक्ति पृथ्वी को पराजित करने के लिए जुटाई गई—मृतक को सदा के लिए जीवनदान देने के लिए सभी लोग प्राणघातक रास्तों से अमरता की ओर चले; मनुष्य ने मृत्यु का बीज खाया, परंतु वह मरा नहीं!

कई विचार भटकते हुए दिल में आए। उनके परों की खड़खड़ाहट ने एक प्रसन्न बोध उत्पन्न कर दिया। मैं उससे कई प्रश्न पूछना चाहता था, जो उनका उत्तर सादगी, निडरता और ईमानदारी से दे सकता।

मेरे सामने मृतक और सोया हुआ व्यक्ति पड़े थे; बाहर गोदामों में जीवन के चिह्न थे, परंतु इसका कोई अर्थ नहीं था। संसार में बहुत लोग हैं जिनमें से चिर-इच्छित व्यक्ति को देर-सवेरे ढूँढ़ ही लूँगा।

मैं खुले मैदान में बनी झोंपड़ी से बाहर आ गया था और पीछे मुड़कर देखने से वह पृथ्वी का मात्र चिह्न प्रतीत होती थी। झोंपड़ियाँ पास-पास थीं; सिवाय इस झोंपड़ी की खिड़कियों के बाकी सबकी खिड़कियों में अँधेरा था और इसमें कैद की गई मंद रोशनी मृतक के सिर पर झिलमिला रही थी।

यह वह दिल था जिसने धड़कना बंद कर दिया था। मैंने यथार्थ में देखा कि सामान्य विनीत व्यक्ति मरा हुआ था, परंतु जब उसके काम के बारे में विचार किया तो वह वस्तुतः बड़ा था—मैदान के खलिहानों में पड़ी कच्ची, कुचली हुई मकई को, सुनहरे अनाज के ऊपर नीले गगन में उड़ती अबाबीलों को और भूमि पर बिखरे स्वयं मैदानों को मैंने याद किया।

मैंने पंखों को फड़फड़ाते सुना। ओस से चाँदी-सी दिखाई देनेवाली छोटी घास के ऊपर पक्षियों के साए गुजर रहे थे।

मुर्गे बोल रहे थे—पाँच मुर्गे। बतखें जाग गई थीं। गायों ने रंभाना आरंभ कर दिया था और वहीं पर बबूल की बाड़ चिरचिरा रही थी। मैंने बाहर मैदान में जाना चाहा, ताकि वहाँ की खुश्क, गरम भूमि पर सो सकूँ। छोटा पादरी

मेरे पाँव के पास सो रहा था। वह अपनी चौड़ी छाती को खोले पीठ के बल लेटा हुआ था। उसके अग्निमय बाल प्रभामंडल की तरह चमक रहे थे। उसका लाल चेहरा गुस्से से फूला हुआ था, मुँह खुला था और उसकी मूँछें धीरे-धीरे हिल रही थीं। उसके हाथ लंबे और अंगुलियाँ बगीचे के काँटों की तरह निकली हुई थीं।

अनिच्छा से मैंने सोचा कि यह आदमी किसी औरत का आलिंगन किए हुए था। उसका चेहरा इसकी दाढ़ी से ढक गया था और उसने हँसकर अपना सिर पीछे कर लिया था, क्योंकि उसे गुदगुदी हुई होगी। मैंने हैरानी से विचार किया कि उसके कितने बच्चे होंगे!

यह सोचना अप्रिय था कि उसके मन में शोक है, जबकि आनंद होना चाहिए था।

बूढ़ी औरत का दयालु चेहरा दरवाजे से झाँका और खिड़की में से आते सूर्योदय की पहली किरण को मैंने देखा।

हलकी, सिल्की, पारदर्शी धुंध नदी के ऊपर झूम रही थी और वृक्षों में अद्‌भुत निश्चलता थी, जो यह सोचने पर विवश करती थी कि वे गीत गाने के लिए अभी फूट पड़ेंगे और फिर समझदार आत्मा के लिए प्रकृति का महान् रहस्योद्‌घाटन करेंगे!

''इतना अच्छा आदमी!'' बूढ़ी औरत ने छोटे पादरी के बड़े शरीर को शोकपूर्ण देखते हुए धीमे से कहा।

जैसाकि मैं पुस्तक पढ़ते समय सुन नहीं सका, उसने सादे शब्दों में उसकी पत्नी की कहानी सुनाई।

उसने किसी आदमी के साथ पाप किया था। लोगों को इसका पता चल गया तो उसके पति को बताया। जब उसने उसे क्षमा कर दिया तो वह लोगों पर हँसा। उस दिन से शर्म के मारे वह घर से बाहर नहीं निकली और यह शराब पीने लग गया—इस बात को अब दो वर्ष बीत गए थे और संभवत: अब उसे जल्दी ही पदच्युत होना पड़े। बूढ़ी औरत ने आगे बताया कि उसका पति कभी भी शराब नहीं पीता था, बल्कि वह छोटे पादरी को पीने से रोकने का प्रयत्न करता था।

''आह, बुरा हो, लोगों को अपने ऊपर हावी न होने दो, सादगी से रहो; उनको अपना काम करने दो और तुम अपना काम करो।''

उसकी छोटी आँखों से आँसू गिरे और सूजे हुए गालों की झुर्रियों में गुम हो गए। उसका सिर सर्दियों के सूखे पत्ते की तरह हिला; दु:ख से मुरझाए हुए उसके दयालु चेहरे को देखने से दया आती थी। मैंने अपने अंत:करण में सांत्वना के कुछ शब्द ढूँढ़े; परंतु उनके न मिलने पर मुझे कष्ट हुआ।

बहुत समय पहले कहीं पढ़े हुए शब्द मुझे याद आए—

'परमात्मा के सेवकों को हँसना चाहिए, रोना नहीं; रोना मनुष्य और परमात्मा के लिए अपमानकारी है।'

''मुझे चलना चाहिए।'' मैंने व्याकुल होकर कहा।

''आह।''

यह जल्दबाजी की पुकार थी, मानो मेरे शब्दों ने उसे चौंका दिया हो। उसके काँपते हाथों ने कमीज की जेब में कुछ ढूँढ़ने का प्रयास किया। इतने में उसके होंठ चुपचाप हिल रहे थे।

''मुझे पैसे नहीं चाहिए, श्रीमती, मुझे खाने के लिए रोटी दो, यदि है तो।''

''तुम्हें पैसे नहीं चाहिए?'' उसने शंका से पूछा।

''मेरे किस काम आएँगे?''

''जैसी तुम्हारी इच्छा।'' वह उदासी से मान गई—''तुम्हारी इच्छा, जाओ। अच्छा, धन्यवाद।''

मेरे सामने नीले आकाश में सूर्य मोर के पंखों की तरह गर्व से पृथ्वी पर अपनी किरणों का प्रदर्शन कर रहा था। मैंने इसपर आँखें झपकाईं। मैं जानता था कि एक या दो घंटे के बाद यह मुसकराहट आग में बदल जाएगी; फिर भी

क्षण भर के लिए हम एक-दूसरे से प्रसन्न थे। मैं मकई के खेतों में उसकी और जीवन के मालिक की प्रशंसा का गीत गाता चला जा रहा था—

ओ, अगम्य प्रकृति,
आने दो अपने पास मुझे,
जगा दो मेरी आत्मा को,
अपने अंदर स्नान करने दो मुझे,
ले चलो मुझे अपने साथ,
अच्छाई और बुराई से दूर—बहुत दूर, बहुत दूर!
हम सादगी से रहते हैं,
उन्हें अपना काम करने दो,
और हमें अपना!

❑

वानिया

—मैडम एस्टाफीवा

अपने मासूम गुलाबी चेहरे को लिये मिलोचका सोफे के तकिए में दबी बुरी तरह से रो रही थी। उसके युवा जीवन में दुर्भाग्य निर्दयता और अप्रत्याशित ढंग से पहली कष्टदायक निराशा लाया था। उसने अधीरता से उस दिन की प्रतीक्षा की थी जब वह सोलह वर्ष की हो जाएगी और छोटी लड़की से युवती में बदल जाएगी; वह पहली बार लंबी, मलमल की सफेद पोशाक पहनेगी और अपने पहले नाच के लिए जाएगी।

वह इस घटना का सपना बहुत दिनों से देख रही थी, परंतु उस दिन प्रात:काल उसकी माँ ने एकाएक बताया कि उसे पोशाक नहीं मिलेगी और नाच के बारे में उसे सोचना भी नहीं चाहिए, क्योंकि खर्च करने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं।

मिलोचका के लिए यह दु:खदायी चोट थी। बचपन से ही वह समस्त परिवार की लाड़ली रही थी। उसे इस बात का पता नहीं था कि उसके लिए किसी चीज को मना कैसे किया जाता था। कुछ ही समय पहले वह सुख-सुविधाओं से घिरी रहती थी और सोच भी नहीं पाई थी कि पिता की मृत्यु के बाद इस वैभवमय जीवन का अंत हो जाएगा और गत एक-डेढ़ वर्षों में, जब से वह इनसे एकाएक जुदा हो गया था और जोकुछ हजार ही छोड़ गया था—सब खर्च हो गए थे। अब उन्हें नए सिरे से किसी दूसरे ढंग का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होना पड़ेगा।

वह बड़े दिनों की छुट्टियों में छात्रावास से घर आई थी और अपने पहले नाच के सुखद पूर्वाभास को अपने साथ लाई थी, परंतु अब उसके सारे सपने निर्दयता से बिखर गए थे। यह उसके लिए अत्यंत भयंकर था।

घर में बड़े दिन के लिए तैयारियाँ हो रही थीं, परंतु अपने दु:ख से पूरी तरह ग्रसित मिलोचका इस ओर ध्यान नहीं दे रही थी। उसने आँसुओं से मलिन अपना चेहरा तकिए से उठाकर स्कूली वरदी पहने अपने भाई वानिया को बुलाया और उससे निराशापूर्ण स्वर में बोली, ''तुम जानते हो, वानिया, यह मेरा सपना था—मधुरतम सपना।'' और कुछ क्षणों के लिए अपने दु:ख को भूलकर कहना जारी रखा—''मैं और टानिया—टानिया को जानते हो? वह चतुर लाल बालोंवाली!''

वानिया ने सिर हिला दिया।

''टानिया और मैं हमेशा अपने पहले नाच की बात किया करती थीं और हमने निर्णय लिया था कि वह लाल पोशाक पहनेगी और मैं सफेद। आज माँ ने कहा है कि यदि वह मुझे पोशाक दे दे, तो भी नाच में अपने साथ नहीं ले जाएगी, क्योंकि उसके पास पहनने के लिए अच्छी पोशाक नहीं है। उसने अपने तमाम अच्छे गाउन बेच दिए हैं। मैं अपने पहले नाच—अपने पहले सुंदर नाच में नहीं जा सकूँगी।'' उसने रोते हुए कहा और एक बार फिर अपने सिर को तकिए में दबाकर जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया।

वानिया कुछ सोचते हुए खड़ा हुआ और अपनी बहन की ओर देखता हुआ मुड़ा तथा तेज चाल से चलता हुआ बरामदे में चला गया। जाते-जाते उसने अन्ना (उसकी सौतेली माँ) के दरवाजे की ओर चिंता से देखा, ताकि अपने आपको आश्वस्त कर सके कि बाहर खिसकते हुए उसे कोई देख तो नहीं रहा है और जल्दी से अपना कोट पहनने लगा।

''ओह, मुझे अकेली छोड़ दो, '' उसने अन्ना की क्रुद्ध आवाज को सुना—''मैं तुम्हें बार-बार कह चुकी हूँ कि इस वर्ष क्रिसमस ट्री नहीं बनेगा और यदि तुम रोना-धोना बंद नहीं करोगी तो मैं तुम्हें कमरे से बाहर निकाल दूँगी।''

परंतु इस कठोर चेतावनी का स्पष्टतया कुछ भी लाभ नहीं हुआ, क्योंकि एक क्षण के बाद ही उसने अपनी माँ के कर्कश स्वर को सुना—

''जो तुम्हारी माँ कहती है, उसको तुम इस तरह से सुनती हो क्या? जाओ, बच्चों के कमरे में।'' पाँच वर्षीया लड़की को धक्का देती हुई अन्ना दहलीज पर प्रकट हुई। बच्ची ऐसे रो रही थी कि उसका दिल टूट जाएगा।

''और अब तुम कहाँ जा रहे हो?'' अन्ना ने वानिया को बाजार जाने के लिए कोट पहने और हाथ में टोपी थामे हुए देखकर अप्रसन्नता से पूछा।

''मैं...मैं जल्दी ही लौट आऊँगा।'' वानिया ने उसकी आँखों का परिहार करते हुए और अपनी टोपी को भद्दी तरह खींचते हुए काँपती आवाज में उत्तर दिया।

''मैं तुम्हारी लगातार अनुपस्थिति को पसंद नहीं करती, '' अन्ना ने ठंडी और लगभग वैरी दृष्टि से अपने सौतेले बेटे को घूरा, ''मैं नहीं जानती कि तुम हमेशा कहाँ जाते हो? पिछले दो महीनों से तुम खाने के समय ही घर में नजर आते हो और मुझे बताना भी जरूरी नहीं समझते कि तुम जाते कहाँ हो? तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारे व्यवहार की सारी जिम्मेदारी मेरी है। लोग कहेंगे कि तुम्हारी माँ बुरी है।''

''परंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, माँ, कि मैं कोई गलत काम नहीं कर रहा हूँ। मैं केवल पढ़ने जा रहा हूँ।''

''तुम आज घर पर ही ठहर सकते थे। तुम जानते हो कि छुट्टियों से पहले घर में भी बहुत कुछ करने को होता है। तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो। अच्छा, बताओ, तुम अपने कमरे के दरवाजे को अब कुछ दिनों से ताला क्यों लगाते हो?''

वानिया बहुत व्याकुल हो गया और सकपका गया।

''वहाँ...मुझे डर है कि कहीं सोनिया और मिटिया मेरी पुस्तकें और दूसरे कागज न फाड़ दें...।''

''कितनी समझदारी की बात है! तुम कब से पुस्तकों के प्रति सावधान हो गए?'' उसने व्यंग्य कसते हुए पूछा और एकाएक मुड़ते हुए ठुनकते बच्चे के साथ उनके कमरे में चली गई।

वानिया ने जाते हुए अपनी सौतेली माँ की ओर एक क्षण देखा और अपनी टोपी को नीचे खींचते हुए घर से जल्दी निकल गया।

खानेवाले कमरे में मिलोचका अब भी रो रही थी। बच्चों के कमरे में दोनों बच्चे—सोनिया और मिटिया—दाया को यह बताने में होड़ ले रहे थे कि बहुत समय पहले उन्होंने कितना प्यारा क्रिसमस ट्री बनाया था। उन्होंने दु:खी और दयनीय भाव से शिकायत की कि प्यारे परमात्मा ने उनके पिता को छीन लिया और माँ कहती है कि वे फिर कभी भी क्रिसमस ट्री नहीं बनाएँगे।

बूढ़ी दाया बच्चों को सांत्वना देने का प्रयास जितने अच्छे ढंग से कर सकती थी, किया; सुंदर लटोंवाले उनके सिरों को प्यार से थपथपाया और उस अद्‌भुत बच्चे के बारे में बताया जो कई शताब्दियों पहले पशुओं की नाँद में पैदा हुआ था। उन्हें बड़े तारे की बाबत बताया, जो आकाश में उदित हुआ था और जिसने चरवाहों और बुद्‌धिमान मनुष्यों को उस स्थान का रास्ता बताया था जहाँ मुक्त करनेवाला आराम कर रहा है।

उसने अद्‌भुत शिशु की बाबत उत्साहपूर्वक विस्तार से बताया कि बच्चे अपना दु:ख भूलकर उसके साथ सिमट गए। उन्होंने अपनी दाया की सारी कहानी आश्चर्य और प्रसन्नता से सुनी।

इस बीच अन्ना दु:ख से सिर को झुकाए बिना बिछे बिस्तर पर बैठी थी। यादों की लंबी डोरी ने उसके मन में बाढ़ ला दी। उसने अपने पिता के घर गुजारे अपने स्वतंत्र, प्रसन्न बचपन को और कुँवारेपन के उन वर्षों को, जो उसने कॉलेज में अपनी प्यारी सहेलियों के साथ गुजारे थे—याद किया। अंतत: वह चिर प्रत्याशित अपने सोलहवें

वर्ष को पहुँच गई। अब वह लंबी स्कर्ट में एक युवती थी। उसे अपना भविष्य कितना शानदार और लुभानेवाला नजर आया। उसका दिल अनजाने, परंतु अत्यंत मधुर भविष्य के लिए प्रसन्नता से धड़कने लगा। वह केवल सत्रह वर्ष की थी जब उसने एक युवा विधुर से विवाह किया, जिसका पहली पत्नी से एक वर्ष का बच्चा था।

उसने अपने पति से निश्छल प्यार किया और अपने विवाहित जीवन में अत्यंत प्रसन्न रही थी। यदि कभी परस्पर झगड़ते भी थे तो वह वानिया को लेकर। वह इस विचार से समझौता नहीं कर सकती थी कि केवल कुछ ही समय पहले किसी दूसरी औरत ने उससे प्यार किया था और वह औरत इस छोटे बच्चे को अपने प्यार की प्रतिज्ञा के रूप में छोड़ गई थी, जिसको पिता पूजता था। यह चपल, घरेलू, हठी लड़का वानिया, जो उसको अपनी भूरी बड़ी आँखों से शंका की नजर से देखता था और जो पिता को अथाह प्यार करता था तथा प्रसन्नतापूर्वक उसका दुलार पाता था, उससे उसके पति के दिल का भाग छीन रहा था, ऐसा उसे प्रतीत होता था और उनके अन्यथा सुखी जीवन में कलह का कारण भी वही था। वह उसे नहीं चाहती थी; इस भावना को कठिनाई से ही दबा पाई थी और अब अपनी पुरानी यादों में डूबी बैठी थी। उसे एक क्षण के लिए भी अपने सौतेले लड़के के प्रति अपनी निर्दयता और अन्याय के लिए ग्लानि नहीं हुई थी। उसे अपने ही बच्चों और निर्धनता, जो उन्हें धमका रही थी, का ध्यान था। उसने यह भी विचार किया कि भाग्य ने उसके साथ भी अन्याय किया है।

उसने याद किया कि कितने वर्ष पहले उसने—एक युवा सुंदर औरत ने—जो वैभव और पति के कोमल प्यार तथा प्रशंसकों से घिरी रहती थी, समानता के विचार का प्रचार किया था। वह इस विचार से अनुरागपूर्वक संबद्ध थी और उसने दृढ़ विश्वास के साथ घोषणा की थी कि स्वेच्छाचारी समय बहुत पहले गुजर चुका था; और अब परिवार में पत्नी के उतने ही अधिकार हैं, जितने पति के।

अन्ना कड़वेपन से मुसकराई!

''हाँ, '' उसने धीरे से कहा, ''मैंने अपनी स्वतंत्रता और समान अधिकारों को कायम रखा है; बाकी सबकुछ कब्र में है।''

वह जब केवल पैंतीस वर्ष की थी तथा अभी युवा एवं सुंदर लगती थी, पति की मृत्यु के बाद अपने आपको बूढ़ी महसूस करने लगी और अपने बच्चों के पालन-पोषण में तथा उन्हें यथासंभव भूख-प्यास से बचाने के लिए उसने स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर दिया था। वह अपने आपको भूल गई थी।

उसने जिस आदमी से सच्चा प्रेम किया था, उसके लिए केवल गहरी व्यथा और बच्चों के भविष्य के प्रति निरंतर भय को, वह एक क्षण भी भूल नहीं पाई थी। अकेलेपन और असहायता की भावना उसके अंदर जोर पकड़ने लगी थी। उसने याद किया कि अपने प्यारे पति के जीवनकाल में वे किस तरह क्रिसमस का त्योहार मनाया करते थे—शानदार खाना और कीमती पोशाकें पहने मेहमानों के झुंड! और उसका दिल पीड़ा से सिकुड़ गया। लंबी आह भरकर और अपने आँसू पोंछकर वह धीरे से चारपाई से उठी।

खाना लगाने का समय हो गया था। रात उतर रही थी। काले आकाश में इक्के-दुक्के तारे प्रकट हो रहे थे और हलकी चाँदी-सी रोशनी फेंक रहे थे।

''वानिया कहाँ है? फिर चला गया?'' अन्ना ने मेज पर बैठते हुए पूछा। सोनिया और मिटिया अपनी छुट्टीवाली पोशाकें पहने और मिलोचका, जो अभी तक उदास थी और जिसकी रोने के कारण आँखें लाल थीं, पहले ही मेज पर बैठी थी।

''वह हमेशा ही गायब रहता है।'' बच्चों को सूप देते हुए उसने कठोरता से कहा।

यह देखते हुए कि उनकी माँ गुस्से में है, बच्चे शांत हो गए और उन्होंने अपना खाना चुपचाप खाया।

छोटे, सुखकर खाने के कमरे की शांति केवल चम्मच और प्लेटों के टकराने से ही भंग होती थी। अंतत: वह शोर भी समाप्त हो गया। हर कोई अपने-अपने विचारों में डूबा निश्चल बैठा था। केवल लाल गालोंवाला मिटिया इधर-उधर देख रहा था; मानो कोई चीज ढूँढ़ रहा हो। अंत में वह छोटी कुरसी के पीछे खड़ी अपनी बूढ़ी दाया की ओर मुड़ा और उससे धीरे से पूछा—

''न्यानिया, क्या छोटे फरिश्ते आ चुके हैं?''

''वे आ गए हैं। हाँ-हाँ, आ गए हैं, मेरे प्यारे, अच्छे बनो जैसा मैंने तुम्हें सिखाया है, नहीं तो वे उड़ जाएँगे और प्यारे प्रभु की अच्छी क्रिसमस की कहानी अपने साथ ले जाएँगे।''

इन शब्दों पर अन्ना ने नाराजगी का भाव प्रकट किया और जोर से कहा—

''न्यानिया, मैं तुम्हें कहती हूँ कि बच्चों को परियों की कहानियाँ किसी और समय सुनाया करो, न कि जब वे खाने की मेज पर बैठे हों।''

''परंतु ये परियों की कहानियाँ नहीं हैं, मैडम! मैंने तो उन्हें केवल अपना व्यवहार ठीक रखने के लिए कहा था, नहीं तो फिर उन्हें क्रिसमस ट्री नहीं मिल पाएगा।''

''उन्हें मिलता है या नहीं, यह मेरा मामला है। उसमें फरिश्तों का क्या काम है?''

''यह कैसे हो सकता है?'' बूढ़ी औरत ने अपने आपको दु:खी महसूस करते हुए कहा, ''वास्तव में यह फरिश्तों का ही काम है। हर कोई जानता है कि क्रिसमस की पूर्व संध्या पर फरिश्ते अच्छे आदमियों के साथ उड़ते हैं और तोहफे देते हैं।''

''मम्मी-मम्मी, वानिया आ गया है।'' अपने भाई को बरामदे में आता देखकर सोनिया चिल्लाई।

''ठीक है, आ गया है तो आ जाने दो, तुम किसलिए चिल्ला रही हो?'' अन्ना ने क्रुद्ध होकर कहा। अपने सौतेले लड़के, जो अभी-अभी दहलीज पार करके आया था, की तरफ मुड़ते हुए उसने कठोरता से पूछा—

''कहाँ गए थे तुम?'' और उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना उसने कहना जारी रखा—''तुम्हें कम-से-कम छुट्टी का मान करते हुए कुछ अच्छे कपड़े पहनने चाहिए और यह सच है कि हमारे यहाँ कोई मेहमान नहीं आ रहा है, फिर भी उचित ढंग से दिखाई देने में कोई हानि नहीं होती। अपनी तरफ देखो, कैसे नजर आ रहे हो!'' और उसने विशेषकर धब्बों से भरे छोटे कोट की ओर संकेत किया।

लड़का गुस्से से लाल हो गया।

''पहनने के लिए मेरे पास और अच्छे कपड़े नहीं हैं। मेरे सारे कपड़े फट चुके हैं।'' उसने अपनी प्लेट को देखते हुए उत्तर दिया।

''और तुम्हारी पढ़ाई? क्यों, तुम बीस रुबल मासिक से अधिक कमा रहे हो।''

''परंतु लगभग सारे-के-सारे तुम्हें दे देता हूँ!'' वानिया ने ग्लानि से सौतेली माँ को देखते हुए बड़ी धीमी आवाज में कहा।

इस उत्तर ने अन्ना को सहमा दिया। आगे बिना एक भी शब्द बोले उसने अपना सारा ध्यान बच्चों की ओर लगा दिया।

''मैंने एक बड़ी तसवीर वानिया के कमरे में देखी है।'' सोनिया ने एकाएक कमरे की दर्द भरी शांति को भंग करते हुए कहा, ''यह फर्श पर पड़ी थी और वानिया ने उसपर रंगदार पेंसिलों से कुछ खींच रखा था—इतनी बड़ी तसवीर!'' छोटी लड़की ने भुनभुनाकर और अपने लाल होंठों पर हठ करने का भाव लाते हुए कहना जारी रखा—''वानिया मेरे लिए हमेशा ताला लगा लेता है और कमरे में नहीं आने देता, परंतु मैंने हर वस्तु देख ली है।''

''यह मैं क्या सुन रही हूँ, वानिया?'' तुम चित्रों से खेलते हो? मैं तुम्हें बधाई देती हूँ, यह अच्छा शगल है, विशेषकर स्कूल की छठवीं कक्षा के विद्यार्थी के लिए, जिसकी परीक्षा सिर पर मँड़रा रही है!'' अन्ना ने व्यंग्य कसते हुए कहा।

वानिया ने कोई उत्तर नहीं दिया और अपने सिर को प्लेट पर झुका दिया।

वह पहले ही से अपनी सौतेली माँ के व्यवहार का आदी हो गया था, परंतु उसके चुभनेवाले शब्दों से उसे दु:ख होता था। जिस खुशी के विचार से वह घर आया था, वह तुरंत हवा हो गया। जैसे-जैसे उसके बचपन और शुरू जवानी की तसवीरें सामने उभरने लगीं, उसका दिल पीड़ा से सिकुड़ने लगा। वानिया, जिसको माँ का दुलार नहीं मिला था, अपने पिता के घर एक अजनबी की भाँति रह रहा था। उसके पिता ने उसे भरपूर प्यार किया था, परंतु सिविल इंजीनियर होने के नाते वह अपने काम से परिवार के लिए पर्याप्त समय नहीं जुटा पाता था। कर्मठ व्यापारी और सदा अति विश्वस्त रूप से काम में लीन रहते हुए उसने अपने बच्चों को अधिक प्यार से बिगाड़ा नहीं था और वानिया के साथ ठीक दूसरे बच्चों की तरह शांति से एक जैसा व्यवहार किया था। वानिया का दिल उस समय कैसे आनंद से उछला करता था, जब सौतेली माँ के अन्यायपूर्ण व्यवहार को देखकर पिता उसे कोमल और मधुर शब्दों से सांत्वना देता था और प्यार करता था, परंतु ऐसा प्राय: नहीं होता था। समय व्यतीत होता गया तथा दुर्व्यवहार के बीच पला बच्चा वानिया जवान हो गया और परिवार में अपनी स्थिति को भली प्रकार समझने लगा। भले ही उसने भरसक प्रयास किया कि अपनी सौतेली माँ को नाराज न करे, परंतु उनके परस्पर संबंध सुधरे नहीं। उसने माँ के दुर्व्यवहार को हमेशा नम्रता से, आदरपूर्वक सहन किया, जिसने उसको और भी कुरद्ध किया।

परंतु उसके पिता की एकाएक मृत्यु हो गई और वानिया के जीवन तथा सारे परिवार की दशा में मौलिक परिवर्तन हो गया। वैभवयुक्त वातावरण, जान-पहचानवालों का बड़ा जमावड़ा, आनंदमय स्वतंत्र जीवन—सब ऐसे हो गए जैसे जादू ने उड़ा दिए हों। यह न समझते हुए कि पिता अपने काम में ढेरों रुपए वार्षिक कमाता था, मरते समय एक पैसा भी परिवार के लिए नहीं छोड़ा था, सिवाय थोड़ी पेंशन के, जो घर के खर्च के लिए पर्याप्त नहीं थी।

बड़े एवं सरकारी मकान से निकलकर परिवार को पाँच कमरे के एक मकान में रहना पड़ा था और यहाँ से उनका भूख और प्यास का जीवन शुरू हुआ। वानिया उस समय पूरे अठारह वर्ष का था।

परिवार की दुर्दशा देखकर उसने छोटा-मोटा काम कर लिया, जिससे उसकी पढ़ाई का खर्च और उसके कमरे का किराया निकल जाता था।

पहले तो अन्ना ने कमरे का किराया लेने को अनसुना कर दिया, परंतु बाद में इसको प्यारहीन सौतेले बेटे की सहायता समझकर अनैच्छिक रूप से स्वीकार कर लिया।

वानिया अपने छोटे भाई और बहनों को बहुत चाहता था। वह अपनी पढ़ाई में बड़ा परिश्रमी था और अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था कि वह तकनीकी स्कूल में कब जाएगा। वह अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने के सपने देख रहा था और उनका व्यवसाय चुनना चाहता था। परिवार की आर्थिक दशा को सुधारना उसके जीवन का उद्देश्य था तथा अपनी सौतेली माँ पर नैतिक विजय पाना तथा कई वर्षों से सहते आ रहे उसके दुर्व्यवहार को समाप्त करना उसके जीवन का लक्ष्य था।

उसके होंठों से अनुचित निंदा सुनकर उसे अत्यंत पीड़ा होती थी, परंतु वह जाहिर नहीं करता था कि उसे कितना दु:ख होता था और चोट पहुँचती थी। वह हमेशा ही मेज से उठकर आदरपूर्वक अपनी सौतेली माँ का हाथ चूमकर अपने कमरे में जाता था।

वानिया को जाता देखकर अन्ना अपने कंधे झटकाकर चुपके से मेज से उठती थी।

मिलोचका ने गहरी आह भरी और अपने सोफे पर पलट गई, जबकि दाया ने बच्चों को कुछ धीमी आवाज में कहा और उन्हें उनके कमरे में ले गई।

दु:ख के निर्दयी भाव ने अन्ना को दबोच लिया। वह प्रत्यक्ष रूप से मेज साफ करनेवाले नौकर अथवा सोफे पर निश्चल बैठी मिलोचका की ओर ध्यान न देते हुए। काफी देर तक कमरे में घूमती रही।

उसके विचार एक बार फिर बीते दिनों की ओर मुड़े। पति के साथ उसके स्वतंत्र, प्रसन्न जीवन की तसवीर उसकी इच्छा के विरुद्ध उसकी आँखों के सामने आ गई।

यह विचार न करते हुए कि उसके पास करने को बहुत काम पड़ा था, उस अच्छे स्वभाववाले और प्रसन्नचित्त आदमी ने अपने इर्दगिर्द सबको जीवन के आनंद से रंग दिया था।

'बाप और बेटे के चरित्रों में कितनी स्पष्ट भिन्नता है!' अन्ना ने अपने सामने शांत और बेमेल वानिया की तसवीर खींचते हुए सोचा—'इसे अपनी माँ जैसा होना चाहिए था।' और एक बार पुन: ईर्ष्या की भावना, जिसने बीते दिनों में उसे बहुत दु:ख दिया था, उसके दिल में जाग उठी। वह अपने कमरे में जाने के लिए तेजी से मुड़ी, जब उसने वानिया को आकस्मिक रूप से जल्दी-जल्दी आवाज लगाते सुना।

''माँ, मिलोचका, कृपया मेरे कमरे में आओ। मैंने बच्चों के लिए एक अजीब चीज बनाई है। कृपया सोनिया और मिटिया को बुलाओ और उन्हें जल्दी आने के लिए कहो।'' और एकाएक व्याकुलता से लाल होकर उसने कहना जारी रखा—''मैंने उनके लिए एक छोटा क्रिसमस ट्री बनाया है और मोमबत्तियाँ जला दी हैं।''

''तुमने बच्चों के लिए—क्रिसमस ट्री?'' अन्ना ने हैरानी से उसे देखते हुए और अपनी आँखों पर विश्वास न करते हुए पूछा।

वानिया ने उसके चेहरे की तरफ आँखें उठाईं और दोषी मुसकान के साथ मुसकराते हुए धीमी आवाज में कहा, ''हाँ, मैंने इसे केवल तुमसे छिपाकर रखा था, क्योंकि बच्चों को विस्मित करना चाहता था।''

अन्ना अपने आपको कठिनाई से आश्वस्त कर पाई कि परिवार के प्रति उदासीन, कुरूप इस गंभीर युवा, जैसा यह उसको प्रतीत होता था, को बच्चों को इस प्रकार विस्मित करने की बात कैसे सूझी।

और वानिया शोर मचाता हुआ बच्चों के कमरे की ओर गया।

''सोनिया, मिटिया, अच्छे प्रभु ने तुम्हारे लिए क्रिसमस ट्री भेजा है, मेरे कमरे में जल्दी से आओ।'' और फिर वह अपनी सौतेली माँ के पास दौड़ा और बहन को कमरे के दरवाजे में खड़े पाया।

इस अवसर के लिए वानिया ने अपना कमरा स्वयं साफ किया था, उसे सँवारा और सजाया था; मेज और कुर्सियाँ दीवार के साथ लगा दी गई थीं और कमरे के मध्य में छोटा, चमकता हुआ, प्यारा क्रिसमस ट्री रखा था।

बच्चों ने उसे प्रसन्नतापूर्वक देखा और तालियाँ बजाकर दोहराया—

''प्यारे प्रभु ने हमारे लिए क्रिसमस ट्री भेजा है! हमारा अच्छा प्रभु!''

मिलोचका, जो अपना व्यक्तिगत दु:ख बिलकुल भूल चुकी थी, हर्षित होकर अपने भाई की तरफ बढ़ी और अचरज भरी आवाज में पूछने लगी—

''वान्युशा, चतुर बुरे लड़के, तुमने चीजें खरीदने और हर चीज को समय पर तैयार करने के लिए प्रबंध कैसे किया?''

''मेरे पास तुम्हारे और माँ के लिए कुछ और भी है, '' वह उत्साहित होकर बोला, ''सोनिया, मेरी बहन यह तुम्हारे लिए है।'' एक बड़ी सुंदर पोशाक और सन की लंबी लटोंवाली गुडिया उसकी छोटी बाँहों में रख दी, जिसने सोनिया को अत्यंत हर्ष प्रदान किया। ''और यह तुम्हारे लिए है।'' मिटिया को पहियोंवाला ऊँचा घोड़ा देते हुए

वानिया ने कहा। मिटिया अपनी बहन की तरफ देखता हुआ तुरंत उसपर एक विजयी सवार की तरह चढ़ गया और घोड़े को चाबुक मारने लगा।

''देखो सोनिया, घोड़े के अधिक पास मत जाओ, नहीं तो यह तुम्हारे ऊपर चढ़ जाएगा!'' दीवार से लगा वानिया चिल्लाया, मानो घोड़े से डर रहा हो।

अन्ना ने अशिष्ट वानिया की ओर मुसकराकर देखा और अनिच्छापूर्वक अपनी गहरी कोमल दृष्टि उसके ऊपर जमा दी। उत्तेजना से लाल वानिया के प्रसन्न चेहरे को उसने देखा, मोटी पलकों के नीचे खुशी से चमकती आँखों को देखा और हैरानी से महसूस किया कि उनमें उसके प्यारे पति की कितनी विचित्र समानता है।

'मैंने पहले इसे महसूस क्यों नहीं किया!' सोचते हुए उसे अपने पर ग्लानि हुई। वह और अधिक दुलार से परिवर्तित हो वानिया के चेहरे को देखने लगी।

तीक्ष्ण, शोकपूर्ण दृष्टि, जो उसके चेहरे पर रहती थी और जिसका वह आदी हो गया था, उसकी अपेक्षा इस समय माँ का प्रसन्नतापूर्वक उसे देखना कितना भिन्न था!

वसंत ऋतु के सूर्य की चमकीली किरण ने बर्फ की ऊपरी कड़ी तह को पिघला दिया था—बर्फ, जिसने कई वर्षों से अन्ना निकोलवीना के दिल को ढक रखा था। उसकी आत्मा में अपने लड़के के लिए मातृत्व की कोमल भावना उत्पन्न हुई, जो अब तक प्यारहीन सौतेला बेटा था।

''माँ, यह है तुम्हारे लिए।'' वानिया ने भीरुता से कहा और एक छोटी मखमल की डिबिया उसको दी।

उसने अपनी बढ़ती हुई विलक्षणता से उसको देखा और फिर खोला। उसका दिल खुशी से उछलने लगा।

डिबिया में गहरे लाल रंग की मखमल के पेंदे पर उत्साह से इच्छित एक लंबा सोने का ब्रोच रखा था, जिसपर उसके पति का सूक्ष्म चित्र सुंदरता से खुदा था।

अन्ना ने अठारह वर्षों में पहली बार वानिया के झुके माथे को प्यार से चूमा।

उसने माँ के हाथ को अपने होंठों से लगाकर इस दुलार का शिष्टता से प्रत्युत्तर दिया। फिर शीघ्रता से मेज की ओर मुड़ा और एक पुलिंदा खोला।

''आह!'' मिलोचका ने चीख मारी और मेज की ओर दौड़ी। वानिया ने उसके सामने लाकर बारीक मलमल का रोल खोला।

मिलोचका अपनी आँखों पर कठिनाई से विश्वास कर सकी। तोहफा वास्तव में अप्रत्याशित था।

''और यह माँ की पोशाक के लिए कुछ सामान है, '' एक दूसरा पुलिंदा खोलते हुए और उसमें से जगमगाती सिल्क निकालते हुए वानिया बोला।

''अब तुम माँ के साथ अपने पहले नाच के लिए नववर्ष की पूर्व संध्या पर जा सकती हो।'' वह मुसकराया—मधुर मुसकान और खुशी से फूले अपनी बहन के चेहरे को देखकर, उसने आगे कहा, ''अब तुम रोओगी नहीं, क्यों?''

''वान्युशा, मेरे प्यारे, '' मिलोचका ने प्रफुल्लित होकर अपनी बाँहें भाई के गले में डालते हुए कहा, ''तुम कितने अच्छे हो और मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ—ढेर सा प्यार!''

कपड़ा भूमि पर गिर गया, परंतु युवा लड़की ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और अपने भाई को अपने बाजुओं से अपने साथ दबाती हुई बोली—

''मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, प्यार करती हूँ, वानिया!''

अन्ना भी वानिया के पास गई।

''परंतु तुम यह मत भूलो कि उसका धन्यवाद करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है, तुम स्वार्थी नन्हे जंतु!'' उसने अपनी बेटी को मजाक में कहा, ''मैं भी वानिया को चूमूँगी और इतना अच्छा क्रिसमस तोहफा प्रदान करने के लिए उसका धन्यवाद करूँगी।''

उसने मिलोचका को एक तरफ ढकेलते हुए युवा लड़के को अपनी ओर खींचा और प्यार से उसकी आँखों में आँखें डालकर धीमी आवाज में कहा, ''वानिया, तुमने हम सबको आज के दिन बड़ी खुशी प्रदान की है। मैं तुम्हें दिल से धन्यवाद दे रही हूँ, मेरे अत्यंत प्यारे बेटे।''

उसने अपने जीवन में पहली बार उसको 'अत्यंत प्यारा' कहा था और अपनी इतनी मीठी आवाज में इससे पहले कभी उसे नहीं बुलाया था। अन्ना की बड़ी-बड़ी काली आँखों में, मातृत्व के दुलार की दृष्टि के नीचे युवा अपने एकांत, प्यारशून्य बचपन को भूल गया—भूल गया कई सालों के अनुचित दुर्व्यवहार की कड़वाहट को। उसके हृदय ने, जो प्यार और सहानुभूति के लिए लालायित था, तुरंत प्रतिवादन किया और सौतेली माँ को क्षमा करते हुए प्रसन्नतापूर्वक विश्वास के साथ उससे आँखें मिलाईं, जो अब अकृत्रिम प्यार और दुलार से चमक रही थीं।

वे एक-दूसरे को देखते हुए काफी देर तक खड़े रहे और ऐसा लगता था कि वह औरत, जिसका जीवन पति की अकाल मृत्यु के कारण टूट चुका था, इस कर्मठ, पुष्ट युवा पुत्र की ओर सहायता के लिए देख रही हो।

मिटिया और सोनिया आनंदपूर्वक क्रिसमस ट्री के इर्दगिर्द नाचने लगे और ढेर सी मिठाइयों को चमकती और आशान्वित नजरों से देखने लगे। मिलोचका कोमल आवाज में गाती हुई अपने तोहफे को मुसकराहट के साथ देख रही थी और बूढ़ी दाया ने दहलीज पर खड़े, अच्छे स्वभाववाली मुसकराहटों को देखते हुए धीमे से कहा, ''परमात्मा को धन्यवाद, सृष्टिकर्ता की जय हो! हमें आनंदमय क्रिसमस मिला, जैसा होना चाहिए था।''

''परंतु मुझे साफ-साफ बताओ, '' अन्ना ने वानिया को अपने पास बैठाते हुए पूछा, ''तुम्हारे दिमाग में बच्चों के लिए क्रिसमस ट्री बनाने का विचार आया कैसे और इसके लिए पैसे कहाँ से जुटाए?''

''ओह, इसका मुझे बहुत दिनों से खयाल था, '' वानिया ने लंबी आह भरकर कहा, ''वास्तव में इसके बारे में मैं पूरे साल सोचता रहा था। यह देखते हुए कि तुम गुजारा कठिनाई से कर रही हो और यह लगातार हर महीने कठिनतर होता जा रहा है, मैंने अपनी पढ़ाई के अतिरिक्त कुछ और करना चाहा। मेरे मित्र के पिता, जो सरकारी शिल्पकार हैं, ने मुझे कुछ नक्शे बनाने के लिए दिए।''

''ये वही नक्शे होंगे जिनको सोनिया चित्र कहती थी?'' अन्ना ने सहजता से पूछा।

''हाँ, वही, '' वानिया ने उत्तर दिया—''मैंने लगभग पिछले तीन महीनों में पूरी रातें इस काम पर लगाई हैं। मैं बच्चों के ट्री के लिए पर्याप्त धन इकट्ठा करना चाहता था, ताकि उनको किसी प्रकार की निराशा न हो। मेरा विचार था कि तुम आज के दिन बच्चों को खुश देखना चाहती थीं। बाद में मैं तुम्हें अपनी सारी अतिरिक्त कमाई दे सकता था, ताकि तुम्हें भी आसानी हो जाती। आज..., '' लड़के ने जल्दी से कहना जारी रखा; मानो डर रहा हो कि सबकुछ कहने के लिए उसको समय न मिले—''आज जब मैंने मिलोचका के आँसू देखे तो मुझसे रहा नहीं गया और शिल्पकार से पोशाकों के लिए कुछ रकम उधार ली, जिसको बाद में अपने काम से मैं उतार दूँगा।'' वानिया ने प्रसन्नता एवं उत्साह से कहा और फिर चुप हो गया।

''परंतु, वानिया, यह काम तुम्हारी शक्ति से बाहर है!'' अन्ना ने सिसकी भरी—''यह तुम्हारे लिए अत्यधिक है। मैं तुम्हें यह काम नहीं करने दूँगी।''

''यह तो कुछ भी नहीं है, माँ!'' उसने जल्दी से टोका—''तुम्हें मेरी चिंता नहीं करनी चाहिए। मैं काफी तगड़ा हूँ और काफी काम कर सकता हूँ। मैं पापा की तरह हूँ। मैं केवल इतना चाहता हूँ कि मेरे स्नातक होने तक तुम किसी

तरह गुजर करो। उसके बाद फिर हम उसी तरह आराम से रहेंगे, जैसे पापा के समय में रहते थे।'' उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा और अपने घने बालों को उछाला। ''क्यों ऐसा नहीं है, मिलोचका?'' उसने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की, वह कुरसी से उछला और सबसे छोटी बहन के पास गया।

एक क्षण के पश्चात् वह वानिया के कंधों पर जा बैठी और वह उसको लेकर ट्री के चारों तरफ भागने लगा, जैसे मिटिया को पकड़ना चाहता हो—मिटिया, जो उसके आगे-आगे घोड़े की तरह हिनहिनाता हुआ भाग रहा था।

'अपने बाप की प्रतिमूर्ति है!' अन्ना निकोलवीना ने सौतेले बेटे के चेहरे को देखकर विचार किया—बेटे का चेहरा अत्यंत प्रसन्नता और आत्मविश्वास से चमक रहा था। मौज-मेले के ऊँचे स्वरों में, जिससे कमरा भरा हुआ था, उसे वानिया की विश्वस्त आवाज सुनाई दी—''मैं अधिक काम कर सकता हूँ, मैं पापा की तरह हूँ।''

एक हर्षित भावना ने उसे जकड़ लिया। जीवन के प्रति उसके पुराने गुस्से और निराशा का एक भी अवशेष बाकी न रहा। उदासी और बच्चों के अनजाने भविष्य का डर इस तरह उड़ गया, जैसे सूर्योदय के समय धुंध उड़ जाती है।

उसने अपने सामने वानिया के शक्तिशाली व्यक्तित्व को देखा, जिसने साहसपूर्वक अपने पिता का अनुसरण किया। उसने अपनी ओर पुष्ट हाथ को फैले हुए देखा और एक बार पुनः शब्दों को सुना—''मैं पुष्ट हूँ, मैं पापा की तरह हूँ।''

❑

मृत्यु से प्रेम शक्तिशाली है

—दमित्री एस. मेरेजकोवस्की

'अलमेरी' के फ्लोरिनटाइन नागरिक अति प्राचीन काल से दो विभिन्न निगमों से संबद्ध थे। उनमें से कुछ कसाइयों के रक्षक सेंट एंटोनी की पूजा करते थे। दूसरों के झंडे पर मेमने का चित्र था और वे ऊन के व्यापार में रत थे। अपने पूर्वजों की भाँति गियोवन्नी और मेटियो अलमेरी इन निगमों से संबद्ध थे। गियोवन्नी 'मर्केटो वेकियो' की पुरानी मंडी में मांस का काम करता था और मेटियो की 'अरनो' में ऊन के कारखाने थे। ग्राहक अपनी इच्छा से गियोवन्नी की मांस की दुकान पर इसलिए नहीं आते थे कि उन्हें हमेशा ताजा मांस, बछड़े का नरम मांस, मोटा कलहंस मिलता था, बल्कि वे दुकानदार को उसके हँसमुख स्वभाव और मीठी बोली के लिए चाहते थे। कसाई अलमेरी के सिवाय कोई नहीं जानता था कि पड़ोसी आने-जानेवाले या ग्राहकों के साथ तीखे मजाक की अदला-बदली इतनी चतुराई से कैसे की जाती थी। सूर्य के तले हर चीज की बाबत कोई भी इतनी आसानी से बात नहीं करता था—फ्लोरिनटाइन प्रजातंत्र की कूटनीति की गहरी भूलों की बाबत, तुर्की के सुलतान के इरादों की बाबत, फ्रांस के राजा के षड्यंत्रों की बाबत...। बहुत कम लोग कसाई के मजाकों का बुरा मनाते थे। जो बुरा मानते थे, वह उनको पुराना मुहावरा सुनाया करता था—'एक अच्छा पड़ोसी मजाक से बदनाम नहीं होता, हँसी-मजाक ही जबान को उस्तरे की तरह तेज करता है।'

ऊन के व्यापारी, उसके भाई मेटियो का चरित्र उससे भिन्न था। वह धूर्त, नीति-चतुर आदमी था और कठोर तथा अल्पभाषी था। वह अपने काम को, लापरवाह और अच्छे स्वभाववाले गियोवन्नी की अपेक्षा श्रेष्ठतर ढंग से करता था और हर वर्ष ऊन से लदे उसके दो जहाज लिवोरनो के बंदरगाह से कुस्तुनतुनिया जाते थे। उसकी आकांक्षाएँ बहुत ऊँची थीं और अपने व्यापार को सरकारी पदवी के लिए माध्यम समझता था। वह हमेशा शिष्ट पुरुषों से मिलता था—मोटे आदमियों से जैसा उनको फ्लोरेंस में कहा जाता था—और वह अलमेरी परिवार को ऊँचा उठाने की आशा को उच्च मानता था, संभवत: यहाँ तक कि अपना नाम अमर कीर्ति के पंखों के ऊपर अंकित देखना चाहता था। मेटियो ने कई बार अपने भाई से मांस का धंधा छोड़ देने की विनती की थी, क्योंकि यह पूरी तरह से शिष्ट नहीं था और अपना धन मेटियो की पूँजी में लगाने को भी कहा था, परंतु गियोवन्नी ने उसकी सलाह नहीं मानी, जबकि वह अपने भाई की योग्यता पर विश्वास करता था। वह गुप्त रूप से उससे डरता था; भले ही वह स्पष्ट रूप से न कहे, परंतु सोचता ऐसा ही था—'मीठी जबान कठोरता का दिल!'

एक दिन गियोवन्नी दुकान से थका हुआ घर आया। उसने आम दिनों की तरह जी भरकर रात को खाना खाया और काफी ठंडी शराब पी। एकाएक उसे मिरगी का दौरा पड़ा। वह तगड़ा और छोटे गलेवाला आदमी था। उसे ईसा मसीह को स्मरण करने या वसीयत करने का समय मिलता, इसके पूर्व वह उसी रात चल बसा। विधवा मोना उर्सूला एक लज्जावान्, दयालु, परंतु सीधी-सादी महिला ने अपने पति के व्यापार संबंधी मामलों को उसके भाई मेटियो को सौंप दिया। मेटियो जानता था कि किस तरह चतुरता और मीठे शब्दों से विधवा को धोखा दिया जा सकता है। उसने सादे स्वभाव की महिला को विश्वास दिला दिया कि उसका मृतक पति अपनी असावधानी के कारण किस प्रकार हिसाब-किताब को अव्यवस्थित रूप में छोड़ गया और वह प्राय: दिवालिया होकर उसी शाम को मर गया था। यदि वह शेष संपत्ति को बचाना चाहती है तो यह जरूरी है कि मर्केटो वेकियो की मंडीवाली दुकान को बंद कर दिया जाए। उस दुष्ट ने उसकी संपूर्ण संपत्ति को अपने व्यवसाय में लगाकर विधवा को निर्दयता से धोखा दिया था। एक बात निश्चित थी कि मेटियो का काम उस समय में अत्यधिक चमक गया और दो जहाजों

की बजाय अब वह उत्तम प्रकार की टसकन ऊन से भरे पाँच या छ: जहाज कुस्तुनतुनिया भेजने लगा। उसे शीघ्र ही ऊन निगम की लाभदायक और सम्मानित पताका लेकर चलनेवाले के पद 'फ्लोरिनटाइन आर्ट डे लाना' दिए जाने का का आश्वासन दिया गया।

मासिक खर्चा, जो वह अपने भाई की विधवा को देता था, इतना कम था कि उसे अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ता था, विशेषकर इसलिए कि वह अकेली नहीं थी। उसकी जिनेवरा नामक एक प्यारी युवा बेटी थी। उन दिनों फ्लोरेंस में दहेजहीन लड़कियों के लिए, आजकल की तरह, विवाह-योग्य लड़कों की कमी थी, परंतु धार्मिक मोना उर्सूला ने साहस नहीं त्यागा। उसने समस्त देवताओं, संतों—विशेषकर लौकिक और अलौकिक दुनिया के थकानरहित और विश्वसनीय संत एंटोनी से उत्सुकतापूर्वक प्रार्थना की; उसने इस आशा को अपनाया कि विधवा और अनाथों के रक्षक परमात्मा उसकी दहेजहीन बेटी के लिए अच्छा और योग्य वर भेजेंगे।

इसके अतिरिक्त ऐसी चीज की आशा करने का उसका एक दूसरा कारण भी था। जिनेवरा अत्यंत सुंदर लड़की थी। यह विश्वास करना कठिन था कि तगड़े, कुरूप, प्रसन्न गियोवन्नी की ऐसी कोमल, अनूठी, मनोहर बेटी हो सकती थी। जिनेवरा हमेशा सादे और गहरे रंग के कपड़े पहनती थी। वह अपने सुंदर, लंबे, दुबले-पतले गले में मोतियों की माला पहनती थी, जिसमें चंद्रकांत रत्न, जिसपर प्राचीन उमड़ी हुई नक्काशी में धनु राशि की प्रतिमा बनी थी, लटक रहा था। मलमल का टुकड़ा उसके सिर का पहनावा था, जो उसके माथे के केंद्र तक आता था। वह इतना बारीक था कि उसमें से उसके हलके सुनहरे बालों के पुंज देखे जा सकते थे। जिनेवरा का कोमल चेहरा मेडोना से मिलता था, जिसको फ्लीपो लिप्पी ने अपने 'इमेक्यूलेट वर्जिन' नाम के चित्र में बनाया था—मेडोना, जो सेंट बरनर्ड को मरुस्थल में मिली थी और अपनी कोमल, लंबी, मोम जैसी अंगुलियों से उसकी पुस्तक के पन्ने पलटे थे। बच्चे के समान उसके होंठों पर वही अनंत भोलेपन की झलक थी; भले ही उसमें मठ में उगी कुमुदिनी की-सी ताजगी थी। वह दुर्बल और थोड़े समय तक रहनेवाली दिखाई देती थी; जैसे उसे इस जीवन के लिए बनाया ही न गया हो। जब कसाई की बेटी लज्जावान्, शांत, नीची नजर किए, हाथ में प्रार्थना पुस्तक थामे फ्लोरेंस की गलियों से होती हुई गिरजा जाती तो विशिष्ट भोज पर जाते या शिकार पर जाते हुए प्रसन्नचित्त युवक अपने घोड़ों को रोक लेते। उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगतीं। उनकी दिल्लगी एवं हँसी रुक जाती और देर तक उनकी आँखें सुंदर जिनेवरा का पीछा करती रहतीं।

चाचा मेटियो ने अपनी भतीजी की अच्छाइयों के बारे में सुनकर फ्लोरिनटाइन प्रजातंत्र के एक सचिव फ्रांसिस्को डेल एगोलंटी से उसका विवाह करने की बात सोची। वह बड़ी आयु का था, परंतु हर कोई उसका मान करता था और जिसके उस समय के नगर शासकों के साथ घनिष्ठ संबंध थे। फ्रांसिस्को लातीनी भाषा का विद्वान् था। वह अपनी रिपोर्ट और लेख लिवी और सेलस्ट की शैली में बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग करके लिखा करता था। स्वभाव से कुछ कठोर और लोकशत्रु था। वह प्राचीन रोमनों की तरह निर्विवाद रूप से ईमानदार था। कुछ उसका चेहरा भी प्रजातंत्र के दिनों के सांसदों से मिलता-जुलता था और वह जानता था कि फ्लोरिनटाइन अधिकारियों की तरह असली रोमन चोगे जैसा लंबा और गहरे लाल रंग का लबादा कैसे पहना जाता था। वह प्राचीन भाषाओं को इस उत्कंठा से प्यार करता था कि जब टसकेनी में यूनानी भाषा प्रचलित थी तो कुस्तुनतुनिया से बाईजनटाइन के विद्वान् एमेनुअल क्रीजोलोरस ने यूनानी व्याकरण पर स्टूडियो में भाषण देने शुरू कर दिए—स्टूडियो उस समय का विश्वविद्यालय होता था। एगोलंटी ने, इस बात का ध्यान न करते हुए कि वह मध्य आयु का पुरुष था और फ्लोरिनटाइन प्रजातंत्र में सचिव था, स्कूल में छोटे बच्चों के साथ बेंच पर बैठने में शर्म महसूस नहीं की। उसने शीघ्र ही यूनानी भाषा में निपुणता प्राप्त कर ली। अत: अरस्तु की मौलिक ओरगेनोन और प्लेटो के संवाद पढ़ लिये।

एक शब्द में, ऊन का व्यापारी अपने चतुर और लालसा भरे इरादों से इससे अच्छा संबंध नहीं सोच सका। मेटियो ने अपनी भतीजी के साथ अच्छा दहेज देने का वचन इस शर्त पर दिया कि एगोलंटी अपना नाम और परिवार चिह्न को अलमेरी के नाम और परिवार के चिह्न से जोड़ देगा।

अपने होने वाले पति की इन अच्छाइयों पर ध्यान न देते हुए जिनेवरा ने चाचा के इरादों का देर तक विरोध किया और विवाह को प्रतिवर्ष टालती रही। अंत में जब मेटियो ने तुरंत और निश्चित उत्तर की माँग की तो उसने बताया कि उसे दूसरा लड़का पसंद है, जिसको वह एगोलंटी से अधिक प्यार करती है। धार्मिक मोना उर्सूला की हैरानी और भय को दूर करने के लिए उसने उसका नाम तक बता दिया—एनटोनियो डे रोनडीनेली—एक युवा संगतराश, जिसका कारखाना पोटे वक्यिहो के पास एक तरफ तंग गली में था। एनटोनियो से जिनेवरा की जान-पहचान कुछ महीने पहले उसकी माँ के मकान पर हुई थी। उसने जिनेवरा के सिर का बुत मोम से बनाने के लिए प्रार्थना की थी। उसका विचार था कि वह जिनेवरा की सुंदरता को पवित्र हुतात्मा बारबारा की प्रतिमा की नक्काशी में प्रयोग करेगा। बुत का ऑर्डर नगर के बाहर स्थित एक अमीर धार्मिक संस्था ने दिया था। मोना उर्सूला संगतराश को ऐसे धार्मिक मामले में इनकार न कर सकी थी और जबकि काम चल रहा था, कलाकार अपने मॉडल के प्रेम में डूब गया था। फिर वे त्योहारों और सर्दियों की सभाओं में जाने लगे, जहाँ जिनेवरा को बड़े चाव से आमंत्रित किया जाता था, क्योंकि उसकी सुंदरता प्रत्येक त्योहार को सुंदर बना देती थी।

जब मोना उर्सूला ने नरमी से क्षमा माँगते हुए मेटियो को बताया कि जिनेवरा एक दूसरे लड़के को प्यार करती है और जब एनटोनियो डे रोनडीनेला का नाम लिया तो ऊन का व्यापारी भले ही बुरी तरह से क्रुद्ध हुआ, पर अपने आपको शांत और हितैषी दिखाते हुए मोना उर्सूला से प्रेमपूर्वक कहा—

''मेडोना, जो कुछ तुमने इस समय बताया है, उसको यदि मैंने अपने कानों से न सुना होता तो मैं कभी विश्वास न करता कि तुम्हारे जैसी सदाचारी और बुद्धिमान महिला एक अनुभवहीन लड़की की क्षणिक चपलता पर इतना ध्यान देगी। मैं नहीं जानता कि आजकल क्या होता है, परंतु मेरे समय में एक युवा लड़की को अपने भावी पति के चयन के बारे में एक भी शब्द कहने का साहस नहीं होता था। हर बात में वह अपने पिता या संरक्षक का कहना मानती थी। इस मामले पर जरा ध्यान दो। कौन है यह एनटोनियो, जिसको मेरी भतीजी ने चुनकर सम्मानित किया है? क्या यह संभव है कि तुम न जानती हो कि संगतराश, कवि, अभिनेता और गलियों में गानेवाले ऐसे लोग होते हैं जिनके पास करने के लिए कुछ और नहीं होता तथा जो अधिक सम्मानजनक एवं लाभकारी काम करने में असमर्थ होते हैं? वे अस्थिर और अविश्वसनीय प्रकार के लोग होते हैं, जो तमाम संसार में पाए जाते हैं। वे शराबी, कामुक, आलसी, नास्तिक और अपना तथा दूसरों का धन लुटानेवाले होते हैं। जहाँ तक एनटोनियो का प्रश्न है, तुमने अवश्य सुन लिया होगा कि सारा फ्लोरेंस उसके बारे में क्या नहीं जानता है! मैं तुम्हें उसकी विलक्षणताओं में से केवल एक बताऊँगा—एक गोल टोकरी, जो रस्सी के साथ उसके कारखाने की कड़ी के आर-पार इस तरह लटक रही है कि एक सिरा तो टोकरी के साथ और दूसरा दीवार में लगी कील के साथ बँधा है। एनटोनियो जो कुछ कमाता है, उसको बिना गिने इस टोकरी में डाल देता है। और कोई भी—शिष्य या जान-पहचानवाला—जो चाहता है, टोकरी को नीचे खींचकर मालिक की आज्ञा बिना जितना जी चाहे निकाल लेता है—ताँबा, चाँदी अथवा सोना। मेडोनो, क्या तुम समझती हो कि मैं अपना धन, जिसको तुम्हारी बेटी के दहेज के रूप में देने का मैंने वचन दिया है, ऐसे पागल को दूँगा?

''परंतु यही सबकुछ नहीं है। क्या तुम जानती हो कि एनटोनियो विषयासक्त दर्शन की भयानक नास्तिकता को प्यार करता है...नास्तिकता, जो शैतान ने बनाई है। वह गिरजा नहीं जाता और पवित्र, धार्मिक विधि का तिरस्कार

करता है और परमात्मा में विश्वास नहीं रखता। सज्जनों ने मुझे बताया है कि वह घृणित मूर्ति-पूजकों की आराध्य वस्तुओं के संगमरमर के टुकड़ों की पूजा करता है—उन देवी-देवताओं की जो अभी-अभी भूमि खोदकर निकाले गए हैं। वह आश्चर्य में डालनेवाले संतों के पवित्र स्मारक-चिह्नों की अपेक्षा इनकी आराधना करता है। मुझे दूसरे लोगों ने भी बताया है कि अस्पताल के चौकीदार को अधिक कीमत देकर मुर्दा शरीर खरीदता है; रात को वह और उसके शिष्य उसकी चीर-फाड़ करते हैं। इसलिए, जैसाकि उसका मानना है, वह मानव शरीर की शल्य-क्रिया और संरचना से अवगत होना चाहता है; नाड़ियाँ, मांसपेशियाँ इत्यादि और इस प्रकार की कला में अपने आपको निपुण बनाना चाहता है, परंतु मैं सोचता हूँ कि वह वस्तुत: इसलिए करता है कि वह अपने सहायक और परामर्शदाता तथा हमारी मुक्ति के अति प्राचीन शत्रु शैतान को प्रसन्न करना चाहता है। शैतान उसे काले जादू की शिक्षा देता है। इन्हीं तंत्र-मंत्र, जादू-टोने और पैशाची संकेतों के द्वारा उसने तुम्हारी भोली-भाली बेटी का दिल जीत लिया है।''

ऐसे शब्दों के साथ चाचा मेटियो ने मोना उर्सूला को डराने और यह विश्वास दिलाने का प्रबंध किया कि वह ठीक कह रहा है। जब उसने अपनी बेटी को बताया कि यदि वस्तुत: फ्रांसिस्को डेल एगोलंटी से विवाह नहीं करेगी तो चाचा मेटियो उनका मासिक खर्चा बंद कर देगा। तब जिनेवरा अकथनीय शोक से अपने आपको भाग्य पर छोड़कर चाचा की इच्छा पालन करने के लिए बाध्य हो गई।

उस वर्ष फ्लोरेंस पर एक महान् संकट आया। उसके बारे में कई ज्योतिषी पहले ही बता चुके थे, क्योंकि वृश्चिक राशि में मंगल और शनि ग्रह बहुत निकट आ गए थे। कई व्यापारी, जो पूरब से आए थे, अपने भारतीय कीमती कंबलों के गट्ठरों में प्लेग के कीटाणु लाए थे। शोकाकुल माइजरेरे गाती हुई और संतों के चित्र लिये बाजारों से होती हुई एक शोभायात्रा निकली। नगर की सीमा के अंदर गंदगी डालने, चमड़ा रंगनेवालों, बूचड़खानों को अपनी गंदगी ओर्नो नदी में फेंकने से बंद करने के लिए कानून बनाए गए और रोगियों को लोकसमाज से दूर रखने के तरीके अपनाए गए। जुर्माने और कैद तथा विशेष मामलों में मृत्यु के दंड से लोगों को मना किया गया कि दिन में मरे लोगों के शव सूर्यास्त और रात को मरे लोगों के शव सूर्योदय के बाद घर में न रखें, भले ही मृत्यु किसी दूसरे रोग के कारण हुई हो। विशेष निरीक्षक नगर में दिन-रात हर समय घूमते थे और यह पता करने के लिए कि घर में कोई रोगी तो नहीं, दरवाजों को खटखटाते थे; यहाँ तक कि यदि वे चाहते तो घर की तलाशी भी ले सकते थे। यहाँ-वहाँ तारकोल से पुती गाड़ियाँ, मशालों के धुएँ और काले कपड़े पहने तथा घूँघट निकाले लोगों के साथ देवी देखी जा सकती थीं। लोगों ने हाथों में लंबे काँटे पकड़े हुए थे जिनसे प्लेगग्रस्त शवों को दूर से गाड़ी में फेंकते थे, ताकि वे शव के निकट न जा सकें। अफवाह थी कि ये लोग, जिनको 'काले शैतान' कहा जाता था—ऐसे लोगों के शरीर भी उठा रहे थे जो अभी मरे नहीं थे, ताकि वे फिर उसी जगह पर लौट न आएँ।

प्लेग, जिसने गरमियों के अंत में उत्पात शुरू किया था, शरद् ऋतु तक जारी रहा। यहाँ तक कि सर्दियों की ठंडक, जो उस वर्ष जल्दी आ गई थी, भी उसे रोक नहीं पाई। अत: फ्लोरेंस के खाते-पीते लोग, जो किसी विशेष काम से नहीं बँधे थे, बाहर अपने मकानों में चले गए, जहाँ हवा प्लेग के कीटाणुओं से मुक्त थी।

चाचा मेटियो ने डरते हुए कि कहीं उसकी भतीजी अपना इरादा न बदल ले, यह बहाना बनाते हुए शादी की जल्दी की कि मोना उर्सूला और उसकी बेटी को जितनी जल्दी हो सके नगर छोड़ देना चाहिए। फ्रांसिस्को डेल एगोलंटी ने प्रस्ताव रखा कि वह जिनेवरा और उसकी माँ को मोंटे अलबानो की ढलान पर बने अपने सुंदर मकान में ले जाएगा।

मेटियो यही चाहता था और यही निर्णय लिया गया। विवाह कुछ ही दिनों में संपन्न होना था। फिर रस्म को बिना दिखावे के पूरा किया गया, क्योंकि उन दिनों चारों ओर शोक का माहौल था। विवाह के समय जिनेवरा पीली पड़

गई थी और उसका चेहरा पूर्णतया शांत था, परंतु उसके चाचा की धारणा थी इस लड़की की चपलता विवाह के शीघ्र बाद समाप्त हो जाएगी और फ्रांसिस्को जान जाएगा कि प्यार के साथ युवा दुलहन का दिल कैसे जीता जाता है!

परंतु उसकी धारणा को सफलीभूत नहीं होना था। जब युवा दुलहन ने गिरजा को छोड़कर अपने पति के घर में प्रवेश किया तो उसे चक्कर आ गया। शीघ्र ही वह भूमि पर गिर पड़ी, जैसे मर गई हो। पहले तो सभी ने यही सोचा कि वह अचेत हो गई है। उन्होंने उसे होश में लाने का प्रयास किया, परंतु उसकी आँखें बंद हो गईं। उसे साँस लेना कठिन हो गया और उसका चेहरा तथा शरीर मृत्यु की तरह पीले पड़ गए और हाथ-पाँव ठंडे हो गए। कुछ घंटों के बाद डॉक्टर को बुलाया गया। उन दिनों डॉक्टरों को स्वयं नहीं बुलाया जाता था, ताकि यह अफवाह न फैल जाए कि इस घर में कोई प्लेगग्रस्त रोगी है, परंतु जब उसने जिनेवरा के जीवनरहित होंठों के पास शीशा रखा तो उसके ऊपर साँस का जरा भी चिह्न नहीं था।

फिर सब अकथनीय शोक और चिंता में डूब गए। उन्होंने महसूस किया कि जिनेवरा वस्तुतः मर चुकी है। पड़ोसियों ने कहा कि परमात्मा ने अलमेरी को ऐसे समय में विवाह रचाने के लिए दंड दिया है और फ्रांसिस्को की युवा दुल्हन गिरजा से लौटते ही तुरंत प्लेगग्रस्त हो गई और मर गई। यह अफवाह शीघ्र ही फैल गई, क्योंकि लड़की के संबंधियों ने इस डर से कि 'काले शैतान' आ जाएँगे, उसकी मूर्च्छा से लेकर मृत्यु तक के रहस्य को गुप्त रखा था, परंतु सायंकाल के समय निरीक्षक आ गए। उनको पड़ोसियों ने वह सारी घटना बता दी थी, जो एगोलंटी के घर में हुई थी। उन्होंने संबंधियों से माँग की कि जिनेवरा का शव उन्हें तुरंत दे दिया जाए अथवा उसी समय दफना दिया जाए। जब उन्हें अच्छी-खासी रिश्वत दी गई तो वे शव को अगले दिन सायंकाल तक फ्रांसिस्को के घर में छोड़ने के लिए राजी होकर चले गए।

किसी भी संबंधी ने शंका नहीं की कि जिनेवरा मर गई थी, सिवाय उसकी पुरानी नर्स के, जिसको हर कोई समझदार समझता था। दु:खी, विलाप करती उस बुढिया ने प्रार्थना की कि जिनेवरा को दफनाया न जाए। उसने इस बात पर जोर दिया कि डॉक्टर से गलती हो गई है और जिनेवरा मरी नहीं है, केवल सो रही है। उसने शपथ ली कि जब उसने अपना हाथ अपनी प्यारी बेटी के दिल पर रखा तो महसूस किया कि उसका दिल दुर्बलता से धड़क रहा था—हाँ, दुर्बलता से, तितली के परों से भी अधिक दुर्बलता से!

दिन व्यतीत हो गया। जिनेवरा में जीवन का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया तो कपड़े में लपेटकर और कफन में डालकर उसे गिरजा ले जाया गया। शुष्क और विशाल शवस्थल, जिसका फर्श साफ टसकन ईंटों का बना था, गिरजा के दो दरवाजों के बीच स्थित था। कब्रिस्तान के मैदान में, सरो के वृक्षों की छाँव तले, फ्लोरेंस के श्रेष्ठ परिवारों की कब्रों के मध्य में गिरजा बना हुआ था। मेटियो ने कब्र के स्थान के लिए बड़ी रकम दी, परंतु यह रकम दहेज की राशि से निकाली गई। दफनाने की रीति बड़े धार्मिक ढंग से की गई। वहाँ बहुत सी मोमबत्तियाँ थीं और जिनेवरा की याद में प्रत्येक गरीब आदमी को जौ और जैतून का तेल आधे सोलडो में दिया गया। सर्दी के मौसम और प्लेग के भय पर ध्यान न देते हुए अंत्येष्टि क्रिया पर लोगों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। कुछ अनजाने लोग भी युवा दुल्हन की कहानी सुनकर आँसू बहाने से अपने आपको रोक नहीं पाए और पैटरार्क की मधुर लाइनों को दोहराने लगे—

मृत्यु प्रतीत होती है सुंदर, उसके सुंदर चेहरे पर फ्रांसिस्को ने उसकी कब्र पर न केवल लातीनी उद्धरणों का प्रयोग किया बल्कि प्लूटो और होमर की यूनानी भाषा में भी प्रवचन किया, जो उन दिनों कुछ नई चीज थी। कई सुननेवाले प्रसन्न हुए, भले ही वे यूनानी भाषा नहीं समझते थे।

जब कफन को गिरजा से लाकर शवस्थल पर रखा गया था तो अंत्येष्टि क्रिया में कुछ गड़बड़ हो गई। सिल्क का मातमी लबादा पहने एक पीला आदमी मृत लड़की के पास गया और उसके चेहरे पर पड़े कपड़े को हटाकर उसको अचल दृष्टि से देखने लगा। उसको चले जाने के लिए कहा गया और बताया गया कि एक अजनबी के लिए उचित नहीं है कि संबंधियों के अलविदा कहने से पहले वह जिनेवरा के पास जाए। जब पीले आदमी ने यह सुना कि उसे 'अजनबी' कहा गया है और मेटियो तथा फ्रांसिस्को को संबंधी बताया गया तो वह मुसकराया, मृत लड़की के होंठों को चूमा, चेहरे पर कपड़ा डाला और बिना एक शब्द कहे वहाँ से चला गया। भीड़ में उसकी ओर संकेत करके कानाफूसी होने लगी। एनटोनियो डे रोनडीनेला का नाम लिया गया, जो जिनेवरा को प्यार करता था और जिसके लिए उसने अपनी जान दे दी थी।

गोधूलि का समय हो रहा था। ज्यों ही अंत्येष्टि की रस्म समाप्त हुई, भीड़ लुप्त हो गई। मोना उर्सूला चाहती थी कि रात भर कफन के पास रहे, परंतु मेटियो ने इसका विरोध किया, क्योंकि शोक ने उसको इतना दबोच लिया था कि हर कोई उसके जीवन के लिए भयभीत था। केवल फ्रा मेरियानो, परमात्मा का एक प्यारा, शवस्थल पर रहा, जहाँ उसने मृतक के लिए प्रार्थना की थी।

कुछ घंटे बीत गए। संन्यासी की नपी-तुली आवाज और कभी-कभी ग्योटो के घंटाघर की घड़ी का धीमे-धीमे बजना ही रात के मौन में प्रतिध्वनित होते थे। आधी रात के बाद फ्रा मेरियानो को प्यास महसूस हुई। उसने अपनी शराब की कुप्पी निकाली, सिर पीछे की ओर किया और प्रसन्नतापूर्वक कुछ घूँट पिए। एकाएक उसे एक सिसकी सुनाई दी। उसने ध्यान से सुना; सिसकी एक बार पुनः सुनाई दी। इस बार उसे लगा कि मृतक लड़की के चेहरे पर पड़ा हलका कपड़ा हिला। भय की ठंडी लहर-सी उसके सारे शरीर में फैल गई। वह ऐसे मामलों में अनुभवहीन था और अच्छी तरह जानता था कि अनुभवी लोग भी रात को अकेले मृतकों के साथ कई प्रकार की बातें सोचते हैं। उसने निश्चय किया कि वह इस ओर ध्यान नहीं देगा। उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और ऊँची आवाज में प्रार्थनाएँ पढ़नी शुरू कर दीं।

एकाएक संन्यासी की आवाज टूट गई। वह पत्थर का बुत बना रहा। उसकी आँखें मृतक लड़की के चेहरे पर गड़ी थीं। अब वह सिसकी नहीं थी, परंतु कराहट थी, जो उसके होंठों से आ रही थी। फ्रा मेरियानो ने अधिक देर तक शंका नहीं की, क्योंकि उसने देखा कि मृतक लड़की की छाती धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हो रही थी और मुँह पर पड़े कपड़े को हिला रही थी। वह साँस ले रही थी। क्रॉस बनाता और काँपता हुआ वह दरवाजे की ओर भागा और शवस्थल से कूद गया। बाहर ताजा हवा में उसने अपने आपको संभाला और एक बार फिर सोचते हुए कि यह उसकी केवल कल्पना थी, उसने आवे मारिया को याद किया और दरवाजे पर जाकर शवस्थल को देखा। भय की चीख उसके मुँह से निकली। मृतक लड़की आँखें खोले कफन में बैठी थी। फ्रा मेरियानो बिना पीछे देखे कब्रिस्तान से बाहर बपटिसरिया सान ग्योन्नी के स्कवेयर से वाया रिकासोली की ओर भाग गया। केवल उसकी लकड़ी की खड़ाऊँ बर्फ से ढकी ईंटों के पैदल रास्ते पर टकराकर रात की शांति भंग कर रही थीं।

जिनेवरा अलमेरी ने नींद से जागकर या मौत जैसी मूर्च्छा से सचेत होकर व्याकुलता से कफन का परीक्षण किया। इस विचार से कि वह जीवित दफना दी गई थी, वह भयभीत हो गई। निराशाजनक प्रयत्न के साथ वह कफन से बाहर कूदी और कपड़े से अपने आपको ढककर दरवाजे से बाहर निकल आई। दरवाजा पहले ही संन्यासी ने खुला छोड़ा था।

वह कब्रिस्तान में गई और गिरजा के सामने स्क्वेयर पर पहुँची। शीघ्रता से चल रहे बादलों में से चाँद की रोशनी पड़ रही थी। हवा ने बादलों को दूर-दूर कर दिया था और चाँदनी में ग्योटो की संगमरमर की मीनार साफ तौर पर

खड़ी नजर आ रही थी। जिनेवरा के विचार गड़बड़ा गए थे; उसका सिर चकरा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह और मीनार—दोनों चाँदनी से चमकते बादलों में ले जाए जाएँगे। वह समझ नहीं पाई कि वह जीवित है या मृतक, यह सपना है या वास्तविकता!

यह आभास न करते हुए कि वह किधर जा रही थी, वह कई उजाड़ गलियों में से गुजरी। उसे एक जाना-पहचाना घर नजर आया। यह उसके चाचा मेटियो का घर था। वह रुकी, दरवाजे तक गई और उसे खटखटाया।

ऊन का व्यापारी इतनी रात होने पर भी अभी तक सोया नहीं था। वह अपने दो जहाजों के बारे में सूचना की प्रतीक्षा कर रहा था—जहाज कुस्तुनतुनिया से लौट रहे थे। अफवाहें फैली हुई थीं कि लिवोरनो के तट से बहुत दूर कहीं, तूफान से कई जहाज क्षतिग्रस्त हो गए थे। चाचा मेटियो को डर था कि उसके जहाज भी उनमें थे। संदेशवाहक की प्रतीक्षा करते-करते उसे भूख लग आई और अपनी नौकरानी नैनशिया को मुर्गा भूनकर लाने के लिए कहा। नैनशिया सुंदर, लाल, लंबे बालोंवाली, बिना धब्बे के दूधिया सफेद दाँतोंवाली लड़की थी। चाचा मेटियो प्रौढ़ कुँवारा था। इस रात वह रसोईघर में अँगीठी के पास बैठा था, जैसे अन्य कमरों में सर्दी अधिक हो। नैनशिया लाल चेहरे के साथ, कमीज के बाजू चढ़ाए मुर्गा भून रही थी और आनंद से झूमती उसकी आँखें आग की लपटें डाट पर रखे, सफाई से धुले बरतनों और रकाबियों की चमकीली मिट्टी पर रही थीं।

''नैनशिया, तुम कुछ सुन रही हो क्या?'' मेटियो ने ध्यान से सुनकर पूछा।

''यह हवा है, मैं नहीं जाऊँगी। तुम पहले ही मुझे तीन बार वहाँ भेज चुके हो। नहीं?''

''यह हवा नहीं, कोई खटखटा रहा है। वह हरकारा है, जाओ और तुरंत दरवाजा खोलो।''

पुष्ट नैनशिया ने लकड़ी की गहरी सीढ़ियों पर सुस्ती से चलना शुरू कर दिया और मेटियो ने सीढ़ियों के सिरे पर खड़े होकर उसे रास्ता दिखाने के लिए लालटेन को अपने सिर सेऊपर कर लिया।

''कौन है?'' नौकरानी ने पूछा।

''मैं हूँ, जिनेवरा अलमेरी!'' दरवाजे के पीछे से धीमी आवाज ने उत्तर दिया।

''जेसू! जेसू! हमारे यहाँ दुष्ट आत्मा आई है!'' नैनशिया बड़बड़ाई। उसके पैर काँपने लगे और अपने आपको गिरने से बचाने के लिए उसने कटघरे को पकड़ा। मेटियो पीला पड़ गया और उसके हाथों से लालटेन गिर गई।

''नैनशिया! नैनशिया! जल्दी दरवाजा खोलो!'' जिनेवरा ने प्रार्थना की—''मुझे अपने आपको गरम करने दो। मैं ठंडी हो रही हूँ, चाचा को बताओ कि यहाँ मैं हूँ।''

नौकरानी लड़की अपनी दृढ़ता का ध्यान न रखते हुए इतने जोर से सीढ़ियों पर चढ़ी कि वे उसके पाँव के नीचे चरमरा गईं।

''वहाँ तुम्हारा हरकारा है! मैंने तुम्हें कहा है कि अच्छा रहेगा कि तुम एक सच्चे ईसाई की तरह जाकर सो जाओ। ओह! ओह! दरवाजे पर खटखट, क्या तुम सुनते हो? विनीत आत्मा कराह रही है—वह किस कष्ट से कराह रही है? हे ईश्वर, हमें इससे मुक्त करो, हम पापियों पर दया करो।''

''सुनो, नैनशिया!'' मेटियो ने अधीरता से कहा, ''मैं नीचे जाऊँगा और देखूँगा कि वहाँ क्या है? कौन जानता है कि संभवत:...''

''तुम और करोगे भी क्या?'' अपने हाथों को पकड़कर नैनशिया चिल्लाई—''जरा देखो तो, कितने बहादुर हो! क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें जाने दूँगी? तुम दूसरी दुनिया में जाना चाहते हो, नहीं? तुम्हें कहीं भी जाने की जरूरत नहीं; यहीं ठहरो और धन्यवाद दो कि हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं हुआ।''

अलमारी से पवित्र पानी की कुप्पी लेकर नैनशिया ने घर के दरवाजे पर, रसोई में और मेटियो के ऊपर पानी के

छींटे लगाए। उसने बुद्धिमान नौकरानी से वाद-विवाद नहीं किया और उसके कहने को माना, क्योंकि वह भूतों से निपटना अच्छी तरह जानती थी। नैनशिया ने ऊँची आवाज में शपथ ली—

''पुण्य आत्मा, परमात्मा के पास जाओ—मृतक, मृतक के पास। परमात्मा तुम्हें धर्मपरायण संसार में शांति दे।''

जब जिनेवरा ने यह सुना कि वह मरी हुई मान ली गई है तो उसने जान लिया कि अब यहाँ कोई आशा नहीं है। वह दहलीज से उठी और आश्रय स्थान की खोज में लड़खड़ाकर चली गई।

अपने जमे हुए पाँव को कठिनाई से बढ़ाते हुए वह पासवाली गली में गई, जहाँ उसका पति फ्रांसिस्को डेल एगोलंटी रहता था।

फ्लोरिनटाइन प्रजातंत्र का सचिव उस समय मिलान में अपने मित्र को लातीनी भाषा में एक लंबा दार्शनिक संदेश लिख रहा था—उसका मित्र, मूसियो डेल उबर्टी प्राचीन कलाओं की देवी का प्रशंसक था। वह धार्मिक लेख था, जिसका शीर्षक था—'मेरी प्यारी पत्नी जिनेवरा अलमेरी के संबंध में आत्मा की अमरता पर वार्त्तालाप।' फ्रांसिस्को ने थॉमस एक्वीनस की राय का खंडन करके अरस्तु और प्लूटो के सिद्धांतों की परस्पर तुलना की। थॉमस एक्वीनस ने इस बात की पुष्टि की कि अरस्तु के दर्शन से कैथोलिक चर्च की स्वर्ग, नरक और पाप-शोधन के बारे में धार्मिक नीति मेल खाती है, जबकि फ्रांसिस्को ने कई बार प्रखर और तथ्यपूर्ण तर्कों से यह साबित कर दिया कि यह कभी भी अरस्तु का दर्शन नहीं था। अरस्तु गुप्त रूप से धार्मिक सिद्धांतों में विश्वास नहीं करता था और नास्तिक था, परंतु परमात्मा के महान् प्रशंसक प्लूटो का सिद्धांत ही ईसाई मत से मेल खाता है।

तांबे का लैंप उसकी कई दराजोंवाली, नक्काशी की हुई लकड़ी से बनी लिखनेवाली मेज के चिकने तख्ते से बँधा था और बत्तियाँ एक समान शोले के साथ जल रही थीं। लैंप का आकार टरीटोन और ओशनिडेस के आलिंगन को दर्शाता था, क्योंकि वह जीवन के तमाम मामलों में प्राचीन मॉडलों की नकल करने का प्रेमी था। कामदेव या स्वर्ग के पुष्पहारों के साथ देवदूतों के नाच को दर्शाती सुनहरी आकृतियाँ, सिल्क की तरह चिकने और हाथी-दाँत की तरह कठोर, कीमती चमड़े के कागज पर चमक रही थीं।

फ्रांसिस्को पुनर्जन्म के सिद्धांत का धार्मिक दृष्टि से विश्लेषण आरंभ करने जा रहा था। उसने पाइथागोरस के अनुयायी की ओर संकेत किया, फलियाँ खाने से इसलिए इनकार करता था कि उनमें उसके पूर्वजों की आत्माएँ थीं। एकाएक उसने दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज सुनी। उसने अपनी भौंहें सिकोड़ीं, क्योंकि काम करते समय वह शोर सहन नहीं कर सकता था। फिर भी वह अटारी की खिड़की पर गया, उसे खोला, चाँद की पीली रोशनी में नीचे देखा कि जिनेवरा—मृतक जिनेवरा अपने इर्दगिर्द कपड़ा लपेटे खड़ी थी।

फ्रांसिस्को प्लूटो और अरस्तु को भूल गया और खिड़की इतनी जल्दी बंद कर दी कि जिनेवरा को एक शब्द भी बोलने का समय नहीं मिला। तब वह आवा मारिया पढ़ने लगा और भावी भय से नैनशिया की तरह क्रास बनाने लगा।

परंतु उसने शीघ्र ही अपने आपको संभाल लिया; जो कुछ सिकंदरिया के प्लूटोवलंबी प्रॉकलस और प्रॉकरी ने मृतक के प्रकट होने के बारे में कहा था, उसे याद करके, उसे अपनी शिथिल साहसहीनता पर बड़ी शर्म आई। फ्रांसिस्को ने शीघ्र ही अपने आपको नियंत्रित कर लिया और खिड़की को पुन: खोलते हुए ठोस आवाज में बोला, ''जो कोई भी तुम हो, स्वर्ग या पृथ्वी की आत्मा हो, चली जाओ! जहाँ से आई हो, वहीं लौट जाओ, क्योंकि जिसका मन सच्चे दर्शन की ज्योति से प्रकाशित हो चुका है उसे डराना व्यर्थ है। तुम मेरी भौतिक आँखों को धोखा दे सकती हो, परंतु मेरी आध्यात्मिक आँखों को धोखा नहीं दे सकतीं। शांति से चली जाओ—मृतक मृतकों में।''

और उसने खिड़की बंद कर ली। अब वह पुन: खिड़की नहीं खोलेगा, भले ही तमाम दयापूर्ण कल्पनाओं का

दल आकर खटखटाए।

जिनेवरा वहाँ से चल दी। अभी वह पुरानी मंडी से दूर नहीं गई थी, तभी उसने अपनी माँ के घर को ढूँढ़ लिया।

मोना उर्सूला क्रॉस के सामने झुकी हुई थी और कठोर संन्यासी फ्रा ग्योकोमो, जो व्रत रखकर दुर्बल और पीला पड़ गया था, उसके पास खड़ा था। उसने अपनी भयग्रस्त आँखें उसकी ओर ऊपर उठाईं।

''मुझे क्या करना चाहिए, पिता? मेरी सहायता करो। मुझमें नम्रता नहीं है, मेरी आत्मा में प्रार्थना नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा ने मुझे त्याग दिया है और मेरी आत्मा अनंत मृत्यु को पहुँच चुकी है।''

''अंत तक हर चीज में परमात्मा की आज्ञा का पालन करो।'' संन्यासी ने उसे परामर्श दिया—''असंतोष से मत गुर्राओ, विद्रोही शरीर को शांत करो, क्योंकि लड़की के प्रति तुम्हारा प्यार शारीरिक था, आत्मिक नहीं। शोक मत करो, क्योंकि उसका शरीर मरा है, परंतु इसलिए कि वह पश्चात्ताप के लिए उच्चतम न्यायाधीश के सामने खड़ी है—एक महान् पापी!''

उसी समय दरवाजे पर खटखट हुई। ''माँ, माँ, मैं यहाँ हूँ—मुझे जल्दी अंदर आने दो।''

''जिनेवरा!'' मोना उर्सूला ने पुकारा और अपनी लड़की से दौड़कर मिलना चाहती थी कि संन्यासी ने उसे रोक दिया।

''तुम कहाँ जा रही हो?'' तुम्हारी लड़की कब्र में पड़ी है—मृतक। वह प्रलय तक भी नहीं उठेगी। यह शैतानी आत्मा है, जो तुम्हारी बेटी की आवाज में तुम्हें द्रवित कर रही है—तुम्हारे जैसे शरीर और आवाज में। पश्चात्ताप करो, प्रार्थना करो—पूर्व इसके कि देर हो जाए; अपने लिए प्रार्थना करो और जिनेवरा की पापी आत्मा के लिए, ताकि तुम दोनों नरक में न जाओ।''

''माँ, क्या तुम मेरी पुकार नहीं सुन रही हो? क्या तुमने मेरी आवाज नहीं पहचानी? यहाँ मैं हूँ। मैं मरी नहीं, जीवित हूँ।''

''मुझे उसके पास जाने दो, पिता—जाने दो मुझे...।''

फिर संन्यासी फ्रा ग्योकोमो ने अपना हाथ ऊपर उठाया और धीरे से बोला, ''जाओ और याद रखो कि अब तुम अपने लिए ही नहीं, वरन् जिनेवरा के लिए भी नरक का इंतजाम कर रही हो। परमात्मा तुम्हें इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में भी शापित करेगा।''

संन्यासी का चेहरा घृणा से इतना भर गया था और उसकी आँखें ऐसी अद्भुत आग से जल रही थीं कि उन्हें देखकर मोना उर्सूला रुक गई। वह भयग्रस्त होकर प्रार्थना करती हुई हाथ मलने लगी और उसके पाँवों पर गिर पड़ी।

फ्रा ग्योकोमो दरवाजे की ओर मुड़ा, क्रॉस का चिह्न बनाया और कहने लगा, ''पिता और उसके बेटे के नाम पर और पवित्र भूत के नाम पर! मैं तुमसे आग्रहपूर्वक प्रार्थना करता हूँ, उसके रक्त के नाम पर, जो सूली पर चढ़ाया गया, ओ, शापित! चली जाओ। यह पवित्र स्थान है। हे ईश्वर, हमें लालसाओं की ओर मत ले जाओ, परंतु हमें बुरों से बचाओ।''

''माँ, माँ, मुझपर दया करो! मैं मर रही हूँ।''

माँ एक बार फिर चली और अपनी लड़की की ओर हाथ बढ़ाए, परंतु मृत्यु की भाँति निष्ठुर संन्यासी दोनों के बीच खड़ा हो गया।

जिनेवरा भूमि पर गिर गई। सर्दी के कारण उसने अपने हाथों को घुटनों पर लपेट लिया, सिर को झुका दिया और निश्चय कर लिया कि वह पुन: नहीं उठेगी, हिलेगी भी नहीं, जब तक माँ न आ जाए।

'मृतकों को जीवित लोगों में नहीं आना चाहिए।' उसने विचार किया और उस क्षण उसने एनटोनियो को याद किया। 'यह समझते हुए कि वह भी मुझे इसी तरह दूर कर देगा?' वह उसकी बाबत पहले ही सोच चुकी थी, परंतु लज्जा ने रोक लिया था, क्योंकि किसी दूसरे से विवाह हो जाने के बाद वह रात को उसके पास जाना नहीं चाहती थी, परंतु अब उसने देखा कि वह जीवित लोगों के लिए मर चुकी है।

चाँद लुप्त हो चुका था। बर्फ से ढके पर्वत प्रभात के आकाश के विपरीत पीले-से खड़े थे। जिनेवरा अपनी माँ के घर की दहलीज से उठी। अपनों में आश्रय न पाकर वह अजनबी के यहाँ चल दी।

जिनेवरा के बुत पर एनटोनियो रात भर काम करता रहा था। उसे पता नहीं चला कि समय कैसे व्यतीत हो गया था; सर्दियों की नीली प्रातः की ठंडी रोशनी खिड़की के गोल शीशों में से आ रही थी। संगतराश की सहायता उसका प्रिय शिष्य बरटोलीनो साफ बालोंवाला सत्रह वर्षीय युवक था, जो कर रहा था, वह लड़की की तरह सुंदर था।

एनटोनियो का चेहरा शांत था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मृतक को पुनः जीवित कर रहा है और उसे नया अमरत्व दे रहा है। झुकी पलकें काँपने और खुलने के लिए तैयार थीं। उसका सीना उभरता और नीचे होता दिखाई दे रहा था और उसकी कनपटियों पर महीन नाड़ियों में गरम रक्त संचरित हो रहा था।

उसने अपना काम समाप्त किया। वह जिनेवरा के होंठों पर भोली सी मुसकान लाने का प्रयत्न कर रहा था। तभी दरवाजे पर खटखट सुनाई दी।

''बरटोलीनो!'' एनटोनियो ने बिना काम को छोड़े कहा, ''दरवाजा खोलो।''

शिष्य दरवाजे पर गया और पूछा, ''कौन है?''

''मैं जिनेवरा अलमेरी।'' कठिनाई से सुनी जानेवाली आवाज में उत्तर मिला। वह आवाज सायंकाल की खड़खड़ाती मंद पवन-सी लगी।

बरटोलीनो कूदकर कमरे के कोने में चला गया—पीला और काँपता हुआ। ''मृतक!'' उसने क्रॉस बनाते हुए धीरे से कहा।

परंतु एनटोनियो ने अपनी प्रेमिका की आवाज पहचान ली। वह उछल पड़ा, बरटोलीनो के पास जल्दी से गया और उसके हाथों से चाबी छीन ली।

''एनटोनियो, होश में आओ। क्या कर रहे हो, तुम?'' उसका शिष्य बड़बड़ाया, जिसके दाँत डर के मारे बज रहे थे।

एनटोनियो दौड़कर दरवाजे पर गया, ताला खोला और जिनेवरा को दहलीज पर लगभग मुर्दे की तरह पड़ा पाया। उसके खुले बाल बर्फ से जम गए थे।

परंतु वह भयभीत नहीं हुआ, क्योंकि उसका हृदय महान् दया से भरा हुआ था। वह प्यार के शब्द कहता हुआ उसके ऊपर झुक गया। अपने हाथों से उठाकर उसे अपने घर के अंदर ले आया।

उसने उसे सिरहाने पर लिटा दिया और अपने सर्वोत्तम कंबल से ढक दिया। बरटोलीनो को उस बुढ़िया के पास भेजा, जिससे उसने कारखाना किराए पर ले रखा था। उसने अँगीठी में आग जलाई और थोड़ी शराब गरम करके उसको पीने के लिए दी। अब उसे आसानी से साँस आने लगी, चाहे वह अभी बोलने की हालत में नहीं थी। उसने अपनी आँखें खोलीं तो एनटोनियो का दिल प्रसन्नता से भर गया।

''बुढ़िया अभी जल्दी आ जाएगी।'' कमरे में जल्दी-जल्दी काम करते हुए उसने कहा, ''हम चीजें जल्दी ही ठीक-ठाक कर लेंगे, तुम इस अव्यवस्था के लिए क्षमा करना, मेडोना जिनेवरा!''

व्याकुल और प्रफुल्लित एनटोनियो ने टोकरी को छत से नीचे खींचा, उसमें से कुछ पैसे निकाले और बरटोलीनो

को देते हुए उसे बाजार से नाश्ते के लिए मांस, डबलरोटी एवं सब्जियाँ लाने को कहा तथा बुढ़िया आ गई तो उसे मुर्गे का गरम-गरम सूप बनाने के लिए कहा।

शिष्य जितना जल्दी भाग सकता था, भागकर बाजार से चीजें लाने के लिए गया। बूढ़ी औरत मुर्गा मारने के लिए बाहर गई और एनटोनियो अकेला जिनेवरा के पास रहा।

उसने उसे बुलाया और वह उसके ऊपर झुक गया। उसने वह सबकुछ जो उसके साथ घटा था, उसको बताया।

''ओह, मेरे प्रियतम!'' अपनी कहानी समाप्त कर जिनेवरा ने कहा, ''केवल तुम ही ऐसे निकले जो मेरे आने पर नहीं डरे, केवल तुम ही मुझे प्रेम करते हो।''

''क्या मैं तुम्हारे संबंधियों—चाचा, माँ या तुम्हारे पति को बुला भेजूँ?'' एनटोनियो ने पूछा।

''मेरा कोई संबंधी नहीं है; न मेरा पति है और न ही चाचा अथवा माँ! वे सब मेरे लिए अजनबी हैं, सिवाय तुम्हारे; क्योंकि मैं उनके लिए मर चुकी हूँ और तुम्हारे लिए ही जीवित हूँ—और मैं तुम्हारी हूँ।''

सूर्य की पहली किरणें कमरे में आने लगीं। जिनेवरा उनको देखकर मुसकराई। जैसे ही सूर्य और तेज हुआ, उसके गालों पर जीवन का रंग चढ़ गया; कनपटियों की नाड़ियों में गरम रक्त संचार करने लगा। जब एनटोनियो ने झुककर उसका आलिंगन किया और उसके होंठों का चुंबन लिया तो उसे ऐसा लगा कि सूर्य उसे नया और अमर जीवन देता हुआ पुनर्जीवित कर रहा था।

''एनटोनियो, '' जिनेवरा ने धीरे से कहा, ''भला हो मृत्यु का, जिसने हमें प्रेम करना सिखा दिया है; भला हो प्रेम का, जो मृत्यु से शक्तिशाली है!''